੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

मार्गशीर्ष-पोष, संवत् नानकशाही ५४८
वर्ष १० अंक ४ दिसंबर 2016

संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ
गुरप्रीत सिंघ भोमा

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥रहाउ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥११॥ *(पन्ना ६३३)*

नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब राग सोरठि में अंकित इस पावन शबद के माध्यम से अकाल पुरख परमात्मा के साथ एकाकार करने वाले विलक्षण सौभाग्य-जन के मुख्य गुणों की निशानदेही करते हुए मनुष्य-मात्र को दुर्लभ मानस-जन्म में इस रूहानी मंज़िल को प्राप्त करने के लिए उसका आदर्श मार्गदर्शन करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि परमात्मा से उस मनुष्य का ही एकाकार हुआ माना जा सकता है जो मनुष्य दुख की स्थिति में दुखी नहीं होता अथवा घबराता नहीं। ऐसा मनुष्य सुख के साथ लगाव ही नहीं रखता, उसके मन में डर भी नहीं होता; वह सोने को भी माटी करके मानता है अथवा संसार की दृष्टि में सबसे मूल्यवान वस्तुओं को वह स्थिर न रहने वाली समझता है।

परमात्मा के साथ एकाकार हुआ व्यक्ति किसी की बुराई करने से ऊपर होता है तथा वह स्वयं की दूसरों द्वारा स्तुति किये जाने की चाहत से भी बचा होता है। साथ ही उसमें लालच, लगाव एवं अहंकार भी नहीं होता। वह खुशी और गमी दोनों में ही निर्लेप रहता है अर्थात् समतोल बनाये रखता है। वह अपने सम्मान का इच्छुक नहीं होता और न ही किसी द्वारा अपमानित किये जाने अथवा अपशब्द बोले जाने पर दुख महसूस करता है। वह आशा तथा मनोकामना का परित्याग कर देता है और संसार से अर्थात् सीमा से बढ़कर सांसारिकता से उदासीन रहता है। सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जो मनुष्य काम और क्रोध को हृदय में आने की अनुमति ही नहीं देता उस हृदय में परमात्मा का निवास होता है। जिस मनुष्य पर सच्चे गुरु की कृपा हो जाती है वही रूहानी मंज़िल को पाने की ऊपर वर्णित युक्ति को पहचानता है। गुरु जी कथन करते हैं कि वह मनुष्य परमात्मा के साथ इस प्रकार लीन हो जाता है जैसे पानी के साथ पानी मिल जाता है अर्थात् उसमें तथा मालिक परमात्मा में तनिक-सा भी अंतर नहीं रहता। निष्कर्ष रूप में सतिगुरु के पावन कथनों का तत्व-सार यह है कि मनुष्य-जन्म में ही परमात्मा के साथ पूर्ण मिलाप हो सकता है। इसके लिए ऊंचे रूहानी गुणों का संचार करने का गुरमति मार्ग अपनाना होगा!
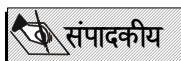
आओ! शहीदों के असल वारिस बनें

सिक्खी के महल को मज़बूत करने के लिए दूध मुंहे बच्चों से लेकर वृद्ध आयु के बुज़ुर्गों तक ने इसकी नींहों को शहादत के रक्त से सींचा है तथा अकाल पुरख की कृपा सदका इन असंख्य शहादतों में एक भी ऐसा नहीं जो अपने धर्म से डोल गया हो। सिक्ख शहीदी तवारीख में पौष के माह की शहीदी-दासतान तो रौंगटे खड़े कर देने वाली है। श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ देने के कुछ दिनों में ही दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दोनों बड़े साहिबज़ादे तथा बहुत-से सिदकी सिक्ख चमकौर की जंग में जूझते हुए शहादत का जाम पी गए। सरहिंद में छोटे दोनों साहिबज़ादों को ज़िंदा दीवारों में चिनकर शहीद कर दिया गया और माता गुजरी जी ठंडे बुर्ज में शहादत पा गए। यद्यपि छोटे साहिबज़ादों की शहादत के बारे में बात करें तो उम्र के तकाज़े से यह शहादत बा-कमाल एवं बेमिसाल है। छोटी-सी उम्र हो और आगे से शत्रु-दल की शस्त्र-बद्ध शाही फौज तरह-तरह के लालच, भहकावे आदि हर प्रकार के प्रयास करके थक जाए किंतु हौसले बुलंद रहें, ऐसी दिलेरी के पीछे खंडे-बाटे के अमृत की शक्ति, माता जीतो जी तथा दादी माता गुजरी जी की शिक्षा व दादा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की *'सीस दीआ पर सिरर न दीआ'* वाली प्रेरणा काम कर रही थी। गुरु जी के साहिबज़ादों ने यह साबित कर दिखाया कि ज़िंदगी में बड़े कीर्तिमान स्थापित करने के लिए लंबी आयु की नहीं बल्कि जज़्बे एवं दृढ़ इरादे की आवश्यकता होती है। गुरु जी के चारों साहिबज़ादों ने ज़ब्र-जुल्म तथा अन्याय के विरुद्ध सच-धर्म की आवाज़ बुलंद करते हुए ज़ालिम के आगे झुकने की बजाय अपनी जान न्यौछावर करने के मार्ग को चुना। इसी लिए आज समूचा सिक्ख जगत चार साहिबज़ादों को बाबा लक़ब से पुकारता है।

साहिबज़ादों की इस लासानी शहादत के जज़्बे को पारिवारिक पृष्ठभूमि में से तलाशने का प्रयत्न करें तो सबसे पहले शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी ने असंख्य यातनाएं झेलते हुए जब्र का टाकरा सब्र (धैर्य) से करना सिखाया। श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत दुनिया के इतिहास में मात्र एक ऐसी लासानी शहादत है जो दूसरे के धर्म की रक्षार्थ हेतु प्रवान चढ़ी।

समूचे सिक्ख संघर्ष के संदर्भ में इन शहादतों के मंतव्य के बारे में विचार करें तो मुख्य ये पहलु सामने आते हैं कि प्रत्येक मनुष्य को अपने धर्म के अनुसार अपने धार्मिक संस्कार करने की स्वतंत्रता हो। किसी पर ज़बरन अपना धर्म न थोपा जाए। अपने सभ्याचार के अनुसार पहरावा पहनने तथा अपनी बोली बोलने की पूर्ण आज़ादी हो। देश के आर्थिक साधन योग्यता के अनुसार सबके लिए बराबर हों। किसी गरीब का हक न मारा जाए। प्रत्येक कार्य न्याय की कसौटी पर परख कर किया जाए आदि। इन सब बातों को अमलीय रूप में लाने के लिए गुरु साहिबान ने गुरबाणी द्वारा प्रचार किया। जब-जब इन उसूलों, मानवीय हकों को रौंदा गया तब

ज़रूरत पड़ने पर शस्त्र-बद्ध संघर्ष भी करना पड़ा। इस संघर्ष में गुरु साहिबान, गुरु-पुरिवार, बच्चों, बुजुर्गों तथा असंख्य सिक्खों ने शहादतें दीं। हक-सच के लिए जूझते हुए दी गई कुर्बानियों तथा रक्त से सने इतिहास को पढ़-सुनकर प्रत्येक गुरसिक्ख को अपने पूर्वज़ों पर फख्र महसूस होता है। किंतु वास्तव रूप में यह तबी समझा जा सकता है यदि इन शहादतों के मंतव्य को आज हम अपने अमलीय जीवन में दृढ़ कर सकें। आज पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव तले सिक्ख परिवारों में बहुत-सी ऐसी अलामतें घर कर चुकी हैं, जिनके कारण हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि हम वास्तव में उपरोक्त शहीदों के वारिस हैं। इन सब में से सिक्ख परिवारों में फैला पतितता का रोग सबसे बड़ी अलामत समझा जा सकता है। हमारी खातिर जिन साहिबज़ादों ने शहादत के समय फख्र से यह शब्द कहे हों :

हम जान देके औरों की जाने बचा चले।
सिक्खी की नींव हम हैं सरों पर उठा चले . . .
सिक्खी की सल्तनत का हैं पौदा: लगा चले।

हम इन साहिबज़ादों वारिस के हों तथा हमारे सिरों पर कैंचियां चलें यह बात हरगिज़ शोभा नहीं देती।

हम उस दादी मां, माता गुजरी जी के वारिस हों, जो साहिबज़ादों को शहादत हेतु भेजने से पहले कहते थे :

जाने से पहले आओ गले से लगा तो लूं,
केसों को कंघी कर दूं ज़रा मुंह धुला तो लूं।
प्यारे सरों पे नन्हीं सी कलगी सजा तो लूं।
मरने से पहले तुमको दूल्हा बना तो लूं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पंथ की खातिर चारे साहिबज़ादे कुर्बान करने के बाद श्री दमदमा साहिब की पावन धरती पर खालसा पंथ की तरफ हाथ करते हुए कहा हो :

इन पुतरन के सीस पर वार दीए सुत चार।
चार मुए तो किआ हुआ जीवत कई हज़ार।

और हमारे परिवारों में फैले पतितता के लिए माता-पिता भी बराबर के जिम्मेवार हैं, उनको अपने बच्चों के केश कत्ल करवाने से पूर्व नींहों में खड़े श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने लाल नज़र न आएं यह हमारे लिए बड़ी विडंबना की बात है।

आज आधुनिक युग में हमें ज़रूरत है कि हम खुद गुरमति सिद्धांतों के धारणी होकर अपने बच्चों को अपनी लासानी विरासत से अवगत करवाएं, सिक्ख रहित मर्यादा के धारणी होकर अपने शहीदों के सच में वारिस कहलाने के हकदार बनें। ☸

घर नउ निधि आवै धाइ ॥

*-डॉ सत्येन्द्र पाल सिंघ**

कलयुग धर्म और मानवता का सबसे दुष्कर और दुरूह कालखंड है। इस युग में अधर्म इतना प्रभावी हो गया कि सच का सूर्य छिप गया और सर्वत्र पाप ही पाप नज़र आने लगे। खोटे को खरा और खरे को खोटा, अंधे को पारखी कहा जा रहा था। जो अधर्मी, चांडाल थे वे धर्म के ज्ञाता बन बैठे और राजा जिससे न्याय की अपेक्षा थी वह कसाई जैसा व्यवहार कर रहा था। अधर्म ने मनुष्य के विवेक का हरण कर लिया था।

कलि कलवाली कामु मदु मनूआ पीवणहारु ॥

लोभ और कुकर्म की मजलिस सजी हुई थी। संसार के इस परिदृश्य नें सच, न्याय और विवेक की बात करने वाला कोई नहीं था और न ही कोई सुनने वाला था। पाप का भार अत्याधिक हो चला था।

खड़ा इकते पैरि ते पाप संगि बहु भारा होआ।
थंमे कोइ न साधु बिनु साधु न दिसै जगि विच कोआ। (वार १:२२)

धर्म का प्रतीक बैल जो धरती को एक पांव पर धारण किये खड़ा था पापों के भार से त्रस्त बार-बार बचाने के लिए पुकार कर रहा था। उसकी पुकार से द्रवित हो परमात्मा ने श्री गुरु नानक साहिब को धरती पर भेजा; जिन्होंने सच के प्रकाश से पूरे संसार को प्रकाशित कर एक नूतन आशा का संचार किया। गुरु साहिबान ने लोगों में विश्वास उत्पन्न किया कि धर्म और न्याय अविजित हैं और सर्वशक्तिमान एक परमात्मा है। अधर्म जो इतना व्यापक और प्रचंड हो चुका था सच को इतनी सहजता से कैसे स्वीकार करता। श्री गुरु अरजन देव जी का बलिदान हुआ, श्री गुरु हरिगोबिंद जी ने शस्त्र धारण किये जिससे अधर्म का बल क्षीण हुआ किन्तु उसे पूर्णत: परास्त करने के लिए एक बड़े उपक्रम की आवश्यकता थी। अधर्म को परास्त करने के पश्चात धर्म की स्थापना करना भी एक बहुत बड़ा कार्य था, जिसका आरंभ श्री गुरु नानक साहिब कर चुके थे। इसके लिये श्री गुरु तेग बहादर जी सर्वथा योग्य व सक्षम धर्म पुरुष सिद्ध हुए। वे ईश्वरीय ज्योति थे किन्तु अपनी सामर्थ्य उन्होंने सबके सामने सांसारिक सन्दर्भों में विकसिक करके दिखाई जो कुल मानवता के लिए अनुकरणीय बन गई।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने संसार में जो सबसे बड़ी परीक्षा पास की वह धैर्य और संयम की थी जो सिक्ख पंथ का मूल आधार था। इससे धैर्य और संयम मात्र सैद्धांतिक चर्चा तक ही सीमित नहीं रहा उन्हें व्यवहार के धरातल पर लाकर उनकी ग्राह्यता सिद्ध की गई। ऐसा मानवता के इतिहास में पहली बार हो रहा था कि धर्म के जो सिद्धांत गुरु साहिबान ने लोगों के सामने रखे, स्वयं उन्हें अपने आचरण में ढालकर, सारी शंकाओं को निर्मूल साबित करते हुए उनकी प्रभावी व्यवहारिकता के प्रति आश्वस्त किया, धर्म व्याख्यान नहीं व्यवहार में प्रतिष्ठित

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: +९१९४१५९-६०५३३

हुआ। श्री गुरु तेग बहादर जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के सुपुत्र थे। कहते हैं कि जब उनका जन्म हुआ तो श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने उन्हें देखते ही कह दिया था कि हमारा यह पुत्र बड़ा बलवान, वीर और तेग का धनी होगा। जब वे पांच वर्ष के हुए तो पुन: एक भविष्यवाणी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने की। श्री गुरु तेग बहादर जी अन्य बच्चों से भिन्न, समाधि लगा कर बैठ जाया करते और देर तक ऐसे ही बैठे रहते। माता जी ने जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को बताया तो गुरु साहिब ने कहा था हमारे इस पुत्र ने बड़ा कार्य करना है जिसकी तैयारी वह अभी से करने लग पड़ा है। श्री गुरु तेग बहादर जी अपने पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के इतने प्रिय थे उनकी शिक्षा-दीक्षा स्वयं उनके गुरु-पिता की निगरानी में हुई। जहां वे धर्म, समाज, राजनीति के मर्मज्ञ बने वहीं एक कुशल योद्धा भी। वे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ करतारपुर साहिब का युद्ध भी लड़े जहां रणभूमि में उन्हें अपने जौहर दिखाने का अच्छा अवसर मिला। इसके बाद भी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने परमात्मा में विलीन होने से पूर्व श्री गुरु तेग बहादर जी को गुरुआई नहीं सौंपी। इस समय वे २३ वर्ष के प्रखर व्यक्तिव वाले युवक बन चुके थे। वस्तुत: संसार में धर्म की स्थापना के लिए जो बड़ा योगदान परमात्मा ने श्री गुरु तेग बहादर जी के लिए निर्धारित किया था, उसका समय अभी नहीं आया था। इसे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब भी जानते थे और श्री गुरु तेग बहादर जी भी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जब अपने पौत्र श्री गुरु हरिराय जी को गुरुआई पर आसीन किया तो श्री गुरु तेग बहादर जी ने पूर्ण विनम्रता से इसे स्वीकार किया। वे अपनी माता व सुपत्नी के साथ श्री अमृतसर के निकट गांव बाबा बकाला में चले आये, जहां उनका ननिहाल भी था। श्री गुरु नानक देव जी के काल से ही गुरुआई को लेकर दावे, विवाद और असंतोष व्यक्त किये जाते रहे थे। श्री गुरु तेग बहादर जी ने इसे तोड़ने का महत्त्वपूर्ण काम किया। अपने पिता-गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की प्रशंसा और निकटता प्राप्त होते हुए किसी भी तरह की दावेदारी अथवा उनके निर्णय पर किसी भी तरह का रोष न व्यक्त करना और सब कुछ सहज भाव से स्वीकार करना आप जी के सद्गुणों की अनूठी, गरिमामयी और स्वाभाविक अभिव्यक्ति थी।

सहज अनंद हरि साधू माहि ॥
आगिआकारी हरि हरि राइ ॥ (पन्ना १८६)

इसे तत्कालीन सामाजिक व राजसी सन्दर्भों में देखने पर इसकी महत्ता का सहज ही एहसास होता है। सामाजिक रिश्तों की मर्यादा समाप्त हो चुकी थी। मनुष्य लोभ प्रधान हो चुका था और सारे एक से बढ़कर एक पाप कर्मों में लिप्त थे। अपने पराये की पहचान समाप्त हो गई थी।

माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥
जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमनु धके खाइ ॥
(पन्ना ५५४)

जिसके पास जितना था उससे भी अधिक की लालसा में वह तप रहा था चाहे कितना ही बड़ा क्यों न था।

वडे वडे राजन अरु भूमन ता की त्रिसन न बूझी ॥
लपटि रहे माइआ रंग माते लोचन कछू न सूझी ॥ (पन्ना ३६२)

राज-सिंहासन भी पिता और भाई की

लाश पर हासिल किए जा रहे थे। कहीं कोई विवेक, विचार नहीं रह गया था। ऐसे में श्री गुरु तेग बहादर जी का शालीनता भरा व्यवहार एक महान घटना की तरह था। श्री गुरु हरिराय जी जो उनके भतीजे थे, गुरुआई पर बैठने पर उनके सामने नतमस्तक होने वालों में सबसे पहले श्री गुरु तेग बहादर जी ही थे।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने बाबा बकाला में एक साधारण से घर में रहकर नाम-सिमरन में लगभग २२-२३ वर्ष बड़ी ही सादगी, सौम्यता और एकाग्रता में व्यतीत किए। यह महान तप था। श्री गुरु तेग बहादर जी यह भक्ति-शक्तियां पाने के लिए नहीं बल्कि शक्तिहीन लाखों, करोड़ों लोगों को शक्तिशाली बनाने के लिए थे। इससे उनका अपना नहीं मानवता का वैभव बढ़ना था। इससे धर्म का राज्य स्थापित होना था। श्री गुरु तेग बहादर जी के इस तप (प्रभु-भक्ति) का ढंग प्रचलित तपों से एकदम भिन्न था। वे अपनी गृहस्थ जिम्मेदारियों का भी वहन कर रहे थे और लोगों से मिलते-जुलते भी थे। प्राय: उनसे मिलने श्री गुरु अमरदास जी के वंशज़ भाई द्वारका दास के अतिरिक्त भाई गुरहिआ जी व बाबा गुरदित्ता जी आदि आते रहते थे। वे कभी-कभी शिकार पर भी जाया करते थे। उनका तप गुणों का तप था, इन्द्रियों का तप था, अंतर्चेतना का तप था।

गुरि मनु मारिओ करि संजोगु ॥
अहिनिसि रावे भगति जोगु ॥
गुर संत सभा दुखु मिटै रोगु ॥
जन नानक हरि वरु सहज जोगु ॥(पन्ना ११८०)

गुरु साहिबान ने संसार को मन की साधना से परिचित कराया। मन के विकारों का मर जाना और शुद्ध मन का परमात्मा में रम जाना सबसे बड़ी तप साधना है। यह मिलन सदैवकालीन होता है और मन दिन-रात प्रभु में लीन रहता है। इससे सारे रोग, दुख मिट जाते हैं और सहज ही परमात्मा प्राप्त हो जाता है। श्री गुरु तेग बहादर जी ने बाबा बकाला में मन का तप किया और यही उनकी बाणी में भी परिलक्षित हुआ :

साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥
चंचल त्रिसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥१॥ रहाउ ॥
कठन करोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ बिसराई ॥
रतनु गिआनु सभ को हिरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥१॥
जोगी जतन करत सभि हारे गुनी रहे गुन गाई ॥
जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई ॥२॥ (पन्ना २१९)

योगियों, तपस्वियों, साधकों ने कितने ही यत्न कर लिये किन्तु परमात्मा को नहीं प्राप्त कर सके। इसका कारण था मन में मोह-माया, विकारों का वास जो चित्त को चंचल करता था। इससे बुद्धि, विवेक सभी जाते रहते हैं और मनुष्य कुछ भी करने योग्य नहीं रहता। मन को परमात्मा की दया और कृपा से ही साधा जा सकता है। जिसने मन को साध लिया उसे मनवांछित फल प्राप्त हो जाता है। श्री गुरु तेग बहादर जी संसार, परिवार में रहते हुए भी मन को साधकर उस तरह निर्लिप्त हो गये जैसे जल में कमल। अपने गुणों से वे इतने ऊपर उठ गये कि सांसारिक मोह-माया, विकार नीचे कहीं नीचे छूटते चले गये। गुरु साहिब ने मन की साधना से उन गुणों की सिद्धि प्राप्त की जो परमात्मा के थे। ये गुण मानवता का हित करने के लिए थे, दीन-दुखियों को संरक्षण

प्रदान करने के लिए थे, निराश्रित को आश्रय प्रदान करने वाले थे और हताश को आशान्वित करने वाले थे। इसमें अपने पराये के बीच का भेद जाता रहता है। सारा संसार अपना दिखने लगता है और प्रेम सभी के लिए समान रूप से प्रस्फुटित होने लगता है। श्री गुरु तेग बहादर जी को जब अपने सुपुत्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म का समाचार मिला तो वे ढाका में धर्म-प्रचार कर रहे थे। अपनी समदृष्टि के चलते उन्होंने अपनी प्रचार-यात्रा जारी रखी और आसाम तक चले गये। समदृष्टि से अधिक बड़ी सिद्धि और कोई नहीं जिसे किसी जप-तप से नहीं परमेश्वर के सिमरन से प्राप्त किया जा सकता है। यही वास्तविक धर्म है।

कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥
अउर धरम ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥
सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई ॥
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥ (पन्ना ६३२)

उपरोक्त पावन बाणी श्री गुरु तेग बहादर जी की है, जिसमें उन्होंने कहा कि निर्लिप्त अवस्था परमात्मा की अवस्था है। जो सुख-दुख की भावना से ऊपर उठ चुका है वह परमात्मा है। गुरु साहिब ने परमात्मा को एकमात्र कृपा निधि अर्थात कृपा की निधि देने वाला कहा है और उस निधि की भी व्याख्या कर दी जिसे परमात्मा देता है। वह ऐसी निधि है जिसे पाकर मनुष्य की गति हो जाती है। यह गति ही निर्लिप्त अवस्था है न कि कोई राजपाट, खज़ाना, विद्वता अथवा शक्ति। इस निधि को पाकर ही श्री गुरु तेग बहादर जी ने संसार में बड़े कार्य सम्पन्न करने की सामर्थ्य पाई जो कोई अन्य नहीं कर सकता था।

श्री गुरु तेग बहादर जी के दरबार में जब कश्मीर के ब्राह्मणों का दल पंडित किरपा राम के नेतृत्व में अपनी व्यथा बताने और सहायता मांगने हेतु फरियादी हुआ तो वे चिंतन मनन की मुद्रा में आ गये। श्री गुरु तेग बहादर जी के समक्ष कोई नई स्थिति आई हो ऐसा नहीं था। देशकाल में जो घटित हो रहा था उसकी उन्हें पूरी जानकारी थी। मुगल शासन के पाप किस सीमा तक जा पहुंचे थे इसकी सूचना उन्हें आसाम में ही मिल चुकी थी। श्री गुरु तेग बहादर जी के श्री अनंदपुर साहिब लौटने के कुछ ही महीनों बाद कश्मीर के ब्राह्मणों का दल उनकी मदद लेने हेतु आ पहुंचा था। उनकी व्यथा सुनकर गुरु साहिब के मन में कोई दुविधा नहीं उत्पन्न हुई। परमात्मा को पाकर वे सारे संशयों से मुक्त हो चुके थे।

जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥
त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥ (पन्ना ११८६)

मन में जब परमात्मा का नाम बसता है सारी सांसारिक कामनायें, आवेग शांत हो जाते हैं और मन परमात्मा के आनंद मे समा जाता है। श्री गुरु तेग बहादर जी जब कश्मीर के ब्राह्मणों की दुख भरी गाथा सुन रहे थे तब वे परमात्मा के सहज प्रेम की अवस्था में थे। वे उन गुणों में जी रहे थे जो संसार के हित में ईश्वर के दर्शन करवाते हैं। इन गुणों से दृष्टि अपने हित की ओर नहीं ईश्वर के विराट रूप अर्थात सर्वहित की ओर जाती है।

साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥
या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि

पछानो ॥ *(पन्ना ११८६)*

संसार का इतिहास है कि सभी ने पहले अपने तन की रक्षा को मुख्य रखा। अधिकांश बलिदान जिन पर आज गर्व किया जाता है वे परिस्थितिजन्य थे। सिक्ख बलिदान इस मायने में अन्य बलिदानों से भिन्न हैं। इनका अनुकरणीय आदर्श गुरु साहिबान ने स्वयं स्थापित किया था। श्री गुरु तेग बहादर जी का बलिदान देने का निर्णय किसी आवेग अथवा भावनावश लिया गया निर्णय नहीं था। आवेग और कामनाओं से ऊपर उठ चुके श्री गुरु तेग बहादर जी का निर्णय उस ध्येय को प्राप्त करना था जिसके लिए उन्होंने दो दशक से अधिक का समय प्रभु-भक्ति में व्यतीत कर सहज अवस्था प्राप्त की थी। अन्याय और अत्याचार अपने चरम सीमा पर पहुंच चुका था। उसे उत्तर देकर रोकने का समय आ चुका था। कश्मीर में गैर-मुस्लिमों को इस्लाम धर्म ग्रहण करवाने के लिए अधिक जुल्म किया जाने लगा। इन्कार करने वाले हज़ारों लोगों की निर्दयता से हत्या कर दी गई। इतिहासिकारों का कहना है कि लोगों की जान लेते-लेते मुगल फ़ौज थक गई; आखिर धर्म कब तक मौन रहता। श्री गुरु तेग बहादर जी ने चेतावनी दी *"नर अचेत पाप ते डरु रे ॥"* यह अनूठी घोषणा की थी कि पाप करने वाला अपने पापों से डरे। पाप करना किसी भी तरह की वीरता अथवा साहस का प्रतीक नहीं था। पाप किसी अन्य के लिए नहीं पाप करने वाले के लिए भय उत्पन्न करते हैं। ऐसी चेतावनी मन की निडरता को प्रकट करने वाली थी।

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
(पन्ना १४२७)

श्री गुरु तेग बहादर जी अन्याय व अत्याचार करने वालों को पाप कर्मों से विरत कर सत्कर्मों की ओर ले जाना चाहते थे। वे उनकी सुप्त चेतना को जाग्रत कर उस महान परमात्मा से जोड़ना चाहते थे जो सारे संसार का हित सोच रहा है। यह श्री गुरु नानक साहिब के मार्ग के अनुकूल ही था, जिन्होंने अपने जीवन को लगभग २२-२३ वर्ष संसार के कोने-कोने में जाकर लोगों को सच की राह दिखाने में लगाए थे। उनका उद्देश्य तो लोगों की अज्ञानता को दूर करना था।

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥
कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥ *(पन्ना १४२६)*

दिल्ली में श्री गुरु तेग बहादर जी के समक्ष तीन विकल्प रखे गये थे। या तो इस्लाम धर्म कबूल करो या कोई चमत्कार करके दिखाओ या फिर मृत्यु के लिए तैयार जो जाओ, गुरु जी ने बेखौफ़ तृतीय विकल्प को चुना। श्री गुरु तेग बहादर जी का किसी धर्म से कोई विरोध नहीं था। वे उस जुल्म के विरुद्ध थे जो गैर मुस्लिमों पर ढहाया जा रहा था। दूसरी तरफ सभी गुरु साहिबान जीवन भर *"कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥"* का संदेश देने हेतु आये थे इस लिए किसी सत्ता को अभिव्यक्त करना उनका मार्ग ही नहीं था। ऐसा तो वो लोग करते आये थे जो अपनी पूजा करवाना चाहते थे। औरंगजेब का सीधा मकसद श्री गुरु तेग बहादर जी पर कठोर से कठोर जुल्म ढहा कर पूरे भारत को आतंकित करना था ताकि उसके मंसूबे कामयाब हो सकें तथा भविष्य में कोई उसके रास्ते में आने का साहस न कर सके। श्री गुरु तेग बहादर जी के लिए यह अवसर सिक्ख पंथ की महानता को सारे संसार के सामने उजागर करने का था।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

दीन-दुखियों के दर्दमंद श्री गुरु तेग बहादर साहिब

-डॉ. कुलदीप सिंघ हज़रा

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जीवन-अनुभव गहन एवं विशाल था। गुरु जी विलक्षण एवं अद्वितीय शख़्सियत के मालिक थे। भक्ति रस से ओत-प्रोत, मोह-माया से निर्लेप, अडोल चित्त, शूरवीर, तेग के धनी, धर्म रक्षक, ईर्ष्या-द्वैत से मुक्त, परोपकारी, मानव-हितकारी, उच्च बाणीकार, कुर्बानी के पुंज एवं शांति के अग्रदूत थे।

ऐसे गुरु जी का जन्म २१ अप्रैल, १६२१ ई. को श्री अमृतसर में माता नानकी जी की पावन कोख से छठम् पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के गृह 'गुरु के महल' में हुआ। आप जी का विवाह सन् १६३३ ई. में करतारपुर साहिब के निवासी भाई लाल चंद की सुपुत्री माता गुजरी जी के साथ हुआ। सन् १६४४ ई. में आप जी अपनी माता जी और सुपत्नी सहित बाबा बकाला आ गए, जहां आपने लंबे समय तक प्रभु-सिमरन और चिंतन किया। सन् १६६४ ई. में आप जी को गुरुआई मिली। सन् १६७५ ई. में श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने चांदनी चौक, दिल्ली में हिंदू मज़लूमों की रक्षा हेतु अपना बलिदान दे दिया। उसी कारण आप जी को 'हिंद की चादर' कहा जाता है।

आप जी का समस्त जीवन सहज अवस्था से व्यतीत हुआ। आप जी कथनी एवं करनी में पूर्ण थे। आप जी ने जो कुछ अपनी बाणी में कहा, उसे अपने तन पर झेला भी। आप जी कर्म योगी थे और कर्मकांडों में आप का बिलकुल विश्वास नहीं था। आप जी ने तीर्थ, व्रत एवं दान कर मन में अहंकार करने वालों को स्पष्ट शब्दों में कहा कि आप अपना जीवन ऐसे निष्फल बर्बाद कर रहे हो। आप जी का पावन फरमान है :

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥
(पन्ना १४२८)

आप जी के मन, वचन व कर्म में समानता थी एवं यही शिक्षा गुरु जी जनमानस को देते रहे। आप जी ने कोई ऐसा उपदेश नहीं दिया जो उनके जीवन पर न घटित हो। वह स्वइच्छा से नेक-कार्यों में शामिल होने को ही ठीक समझते थे ना कि किसी के कहने अथवा दिखावे के रूप में नेक कार्य करने को। आम लोग उन कामों में तो भागीदार बन जाते थे, जिनके कारण उनको लाभ प्राप्त हो परंतु जानी एवं माली नुकसान करवाकर विरले लोग ही शुभ कर्मों में भागीदार बनते हैं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने किसी लालच वश नहीं, बल्कि लोक-भलाई की खातिर अपनी कुर्बानी दी थी। लोक-सेवा करना गुरु साहिब अपना परम कार्य समझते थे। लोगों की आर्थिक कठिनाइयों की निवृत्ति करना अपना परम-धर्म समझते थे। आप जी ने लोगों के टूटे हुए घरों को बनाने के लिए उनकी आर्थिक सहायता की। पीने के पानी और सिंचाई की ज़रूरतों को मुख्य रखकर कुएं खुदवाएं। कई लोगों को ज़मीन एवं कृषि कार्य के लिए औज़ार लेकर दिए। इस प्रकार गुरु साहिब लोक-भलाई के कार्यों में व्यस्त रहते थे। जगह-जगह में उन्होंने वृक्ष लगवाए। आप

जी की प्रबल इच्छा होती थी कि सामाजिक, पारिवारिक एवं राजसी झगड़ों को शांति एवं सद्भावना से हल किया जाए। फरवरी, १६६९ ई को ब्रह्मपुत्र दरिया के किनारे धोबड़ी नामक जगह पर कैंप लगाकर गुरु जी मुगल फौजों के कमांडर राजा राम सिंघ से व आसामी सेना के राजा चक्र ध्वज सिंघ में सुलह करवा दी, बहुत-सी मानवता का खून बहने से बचा लिया। गुरु जी ने दोनों फौजों की शक्ति का उपयोग करके उनसे सेवा ली और एक थड़ा बनवाया, जिसको 'दमदमा साहिब' कहा जाता है, जो कि शांति एवं सद्भावना का प्रतीक है।

गुरु साहिब आरंभ से ही शांत स्वभाव के मालिक थे। वह सदैव शांति एवं सद्भावना का प्रचार करते रहे। आप जी ने दूर-दूर तक धर्म-प्रचार यात्राएं कीं। इन धर्म-प्रचार यात्राओं की सफलता देखकर सरकारी कर्मचारियों के मन में कई प्रकार के तौखले (भ्रम) पैदा हो गए। आप जी का धर्म-प्रचार सदा हौंसला बढ़ाने वाला होता था। उन्होंने सिक्ख जत्थेबंदियों की तरफ विशेष ध्यान दिया। ऐतिहासिक लेखक गुलाम हुसैन के अनुसार उस समय सिक्खों का संगठन इतना दृढ़ हो चुका था कि सरकार को डर पैदा हो गया था कि कहीं यह संगठन साम्राज्यशाही को क्षति न पहुंचा दे परंतु गुरु साहिब का मनोरथ सच एवं शांति का प्रचार करना था। वह अमन-शांति के अग्रदूत थे। आप जी का लक्ष्य राज्य में अराजकता फैलाना नहीं था। आप जी तो जुल्म के विरुद्ध सिक्ख-संगत को सावधान कर रहे थे। जब कश्मीरी पंडित उनके पास धर्म की रक्षा हेतु पुकार लेकर आए तो आप जी हिंदू धर्म की खातिर कुर्बानी देने को तैयार हो गए और कुर्बानी दे भी दी।

सगे-सम्बंधियों एवं रिश्तेदारों की ईर्ष्या का मुकाबला भी आप जी ने शांति एवं सहनशीलता के शसक्त हथियार के साथ किया। जब धीर मल्ल ने गुरु जी के विरुद्ध अपने प्रयत्न जारी रखे ताकि वह गुरगद्दी प्राप्त कर सके और ईर्ष्या वश उसने अपने मसंदी सींहि द्वारा गुरु साहिब पर गोली भी चलवाई, फिर भी शांति के पुंज, क्षमा के फरिशते गुरु जी ने न सिर्फ उसको माफ किया बल्कि मन में कोई गिला-शिक्वा भी न किया। गुरु जी का जानी-दुश्मनों को भी हृदय की विशालता से माफ कर देना और मन में कोई शिकवा भी न करना कोई मामूली बात नहीं। किंतु ऐसी विशालता ऐसे नहीं आ जाती बल्कि ये सब वही व्यक्ति ही कर सकते हैं, जिसका जीवन-दर्शन बहुत ऊंचा हो एवं निजी तुजुर्बा विशाल हो। अपनी भावनाओं पर काबू रख सकना मानव मन की बहुत बड़ी प्राप्ति है। जब गुरु साहिब बाबा बकाला में गुरुआई पर विराजमान हुए तब हृदय की गहराइयों से निकली अथाह श्रद्धा वश श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन के लिए आए तो छोटे हृदय एवं काले दिल वाले पुजारियों ने श्री हरिमंदर साहिब के दरवाज़े ही बंद कर लिए परंतु धन्य श्री गुरु तेग बहादर साहिब जिन्होंने बुरा नहीं माना, कोई कड़वा वचन नहीं बोला बल्कि सिक्ख संगत के निवेदन प्रवान करते हुए वल्ला गांव आ बैठे।

क्षमाशील एवं शांति के पुंज सतिगुर जी ने कहिलूर के राजा से २२०० रुपए देकर ज़मीन खरीद कर वहां 'चक्क नानकी' नामक नया नगर आबाद किया, जो अब श्री अनंदपुर सहिब के नाम से सुप्रसिद्ध है। गुरु साहिब हर प्रकार के झगड़े एवं विवाद से बचना चाहते थे। क्योंकि उनका मिशन शांति और अमन कायम करना था।

गुरु साहिब का जीवन-दर्शन किसी कवि ने अपने शब्दों में लिखा है, मानवीय मन को

प्रभु चरण-कमलों में जोड़ने, मन की बुराईयों को गुरु-शब्द द्वारा छोड़ने एवं जिसकी बाजु पकड़ लें, सिर देकर भी उनकी रक्षा करने एवं धर्म पर दृढ़ता से पहरा देने का ज़िक्र इस प्रकार किया है :

चित चरन कमल का आसरा, चित चरण कमल संग जोड़ीए।
मन लोचै बुराईयां, गुर शबदी इह मन होड़ीए।
बांह जिन्हां दी पकड़ीऐ, सिर दीजै बांह न छोड़ीए।
गुर तेग बहादर बोलिआ, धर पईऐ धरम न छोड़ीऐ।

जीवन की अस्थिरता के बारे में गुरु साहिब के मन में कोई शंका नहीं थी। आप जी का पावन फरमान है :

जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥ (पन्ना १२३१)

आप जी की बाणी में मानवीय रिश्तों के बारे में बहुत ही सार्थक ब्यान है, गुरु जी पावन फरमान करते हैं :

सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥
कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥
(पन्ना १४२७)

इससे तात्पर्य कि सांसारिक रिश्तेदार सिर्फ सुख के ही साथी हैं एवं विपत्ति आने पर कोई साथ नहीं देता। आप जी का उपदेश है कि इन्सान को आश्रय ढूंढने की जगह उस अविनाशी प्रभु का आश्रय लेना चाहिए। आप जी फरमान करते हैं कि मनुष्य मृत्यु को याद तो रखे परंतु मृत्यु से डरे नहीं और न ही इसकी चिंता मन में लगाए, क्योंकि मृत्यु तो अटल सच्चाई है एवं इससे कोई बच नहीं सकता। आप जी का इस संदर्भ में पावन फरमान है :

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥
(पन्ना १४२९)

निडरता एवं अमरता भी आप जी के जीवन-दर्शन के मुख्य विषय है अर्थात् न किसी को डराना और न किसी से डरना। वह खुद को संबोधन करते हुए वचन करते हैं कि जो मनुष्य निर्भय होकर जीवन व्यतीत करता है, वह मनुष्य ही असल में ज्ञानवान है एवं आत्मिक सूझ रखने वाला है। आप जी का इस संदर्भ में सलोक है :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥
(पन्ना १४२७)

यह आदर्श गुरु साहिब ने समस्त जीवन काल में सामने रखा। इसी कारण गुरु साहिब हर स्थिति में शांत चित्त रहकर ज़ब्र के शिकार हुए हिंदुओं की रक्षा खातिर अपनी कुर्बानी देते समय भी दृढ़ एवं शांत चित रहे। निर्भय मनुष्य को गुरु साहिब ज्ञानी मानते हैं। आप जी की दृष्टि सामान्य थी। वह दुख-सुख, मान-अपमान, हर्ष विषाद में एक समान रहकर एक विलक्षण मिसाल कायम कर गए। आप जी की आंखों के सामने आप जी के प्यारे सिक्खों को अमानवीय यातनायें देकर शहीद किया गया किंतु आप जी सदैव की तरह अडोल और शांत चित्त रहे, कोई कड़वा वचन नहीं बोला, किसी को श्राप नहीं दिया, कातिल के कार्य में कोई रुकावट नहीं डाली। आप जी ने जो कुछ अपनी बाणी में कहा वो सच कर दिखाया :

हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥
(पन्ना १४२७)

आप जी को अकाल पुरख की सर्वव्यापक्ता पर पूर्ण निश्चय था। इस लिए आप जी

परमात्मा को सर्वत्र में मानकर बाहर जाकर खोजने की क्रिया को गलत कहते हैं :

काहे रे बन खोजन जाई ॥

सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥

(पन्ना ६८४)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का चरित्र बहुत ही विचित्र एवं विशाल था। आप जी शांत स्वभाव के होते हुए भी तेग के धनी थे। आप जी के कर्म-क्षेत्र को लगभग बीस वर्षों का लंबा समय अलग रहते हुए साबित नहीं करता कि आप जी संसार एवं जीवन से निर्लिप्त हैं। असल में वह एकांत प्रेमी ज़रूर थे परंतु अपने फर्ज़ तथा कर्त्तव्य बिलकुल दूर नहीं थे। आप जी *"बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होतु उपाइ ॥"* के धारणी व विश्वासी थे।

समूचे हिंदोस्तान एवं खास कर हिंदू-समाज को गुरु जी का ऋणि होना चाहिए; जिसकी दीन-दशा की खातिर गुरु जी ने अपनी पावन कुर्बानी दी। आप गरीब-निवाज़ थे, धर्म रक्षक थे, दीन-बंधु और कुर्बानी के पुंज थे।

घर नउ निधि आवै धाइ ॥

(पृष्ठ ११ का शेष)

गुरु साहिब ने बिना उद्वेलित हुए इस अवसर को मानवीय हितों की ओर मोड़ने में सफलता अर्जित की। यह असंभव था किन्तु श्री गुरु तेग बहादर जी ने इसे संभव कर दिखाया। दिल्ली के चांदनी चौक में हज़ारों की संख्या में भीड़, पूरी तरह मुस्तैद सरकारी अमला और तलवार लेकर तैयार खड़ा जल्लाद। स्तब्धता और तनाव का माहौल। श्री गुरु तेग बहादर जी इससे एकदम निष्प्रभावित और अपने आप में दीपायमान अपनी मुक्त अवस्था में आनंदित दिखाई दिए।

हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥

कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥

(पन्ना १४२७)

अगले पल क्या होने जा रहा है इससे विरक्त गुरु साहिब का शांत-चित्त प्रभु सिमरन करना और परमात्मा के आभार में शीश निवाना अधर्म और अत्याचार की सबसे करारी पराजय थी जो इस संसार में अभी तक न हुई होगी। यह धर्म की सबसे बड़ी विजय थी जो सृष्टि की रचना के बाद मानवीय इतिहास में लिखी गई होगी जिसे देखकर पूरा स्वर्ग लोक *"जै जै जै सभ सुर लोग"* जय-जयकार कर उठा था। यह उस धैर्य, संयम और सहज की जीत थी जिसकी प्राप्ति श्री गुरु तेग बहादर जी को प्रभु-परमात्मा द्वारा हुई थी। पूर्णत: विपरीत परिस्थितियों को गुरमति की दिशा से अनुकूल बना देना एक महान कार्य था जिसे अपने जीवन में श्री गुरु तेग बहादर जी ने संभव कर दिखाया था। गुरु साहिब का पूरा जीवन *"कीनो बडो कलू महि साका"* की गौरव गाथा है। उन्होंने बल भी पाया, सारे बंधन भी तोड़े और ऐसे उपाय कर गये जिससे मानवता पर आया संकट थम गया और उस संकट के नाश का भार संभालने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पूर्णत्या तैयार नज़र आये।

अपने जीवन और कार्यों द्वारा संसार को मुक्त अवस्था की पहचान करवाना श्री गुरु तेग बहादर जी का सबसे बड़ा उपकार था जो अतुलनीय है। यह सिद्धियों, नौ निधियों को पाने का मार्ग है - गुरु साहिब के जीवन आदर्श जीवन में धारण करने से सारी प्राप्तियों स्वयं ही पीछे लग जाती हैं *"घर नउ निधि आवै धाइ ॥"*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की अलौकिक दिव्य दृष्टि

*-डॉ साहिब सिंघ अरशी**

श्री गुरु नानक देव जी की गद्दी के दसवें जामे में आए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का संसार-आगमन बहुपक्षीय रूप में दृष्टिगोचर होता है। नाशवान संसार में बहुत कम समय गुज़ारकर सांसारिक लोगों के लिए किए गए कार्य भविष्य हेतु रास्ता-दर्शाने वाले हैं। श्री पटना साहिब (बिहार) में आगमन कर बचपन की लीलाओं से लेकर श्री नांदेड़ साहिब (महाराष्ट्र) तक का जीवन सफर अनेकों हैरानकुन कारनामों से भरपूर है।

बचपन से ही सांसारिक लोगों ने भांप लिया था कि आप जी का आगमन मानव-हितों के लिए तथा कष्ट निवारण करने के लिए हुआ है। श्री अनंदपुर साहिब (पंजाब) पहुंचने पर छोटी अवस्था में ही पिता-गुरु श्री गुरु तेग बहादुर साहिब के साथ हर तरह के कार्यों में हिस्सा लिया। पंडित किरपा राम जो मटन (कश्मीर) से औरंगज़ेब के जुल्म से परेशान कश्मीरी पंडितों की रक्षा हेतु प्रतिनिधि मंडल सहित आप जी के गुरु-पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास फरियाद लेकर आया तो आप जी ने जान लिया कि धर्म को बचाने के लिए तथा जुल्म को रोकने के लिए किसी ठोस कार्यवाही की आवश्यकता है। इस लिए आप जी ने गुरु-पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब को धर्म की रक्षा हेतु दिल्ली जाने के लिए तैयार किया तथा अपने सिर पर सारी जिम्मेवारी ली। गुरु-पिता जी से बिछुड़ना तथा समूची कौम की उत्तरादायित्व करना किसी अगंमी सोच का ही प्रतीक था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पिता-गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत के उपरांत जुल्म को रोकने हेतु निर्बल व कमज़ोर हो चुके सांसारिक लोगों को तैयार किया ताकि वो खुद जुल्म का मुकाबला करके सिर उठाकर जीवन व्यतीत कर सकें। इस लिए बलहीन हो चुके लोगों को अपनी रक्षा हेतु तैयार करने के लिए श्री अनंदपुर साहिब के स्थान पर वैसाखी वाले दिन विशेष समागम करके खालसा पंथ की सृजना की। लोगों को अपने हकों के लिए जीने और जुल्म को रोकने के लिए तैयार किया। नि:सहाय हो चुके लोगों को सिर्फ तैयार ही नहीं किया बल्कि अमली रूप में खुद अग्रणी होकर इस लहर का संस्थापन भी किया। इसके बारे में बयान है :

खालसा काल पुरख की फौज ॥
प्रगटिओ खालसा परमातम की मौज ॥

(सरब लोह)

यहां ही बस नहीं, आप जी ने खालसा पंथ की सृजना कर खालसे को पूर्ण मान-सम्मान दिया और कहा :

खालसा मेरो रूप है खास ॥
खालसे महि हउ करों निवास ॥

आप जी द्वारा चलाई गई इस लहर से कौम में जागृति आई। इसके साथ ही पहाड़ी राजाओं को अपने राज-भाग का डर खाने

*५७०७, मॉर्डन डुपलेक्स, मनीमाजरा-१६०१०१म (चंडीगढ़)

लगा। इस लिए वो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा चलाई लहर को रोकने हेतु गुरु साहिब के विरुद्ध हो गए तथा औरंगज़ेब बादशाह को गुरु जी के विरुद्ध ख़बरें भेजी गईं ताकि बादशाह भी गुरु जी की इस लहर को रोकने में उनका साथ दे। औरंगज़ेब पहले से ही ऐसे मौके की तालाश में था। खबरें पहुंचते ही पहाड़ी राजाओं की सहायता के लिए शाही सेना भी गुरु जी के पीछे लग गई। पहाड़ी राजाओं की बदनीति को रोकने हेतु तथा औरंगजेब बादशाह के बढ़ चुके जुल्म के विरुद्ध टक्कर के लिए खालसा फौज को कई बार युद्ध में जूझना पड़ा। अब गुरु साहिब द्वारा चलाई गई लहर को लोग साहसी एवं जांबाज़ बनकर हर तरह के जुल्म के विरुद्ध टक्कर लेने के लिए जानें कुर्बान करने हेतु तैयार हो चुके थे। पहाड़ी राजाओं ने मुगलों की शाही सेना के साथ मिलकर कई बार गुरु जी के साथ युद्ध छेड़ा। अल्प संख्या होने के बावजूद भी गुरु जी द्वारा तैयार की गई सेना के सिपाहियों ने पहाड़ी राजाओं के युद्ध में दांत खट्टे किए तथा मुगल सेना में भगदड़ मचा दी। जैसे-जैसे जुल्म होते उसी प्रकार ही खालसा फौज इसका डटकर मुकाबला करती तथा अपनी जान कुर्बान करने से न डरती। शाही सेना के भारी प्रयत्नों के बावजूद भी वो सिंघों की शक्ति को कुचल न सके और गुरु जी को नुकसान पहुंचाने में असफल रहे। चाहे वह भंगाणी का युद्ध था अथवा श्री अनंदपुर साहिब में हुए युद्ध की टक्कर थी या खिदराणा की ढाब (श्री मुकतसर साहिब) पर हुए मुकाबले का वृत्तांत है, हर बार मुगलों की शाही सेना को मुंह की खानी पड़ी और निराश एवं विवश होकर वापिस लौटना पड़ा। वो कभी भी सिंघों पर विजयी न हो सके।

गुरु जी की दिव्य दृष्टि ने अलौकिक कौतुक ही दर्शाए। श्री अनंदपुर साहिब को छोड़ने के उपरांत आप जी कुछेक सिंघों के साथ चमकौर की कच्ची गढ़ी में घिर गए। मुगलों की शाही सेना मारो-मार करती हुई आप जी के पीछे लगी हुई थी। आप जी कुछेक सिंघों सहित हज़ारों की संख्या में शाही सेना को रोके रखने तथा अपने जिगर के टुकड़े साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी तथा साहिबज़ाता जुझार सिंघ जी को भी दुश्मन से लड़ने के लिए जंग के मैदान में भेजा। यह सारा कौतुक आंखों देखा तथा पुत्रों की शहादत देकर सांसारिक लोगों के सामने एक विलक्षण एवं अतुलनीय उदाहरण कायम की। दूसरी तरफ छोटे साहिबज़ादों बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी को शहीद करने तथा माता गुजरी जी का अकाल चलाना सुनकर आप जी ने प्रभु का शुक्राना ही किया। चारों सुपुत्रों व पिता जी को कुर्बान कर अपने मिशन का मुंह नहीं मोड़ा। माता जी द्वारा सुपुत्रों के बारे में पूछने पर गमगीन होने की जगह इतना ही कहा :

चार मूए तो किआ हूआ जीवत कई हज़ार।

इस प्रकार सांसारिक लोगों को मोह त्यागने का रास्ता दिया था। सांसारिक लोगों के कल्याण हेतु धर्म-निरपेक्षिता की लहर चलाई। इस समय का समाज फोकट वहमों-भ्रमों व अंध-विश्वासों में लिप्त था, जिसको दूर करना बहुत आवयश्क था। आप जी ने मूर्ति-पूजा के विरुद्ध भी आवाज़ उठाई तथा नाशवान संसार के बारे में अवगत करवाकर मात्र परमात्मा की भक्ति की तरफ सबको प्रेरित किया। आप जी द्वारा जनमानस को दी गई

सही दिशा निम्नलिखित शब्द से स्पष्ट तौर पर उजागर होती है :

काहू लै पाहन पूज धरयो सिर
काहू लै लिंग गरे लटकाइओ ॥
काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि
काहू पछाह को सीसु निवाइओ ॥
कोऊ बुतान को पूजत है पसु
कोऊ म्रितान को पूजन धाइओ ॥
कूर क्रिआ उरझिओ सभही जग
स्री भगवान को भेदु न पाइओ ॥

(सुधा सवय्ये, पा: १०)

इस प्रकार फोकट कर्मकांडों में फंसे लोगों को स्पष्ट रूप में इसके बारे में अवगत करवाया। आप जी ने देवी-देवताओं को पूजने के बारे में सुचेत करते हुए अपने शब्दों में कहा :

मै न गनेसहि प्रिथम मनाऊं
किशन बिशन कबहूं नहिं धिआऊं ॥

(चौपई पा: १०)

आप जी ने अपनी बाणी द्वारा जन साधारण को सच्चे मार्ग पर चलने का रास्ता दिखाया। इस मिशन की पूर्ति हेतु आप जी द्वारा शबद-गुरु को मान्यता देना था। श्री नांदेड़ साहिब (महाराष्ट्र) में १७०८ ई को आप जी ने समूची संगत को शबद गुरु के आदेश पर चलने के लिए कहा और श्री गुरु ग्रंथ साहिब को सर्वउच्च स्थान दिया। सारी संगत को यह हुक्म किया कि भविष्य में किसी देहधारी तथाकथित गुरु को मान्यता नहीं देनी। गुरु रूप बाणी जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है यही आगे से जनमानस का गुरु तथा रहनुमाई होगी। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा तैयार करवाए गए श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही सर्वउच्चता दी और फरमान किया :

सभ सिखन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ ॥

इस प्रकार सांसारिक लोगों को नयी दिशा मिली और वो पाखंडों एवं अंध विश्वासों से दूर रहने लगे।

इन सबका कारण स्पष्ट है। गुरु जी जिस उद्देश्य से संसार में आए, उसको थोड़े समय में रहकर भी पूरा किया। जिसके बारे में आप जी 'बचित्र नाटक' में इस प्रकार बयान किया है :

हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥ . . .
याही काज धरा हम जनमं ॥
समझ लेहु साधू सभ मनमं ॥
धरम चलावत संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारन ॥

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सर्व-हितकारी थे जो मानवता के दुख निवृत्त करने हेतु विश्व में आए।

आप जी द्वारा किए गए सांसारिक कार्यों का वृत्तांत लासानी है। गुरु जी तो खुद परमात्मा रूप थे, जिन्होंने अनेक कौतुक रचाकर मानवता को सत्य का मार्ग दर्शाया। आप जी के बारे में गुरमति के महान लिखारी भाई गुरदास जी दूजा जी का कथन है।

वह प्रगटिओ पुरख भगवंत रूप गुर गोबिंद सूरा।

आप जी द्वारा दर्शाया गया मार्ग ही भविष्य में जनमानस के अंधकारमयी मार्ग को हमेशा रौशनाता रहेगा। ❁

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवि

*-डॉ राजेंद्र सिंघ साहिल**

खालसा पंथ के सृजक, महान् आध्यात्मिक व्यक्तित्व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी न सिर्फ स्वयं विलक्षण साहित्यकार थे बल्कि कलम के धनी विद्वानों, कवियों और साहित्य-सर्जकों के सहृदय आश्रयदाता भी थे। सिक्ख परंपरा के अनुसार गुरु जी के पाउंटा साहिब, श्री अनंदपुर साहिब और लखी जंगल के विद्या-दरबारों में बावन कवि और चौंतीस विद्वान थे।

सिक्ख ऐतिहासिक स्रोतों में बावन कवियों की सूचियां भी मिलती हैं, परंतु भिन्न-भिन्न स्रोतों से प्राप्त होने वाली सूचियों में समानता नहीं है। हर सूची के कुछ न कुछ कवि दूसरी सूचियों में नहीं मिलते। अगर सभी सूचियों को मिला दिया जाये तो कवियों की संख्या बावन से कहीं अधिक हो जाती है। बहुत संभव है कि संख्या 'बावन' का प्रयोग एक पारंपरिक महत्त्व की संख्या होने के कारण किया गया हो। प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर प्यारा सिंघ 'पदम' ने कवियों की संख्या के विवाद में न पड़ते हुए, इन्हें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी रत्न कहना अधिक उचित समझा है और अपनी इसी शीर्षक वाली पुस्तक में १२५ कवियों एवं विद्वानों का उल्लेख किया है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जहां एक ओर महान् आध्यात्मिक, सामाजिक नेता, उत्कृष्ट चिंतक और आदर्श सेना-नायक थे तो वहीं दूसरी ओर उच्चकोटि के विद्वान् दार्शनिक, कलाविद् और अनुपम काव्य-सर्जक भी थे। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि गुरु जी के दरबार में विद्वानों एवं कवियों को इतना मान-सम्मान मिलता। गुरु-दरबार की यह निराली कीर्ति पूरे भारत में फैली हुई थी। गुरु साहिब की साहित्यिक अभिरुचि एवं साहित्य तथा साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने की नीति से आकर्षित होकर अनेक कवि एवं विद्वान् गुरु दरबार में आये।

ये कवि एवं विद्वान् पंजाब के विभिन्न क्षेत्रों से ही नहीं, वरन् पंजाब से बाहर के दूर-दूर के इलाकों से भी गुरु-दरबार में आये थे। कवि नंद लाल जी गोया का संबंध गजनी से था। कवि सुदामा जी और कवि कुवरेश जी बुंदेल खंड से आये थे। कवि ईश्वरदास जी आगरा और कवि सुखदेव राय जी बरेली के निवासी थे। यही नहीं कवि गोपाल जी गोकुल के रहने वाले थे तो कवि कांशी राम बनारस के. . .। और तो और मोड़ता (राजस्थान) के रहने वाले कवि वृंद जी जोधपुर और मुगल दरबार जैसे राजाश्रयों को छोड़कर गुरु-दरबार के स्वतंत्र हुए थे। स्पष्ट है कि उन्हें दशमेश पिता जी के दरबार के स्वतंत्र एवं स्वाभिमान-सम्पन्न वातावरण ने भौतिक सुख-सुविधाओं को त्यागकर यहां प्रवाहित हो रही आध्यात्मिक सरिता में स्नान होने के लिए आकर्षित किया था।

दशमेश पिता जी के दरबारी कवि न सिर्फ भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से संबंध रखते थे बल्कि धर्म, जाति, वर्ग आदि की दृष्टि से भी इनकी पृष्ठभूमि भिन्न-भिन्न थी। अगर भाई नंद लाल जी, अमृत राय जी, टहिकन दास जी, नंद राम जी, सुखदेव जी, कांशीराम जी, वृंद जी, गिरधर

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१

लाल जी और तनमुख जी जैसे कवि एवं विद्वान्, विद्वता एवं संपदा से संपन्न पृष्ठभूमि से आये थे तो आलम जी और हुसैन अली जी जैसे कवि मुस्लिम थे, जबकि मीर छबीला जी और मीर मुशकी जी ढाडी थे। यहीं नहीं ननूआ जी और मानदास जी जैसे बैरागी भी थे। इनके अलावा रामदास जी, मदन सिंघ जी और धन्ना सिंघ जी जैसे बेहद साधारण पृष्ठभूमि से आये हुए कवि-विद्वान भी थे। कवि हीर जी के बारे में तो यह प्रसिद्ध है कि वह गुरु-दरबार में आने से पहले अत्यंत दरिद्र था। वास्तव में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं था। यहां मात्र कला, विद्वता और प्रतिभा को ही सम्मान दिया जाता था।

भाषा की दृष्टि से भी दशमेश पिता जी का दरबार बहुभाषी विद्वानों का उपवन था। गुरु जी स्वयं कई भाषाओं के ज्ञाता थे। भाई नंद लाल जी और आसा सिंघ जी यदि अरबी-फारसी के विद्वान थे तो ब्रिज लाल जी, देवी दास जी, अमृत राय जी, ईश्वरदास जी, मंगल जी आदि संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। गुरु जी ने दरबारी कवि सैणा सिंघ जी को संस्कृत का अध्ययन करने के लिए विशेष रूप से काशी भेजा था।

गुरु-दरबार के सारे कवि एवं विद्वान अपने-अपने क्षेत्र के गंभीर अध्येता, चिंतक ओर सर्जक थे। इस लिए गुरु जी के दरबार में नित्यप्रति धर्म, संस्कृति, इतिहास, समाज, राजनीति, काव्य आदि विषयों पर निरंतर अध्ययन, मनन एवं चिंतन सृजन अबाध रूप से चलता था। गुरु जी का मानना था कि मनुष्य का मानसिक परिष्कार सत्-साहित्य के माध्यम से ही हो सकता है, अत: उन्होंने न सिर्फ नवीन साहित्य-सृजन को विशेष प्रोत्साहन दिया वरन् प्राचीन सांस्कृतिक ग्रंथों का जन-भाषा में अनुवाद भी करवाया।

जहां भाई नंद लाल जी, भाई सेनापति जी, भाई गुरदास सिंघ जी, अणी राय जी, नंद राम जी, सुखदेव जी, सुदामा जी, कुवरेश जी, आलम जी, चंदन जी, सुंदर जी, मदन सिंघ जी, गोपाल जी, शारदा जी, धिआन सिंघ जी, माला सिंघ जी, हुसैन अली जी, वृंद जी, रावल जी, गिरधर लाल जी, तनसुख जी आदि कवियों ने मौलिक काव्य-सृजन किया वहीं आमृतराय जी, कुवरेश जी, हंसराम जी, मंगल जी, टहिकन दास जी, चंदा जी, ईश्वर दास जी, लक्खण राय जी, प्रहलाद राय जी आदि विद्वानों ने उपनिषदों, रामायण, महाभारत, हितोपदेश समेत अनेक सांस्कृतिक ग्रंथों का जनभाषा में अनुवाद किया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में रचा गया यह महान् साहित्य-संग्रह आज पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं है। दुर्भाग्य से सन् १७०४ के श्री अनंदपुर साहिब के युद्ध में इस विशाल साहित्य-संपदा का एक बड़ा भाग नष्ट हो गया। गुरु जी ने श्री अनंदपुर साहिब छोड़ते समय सुरक्षित बचाने के उद्देश्य से बहुत-सा साहित्य साथ ले लिया था परंतु सरसा नदी पर भयानक मुठभेड़ में इसका एक बड़ा भाग नदी में बह गया। यदि यह समस्त साहित्य आज हमारे पास होता तो साहित्य के इतिहास का रूप ही कुछ और होता।

फिर भी इस विशाल साहित्य-कोश का जो भाग आज उपलब्ध है, वह कथ्य एवं कला की दृष्टि से उत्कृष्ट एवं अनुपम साहित्य है। भाई नंद लाल जी की कृतियां 'ज़िंदगीनामा', 'बंदगीनामा', 'जंगनामा' आदि कवि सेनापति जी का काव्य 'गुरु शोभा', गुरदास सिंघ जी की 'वार पातशाही दसवीं की',. अणीराय जी की रचना 'जंगनामा गुरु गोबिंद सिंघ', कवि गुणिया जी की कृति 'साखी हीरा घाट दक्खन की', कवि नंद राम

(शेष पृष्ठ ३० पर)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की उपमा-वाचक नामावलि

*-डॉ. नवरत्न कपूर**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी (सन् १६६६-१७०८ ई.) उच्च कोटि के विद्वान, महान योद्धा, कुशल संगठनकर्ता तथा सुविख्यात युग-प्रवर्त्तक थे। सिक्ख इतिहास और सिक्ख विद्वानों एवं उनके श्रद्धालु कवियों ने उन्हें विभिन्न उपमा-वाचक संज्ञाओं से अभिहित किया है। ऐसे स्तुति-परक नामों की झलकियां पेश हैं :

१. आनंद के दाता : नौवें गुरु साहिब श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने 'माखोवाल' नामक ग्राम, जो कि सतलुज नदी के तट पर स्थित था, की जमीन खरीद कर संवत् १७२३ (सन् १६६६ ई.) में पंजाब का प्रसिद्ध धार्मिक केंद्र 'श्री अनंदपुर साहिब' नामक नगर बसाया था। सिक्ख गुरु साहिबान के जीवन-चरित लेखकों का कथन है कि चारों ओर सुरम्य पहाड़ियों के मध्य बसाए गए इस नगर में संस्थापक श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने व्यापारियों के लिए बाज़ार बनवाए और बाहरी क्षेत्र में श्रद्धावनत किसानों को कृषि कार्य सौंप कर 'जंगल में मंगल' कर दिया। इस संबंध में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवि भाई मंगल राय का कथन है :

आनंद दा वाजा नित वज्जदा अनंदपुर,
सुण सुण सुध भुल्लदी ए नर नाह दी।

अर्थात् श्री अनंदपुर साहिब में सदैव हंसी-खुशी का वातावरण रहता था, जिसे देख-सुनकर राजा-महाराजा (नर-नार) भी मस्ती में झूम उठते थे।

आरंभ में इस नगर का नाम श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी पूज्य मां माता नानकी जी के नाम पर 'चक्क नानकी' रखा था। पटना (बिहार) में जन्मे गुरु साहिब के एकमात्र सुपुत्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के इस नगर में अपनी मां माता गुजरी जी के साथ आने पर 'चक्क नानकी' की जनता के हृदय में मानो 'आनंद का सागर' फूट पड़ा और इस पवित्र गुरु-नगरी को उपयुक्त अर्थवत्ता प्राप्त हो गई। पसरूर (ज़िला सियालकोट, वर्तमान पाकिस्तान) में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा सुनकर उनकी शरण में आए उनके दरबारी कवि भाई मंगल राय ने पुन: अपने आश्रयदाता को 'आनंद के दाता' की उपमा अपनी मनोहर काव्य-रचना में इस प्रकार भेंट की है :

पूरन पुरख अवतार आन लीन आप,
जां कै दरबार मन चितवहि सो पाईए।
नौमे गुर नंद, जग बंद तेग, तयाग पूरे,
'मंगल' सुकवि कहि मंगल सु थाईए।
'आनंद को दाता' गुरु साहिब गोबिंद राइ,
चाहै जौ अनंद तउ अनंदपुर आईए।

इसी उपमा को ध्यान में रखकर कई विद्वान लेखकों ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को 'अनंदपुर के मालिक' भी पुकारा है।

२. उच्च का पीर : चमकौर साहिब नामक स्थान पर सन् १७०४ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सेना के साथ मुगलों का घमासान युद्ध हुआ। उसमें गुरु साहिब के दो बड़े सुपुत्र-- साहिबजादा अजीत सिंघ जी तथा साहिबजादा

**१०१, टावर डी-३, सागर दर्शन टावर सोसायटी, पाम बीच रोड, सेक्टर-१८, नेरूल (नवी मुंबई)-४००७०६*

जुझार सिंघ जी वीरगति को प्राप्त हुए। गुरु साहिब के कुछ अनुयायी चाहते थे कि गुरु साहिब किसी तरह गढ़ी से बाहर जाकर भारी सेना तैयार करें। उनके बार-बार ज़ोर डालने पर भी जब गुरु साहिब न माने तो पांच प्यारों ने उन्हें 'हुक्मनामा' सुना दिया। "गुरु बीस बिस्वे और संगत इक्कीस बिस्वे" की लोकोक्ति को शिरोधार्य करके गुरु साहिब ने चमकौर की गढ़ी से बाहर जाते समय ताली बजाकर दुश्मनों को अपने जाने की सूचना दी। यह चुनौती सुनकर मुगल सेना में भगदड़ मच गई। रात के अंधेरे में बहुत-से मुगल सैनिक एक-दूसरे को पहचान न सके और आपस में लड़कर कट मरे। गुरु साहिब गढ़ी से बाहर आकर एक बाग में लेट गए। उस उद्यान के मालिक भाई गनी खां और भाई नबी खां नामक दो सहृदय मुसलमान थे। गुरु साहिब उनसे घोड़े खरीदा करते थे। उन दोनों ने गुरु साहिब को पहचान लिया और उन्हें अपने घर में आराम करने के लिए चलने की प्रार्थना की। इसी बीच भाई गुलाबा नामक एक मसंद भी वहां आ पहुंचा और उसने भी गुरु साहिब को अपने निवास में विश्राम करने के लिए निवेदन किया।

दो-एक दिन के बाद मुगलिया गुप्तचर उन्हें ढूंढते हुए भाई गुलाबा के निवास के पास पहुंच गए। भाई गुलाबा की पत्नी को डर हुआ कि कहीं कोई पड़ोसी भेद न खोल दे, इसलिए उसने भाई गुलाबा से अनुरोध किया कि वह गुरु साहिब को किसी अन्य स्थल पर जाने के लिए विनती करे। पत्नी की बात से सहमत होकर बड़े शर्मीले शब्दों में भाई गुलाबे ने गुरु साहिब से प्रार्थना की : "आप तो 'बड़े पीर' हैं, हर तरह की परिस्थिति झेल सकते हैं। यदि मैं मुसीबत में फंस गया तो न रहूंगा घर का न घाट का।"

गुरु साहिब दीन-हीन भाई गुलाबे की अतिथि-भक्ति से प्रभावित थे और उसकी भावी शंका को भी पहचान गए। कानों-कान भाई गनी खां तथा भाई नबी खां को भी यह ख़बर मिल गई। उन्होंने गुरु साहिब को एक 'हाजी पीर' का वेश धारण करवा कर एक पलंग पर बिठाया और अपने कंधों पर पलंग उठा कर नगर से बाहर चल पड़े। उन सम्पन्न व्यापारियों से यदि कोई पूछता कि पलंग पर कौन बैठा है, तो दोनों महानुभाव धड़ल्ले से उत्तर देते : "ये तो उच्च के पीर हैं।" इस प्रकार भाई गनी खां और भाई नबी खां ने मुगल जासूसों की आंखों में धूल झोंक कर गुरु साहिब को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। इसी घटना के कारण श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम के साथ 'उच्च का पीर' की उपमा जुड़ गई।

३. कलगीधर पातशाह : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी शाही रुचियों वाले थे। वे अपनी पगड़ी पर सुंदर 'कलगी' सजाते थे, अत: वे इस उपमावाचक संज्ञा से भी विख्यात हुए। पंजाबी साहित्य जगत में 'कलगीधर' शब्द उनके नाम का पर्याय बन गया। किसी कवि ने उन्हें 'श्री कलगीधर' पुकारा है और किसी ने 'कलगीधर जी'। इस शब्द को अत्यधिक सम्मानसूचक रूप देने के लिए 'श्री कलगीधर हजूर' अथवा 'कलगीधर पातशाह' का प्रयोग भी कुछ विद्वानों ने किया है। ऐसी कुछ बानगियां प्रस्तुत हैं :

--अब आन की आस निरास भई,
कलगीधर वास कियो मन में।
(भाई संतोख सिंघ, श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ)
--दरसन चल्ल अनंदपुर करीए,
चलो सहीओ! अनंदपुर चलीए,
दरसन कर कर ठरिए।

इस रोशन दिल नाल सखी! गुरू गोबिंद सिंघ सिमरीए।
दरस सुहावै सै वरहिआं दे, कलगीधर दे करीए।
(भाई वीर सिंघ, कलगीधर चमतकार)

अर्थ : हे सहेलियो! आओ श्री अनंदपुर साहिब में चलकर (गुरु साहिब के) दर्शन करके हार्दिक शांति (ठरिए) प्राप्त करें और प्रसन्न हृदय (रोशन दिल) से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का स्मरण करें। (हमारी यही प्रार्थना है कि) हमें गुरु साहिब के दर्शन सैंकड़ों वर्षों (सै वरहिआं) तक होते रहें।

कई बार कवियों ने अपनी धुन में किसी अन्य सम्मानसूचक शब्द 'स्वामी' की अभिवृद्धि भी कर दी है, यथा :

इक्क दिन गुरु गोबिंद सिंघ साहिब, 'कलगीआं वाले स्वामी'।
दासां दे रख्यक, सिक्ख पालक, प्यारिआं अंतरजामी।
कलगी जिग्हा बिराजे मत्थे, लक्क तलवार सुहावे।
मत्था तूण तीर दा भरिआ, धनुख लहिर दिखलावे। (भाई वीर सिंघ, कलगीधर चमतकार)

इस पद में कवि महोदय ने गुरु साहिब का संपूर्ण शस्त्रधारी स्वरूप प्रकट करते हुए उन्हें अपने सेवकों का रक्षक, सिक्ख-संगत का पालनकर्ता एवं पांच प्यारों के हृदय में निवास करने वाला (अंतरयामी; साक्षात भगवान् स्वरूप) माना है।

४. दशम पातशाह तथा सच्चे पातशाह : इस शब्द समुच्चय में 'दशम' शब्द संस्कृत का है, जिसका अर्थ है 'दसवें'। सिक्ख चिंतनधारा में बसे 'पातशाह' शब्द का अर्थ-बोध काफी विस्तार के साथ प्रोफेसर पूरन सिंघ ने करवाया है, यथा : 'पातशाही' का यह संकल्प मुगलों की पातशाही जैसा नहीं था, बल्कि यह तो कारलाइल के कलाधारी पातशाह की धारणा से मिलती-जुलती चीज थी, जो गुरु के मन में कारलाइल से सदियों पहले उत्पन्न हुई थी। कारलाइल की इस धारणा को पेश करने से पहले ही गुरु जी को 'सच्चा पातशाह' कहकर संबोधित किया जाता था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का नीति-तंत्र परमात्मा की आत्मिक पातशाही को जनसमूह अथवा सभी लोगों को हस्तांतरित करने का उल्लेख करता है। वह वस्तुत: 'संगत तंत्र' है। *(Spirit of The Sikh)*

'पातशाह' शब्द का प्रयोग सभी सिक्ख गुरुओं के लिए हुआ है, किंतु प्रसंग के अनुकूल उनकी गुरु-पदवी की संख्या साथ में जोड़ दी जाती है। बहुधा उनके नाम के पर्याय के रूप में 'सच्चा पातशाह' शब्द का प्रयोग किया जाता है। छंद-पूर्ति के लिए इस शब्द-युगल का पहला शब्द 'साचो' अथवा 'साचे' कर दिया गया है, यथा :

--तेग साचो, देग साचो, सूरमा सरन साचो,
साचो पातशाह गुरू गोबिंद कहायो है।
(कवि सुंदर)

--साचे पातशाह श्री गुरु गोबिंद जीउ,
भोज की सी मौज तेरे रोज रोज पाइए।
(कवि आलम)

सिक्ख गुरु-परंपरा में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का दसवां स्थान था, इसलिए उन्हें भाई केसर सिंघ छिब्बर ने भी 'दसवें पातशाह' अपनी काव्य-रचना में पुकारा है, यथा :

अग्गे पुरातन नउ पातशाहीआं थीं, सिक्खी चली आई।
दसवें पातशाह 'सिंघी' रलाई। (बंसावलीनामा)

अर्थात् : सिक्ख धर्म तो पहले नौ गुरु साहिबान के जीवन-काल में ही प्रचलित था, किंतु दसवें पातशाह (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) ने (खालसा पंथ की स्थापना के पश्चात्) सभी

सिक्खों के नाम के पीछे 'सिंघ' शब्द अनिवार्य रूप से जोड़ने की परंपरा चला दी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कुछ बाणियों पर 'स्री मुख वाक पातिसाही १० (दसवीं)' अंकित करके उसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी प्रमाणित किया गया है। इसी पद्धति पर भाई वीर सिंघ ने उनके लिए 'दसम गुरू' (दशम गुरु) उपमा का प्रयोग भी किया है, यथा:

दसम गुरू दे बोले सूरे, अंत आवणा काल।
अज्ज नूं आवे कल्ल नूं आवे, टले न कीतिआं टाल।
धरम लई मरना पुन्न बिसाल।
(कलगीधर चमतकार)

अर्थात् (मृत्यु से निर्भीक) दसवें गुरु साहिब के एक शूरवीर ने धर्म-युद्ध में भाग लेते समय कहा कि मनुष्य की मौत आज अथवा कल ज़रूर होगी (अवश्यंभावी है), अत: धर्म की रक्षा के लिए प्राण देने से बढ़कर भला और विशाल पुण्य क्या होगा!

५. *दशमेश पिता :* भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार 'दशमेश' शब्द 'दशम+ईश' दो शब्दों का संधिज रूप है। इसका अर्थ है : "सिक्खों के दसवें स्वामी श्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब।" सन् १६९९ की वैसाखी के दिन 'खालसा पंथ' की स्थापना के बाद से गुरु जी 'पांच प्यारों' के साथ-साथ समूचे सिक्ख समुदाय के 'पिता' कहलाने लगे थे, इसलिए कई बार उन्हें श्रद्धालु-जन 'दशमेश पिता' के नाम से भी स्मरण करते हैं।

६. *बाजां वाले :* लोकप्रचलित राय है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने पास एक 'बाज' पक्षी रखा करते थे। इसी कारण 'बाजां वाले' शब्द उनकी शोभनीक उपमा बन गई।

७. *संत-सिपाही :* श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्वयं अपने जीवन-लक्ष्य के बारे में लिखा है :

हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥ . . .
धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारन ॥ (बचित्र नाटक)

इन शब्दों द्वारा उन्होंने भक्ति (संत उबारन) और शक्ति (दुसट उपारन) के समन्वय का उद्घोष किया था। इसी कारण उन्हें 'संत-सिपाही' उपमा प्रदान की जाती है।

८. *सरवंशदानी :* गुरु साहिब के दो बड़े सुपुत्र-बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी चमकौर के युद्ध में शहीद हो गए थे। उनके दोनों छोटे साहिबजादे--बाबा ज़ोरावर सिंघ जी एवं बाबा फ़तहि सिंघ जी ने सिक्ख धर्म के लिए सरहिंद (फ़तहिगढ़ साहिब) में अपना जीवन अर्पित कर दिया था। ऐसे दुखद समाचारों के बावजूद भी गुरु साहिब अपने भक्ति और शक्ति के समन्वय-मार्ग पर सुदृढ़ रहे। ऐसी उल्लेखनीय त्याग-भावना के कारण वे 'सरवंशदानी' की उपमा से भी विभूषित हुए, जिसका अर्थ है 'सर्वस्व दान करने वाले'।

बड़े साहिबज़ादों की शहादत

*-प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चारों साहिबज़ादों की शहीदी दिल दहलाने वाली, विलक्षण, लामिसाल और ऐतिहासिक घटना है। इस घटना को पूरी तरह से समझने के लिए भारत के गत इतिहास तथा समय के धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक हालात के बारे में जानना ज़रूरी रहेगा।

संक्षेप में समझने की ज़रूरत है कि किसी समय यह देश 'सोने की चिड़िया' था। शिक्षा का केंद्र, सभ्यता का केंद्र, राजनीतिक रूप में बलवान जाना जाता था। यह देश, भारतीय समाज की, की गई जाति-विभाजन वर्ण-विभाजन, धार्मिक कट्टरता, छूआ-छूत, ऊंच-नीच आदि के कारण तहस-नहस हो गया। इसके साथ ही यहां के देशी, रियासती राजाओं की ऐशप्रस्ती, लूटमार, आपसी वैर-विरोध, आर्थिक असमान बंटवारा आदि ने जलती आग में जैसे घी डालने काम किया। परिणामस्वरूप यह हुआ कि देश में अनेकों कमियां और कमज़ोरियां आ गईं। देश अपने धर्म, गैरत, स्वाभिमान और सरहदों की रक्षा करने में असमर्थ हो गया। हालात ऐसे बन गए कि हज़रत मुहम्मद साहिब के ६३२ ई. में वफ़ात (मृत्यु) से ८० वर्ष बाद ७१२ ई. में अफगानिस्तान का १८ वर्ष का युवक मुहम्मद-बिन-कासिम २०० घुड़सवार लेकर देश पर हमलावर के रूप में आया और सारे देश को लूट-पीटकर वापिस चला गया। इससे बड़ी त्रासदी किसी देश की और क्या हो सकती है? इन इस्लामी हमलों का दौर जारी रहा और अंतत: ११९२ ई. को देश में नई आई 'इस्लामी शक्ति' का गुलाम हो गया। अपना धर्म, देश और सामाजिक ताना-बाना बचाने की जगह यहां के राजाओं व देश के लोगों ने गुलामी को ही कबूल कर लिया। धर्म परिवर्तन आरंभ हो गया। *"अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥"* का बोलबाला हो गया। भारतीय रियासती राजाओं, धार्मिक कट्टरवादी शक्तियों और इस्लामी राजसी शक्तियों के जुल्म के कारण भारतीय श्रमिक श्रेणी त्राहि-त्राहि कर रही थी। उनके पास न ही कोई गुरु था, न ही धर्म था, न ही कोई शक्ति थी और न ही उनकी अगुवाई करने वाला कोई समर्थ और योग्य राजनीतिक नेता था। हालात यहां तक बिगड़ चुके थे कि जिन राजाओं ने देश की जान-माल और सरहदों व धर्म की रक्षा करनी थी, उन्होंने छोटे-छोटे लाभों के बदले गुलामी कबूल कर ली। राजपूत राजा मान सिंहु ने अपनी बहन जोधा बाई की डोली ही बादशाह अकबर के हवाले कर दी। खुद उसके दरबार में अहिलकारी प्राप्त कर ली। इस समय १२वीं, १३वीं, १४वीं शती में पहले सूफी लहर और बाद में भक्ति लहर ने लोगों को जगाने का प्रयत्न किया। इस लहर को पूरा बल और सर्वपक्षीय अगुवाई श्री गुरु नानक देव जी के रूप में ही मिली। गुरु जी का सिद्धांत निमानों को मान; निआसरों के आसरा और अगुवाई विहीन लोगों

**अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर। फोन: ९९१५८-०५१००*

को शसक्त अगुवाई देने, धर्म विहीन किए गए लोगों को धर्म, स्वाभिमान, गैरत, मानवता-बराबरी वाला और जात-पात तथा छूआछूत से बिल्कुल रहित विलक्षण और क्रांतिकारी था। श्री गुरु नानक देव जी ने खुद को देश की श्रमिक और तथाकथित नीच जाति में खड़ा किया, उनके उत्थान के लिए क्रांतिकारी आवाज़ बुलंद की। इस सर्वपक्षीय क्रांति का सारांश इस प्रकार कह सकते हैं :

--*नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु।*
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ *(पन्ना १५)*

--*जिन की जात और कुल मांही*
सरदारी नहि भई कदांही।. . .
इन ही को सरदार बनावों
तजै गुबिंद सिंघ नाम सदावों। *(पंथ प्रकाश)*

श्री गुरु नानक देव जी का तथाकथित नीच जातियों के हक में ज़ोरदार आवाज़ उठाना, भाई मरदाना जी को अपना साथी बनाना, कथा एवं कीर्तन में बिना किसी जात-पात, भेदभाव से शामिल होने की छूट थी। श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा संगत-पंगत में बिना किसी जात-पात, भेदभाव के शामिल होने की छूट के बाद श्री गुरु अमरदास जी द्वारा 'पहले पंगत पाछे संगत' का सिद्धांत दृढ़ करवाया। श्री गुरु रामदास जी द्वारा निर्मित किए श्री अमृतसर सरोवर में बिना किसी भेदभाव के जनमानस को स्नान करने की छूट-सांझ स्थापित की। श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा संपादित "आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब" में बिना किसी भेदभाव के संतों-भक्तों की बाणी को शामिल किया जाना। श्री हरिमंदर साहिब में हर किसी को कीर्तन श्रवण करने और संगत में जुड़ बैठने का हक प्रदान किया। इन सब महत् कार्यों के कारण देश के राजा, पुजारी वर्ग, तथाकथित उच्च जातियों के लोग और इस्लामी शक्ति सब एक जुट होकर विरोध में डट गए। इस तरह यह क्रांतिकारी लोग पक्षीय लहर समय की राजसी शक्ति, कट्टरपंथी लोगों के हक हथियाने वाले लूटमार करने वालों के लिए बर्दाशत से बाहर थी। इसलिए देश के रियासती राजाओं, धार्मिक कट्टरपंथियों और इस्लामी शक्तियों की तरफ से इस नई रोशनी, नई शक्ति और पूर्ण इन्कलाबी लहर को अपने रास्ते का रोड़ा मान लिया गया। इन सभी शक्तियों ने आपसी विरोध होने के बावजूद एकजुट होकर सिक्ख-लहर का डटकर विरोध करना आरंभ कर दिया। श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी को इस संदर्भ में देखने की आवश्यकता है। बादशाह जहांगीर द्वारा श्री गुरु अरजन देव जी को शहीद करने हेतु दिए गए फैसले को जायज़ ठहराने के लिए जो तुजक-ए-जहांगीरी में दर्ज है, वह इस तथ्य की पुष्टि करता है।

जिनको धर्म प्यारा था, वह बलहीन होने के कारण धर्म की रक्षा करने से असमर्थ थे। कश्मीरी ब्राह्मण पंडित किरपा राम की अगुवाई में श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के दरबार में फरियादी बनकर पहुंचे। गुरु साहिब ने उनकी बाजु पकड़ी *"बाहें जिन्हां दी पकड़ीए सिर दीजै बाहें न छोडीए।"* का कौतुक महान् बलिदान देकर किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस शहीदी के बारे इस प्रकार पुष्टि करते हैं :

तिलकु जंञू राखा प्रभ ता का ॥
कीनो बडो कलू महि साका ॥

श्री गुरु नानक देव जी ने उस समय के धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक हालात के बारे में अपनी बाणी में भरपूर जानकारी दी है :

--*कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥*

ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥
जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥
तीने ओजाड़े का बंधु ॥ (पन्ना ६६२)
--राजे सीह मुकदम कुते ॥
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥ (पन्ना १२८८)
--चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ (पन्ना १२८८)
--खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥
स्रिसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥
(पन्ना ६६३)
--राजे पापु कमांवदे उलटी वाड़ खेत कउ खाई। . .
काजी होए रिसवती वढी लै कै हकु गवाई।
इसत्री पुरखै दामि हितु भावै आइ किथाऊं जाई।
वरतिआ पापु सभसि जगि मांही। (वार १:३०)

भारतीय जनता को अपमानजनक ज़िंदगी से निकालकर नवीन, संतुलित, मानवता-बराबरी, सांझीवालता, गैरत एवं गौरव भरपूर जीवन मुहैया करवाने हेतु गुरु साहिबान ने सर्वपक्षीय क्रांति का प्रारंभ किया। इस नयी रौशनी के प्रकाश से भारतीय समाज के हर पहलू पर काबिज़ लोगों ने डटकर विरोध आरंभ कर दिया। इस तरह एक टकराव हो गया। इस लंबे संघर्ष के दौरान गुरु परिवारों, असंख्य सिंघों-सिंघनियों बच्चों, बुजर्गों को यातनाएं झेलनी पड़ीं; जंगलों में रहने के लिए मज़बूर होना पड़ा। लामिसाल शहीदियां पाकर देश, धर्म, गौरव, स्वाभिमान तथा स्वअस्तित्व को बचा लिया। इस लामिसाल शहीदियों को प्रतिदिन सारा सिक्ख जगत अरदास में याद कर उन महान शहीदों को श्रद्धा और सत्कार भेंट करता है। किसी इस्लामी शायर ने ठीक ही कहा है :

न कहूं अब की न कहूं तब की
अगर न होते गुरु गोबिंद सिंघ
सुंनत होती सब की।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चारों साहिबज़ादों की पावन शहादत दुनिया के इतिहास में सबसे दर्दनाक घटना है। यह दिल को दहला देने वाला घोर पाप था, घिनौने जुल्म का साका है। यह घटना मानव दरिंदगी का घिनौना चरित्र पेश करती है। साहिबज़ादों के अंदर जूझ मरने और दृढ़ता व सिक्खी-सिदक की भावना के शिखर को प्रकट करती है। ८ पौष और १३ पौष १७६१ बिक्रमी को गुरु जी के बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी चमकौर साहिब की जंग में लड़ते हुए शहीद हो गए। छोटे साहिबज़ादे बाबा ज़ोरावर सिंघ जी और बाबा फ़तहि सिंघ जी सूबा सरहिंद द्वारा ज़िंदा दीवारों में चिनवा कर घोर यातनाएं देकर शहीद कर दिए गए। इन पावन शहादतों की महानता के बारे में मैथिली शरण गुप्त ने लिखा है :

जिस कुल जाती देश के बच्चे, दे सकते हैं यौं बलिदान।
उस का वरतमान कुछ भी हो, भविष्य है महां महान।

गुरमति के अनुसार आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति के लिए मनुष्य को स्व मिटाने की आवश्यकता होती है। यह मार्ग एक महान शूरवीरता का मार्ग है। सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्खी के मार्ग पर चलने के लिए सिर भेंट करने की शर्त रखी थी। इस रास्ते पर चलते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मार्च, १६९९ ई. को खालसा पंथ की सृजना की। खालसा एक आदर्शक, संपूर्ण व स्वतंत्र मनुष्य है। गुरबाणी में इसको सचिआर, गुरमुख, ज्ञानी, ब्रह्म-ज्ञानी, गुरसिक्ख और संत-सिपाही कहा गया है। खालसा

सद्‌गुण भरपूर विलक्षण शख़्सियत है। खालसा गुरु को तन, मन और धन सौंप देता है। ज़ब्र-जुल्म के मुकाबले हेतु जूझ मरने से डरता नहीं है। सतिगुरु जी का इस मार्ग के पथिक के लिए सिद्धांत इस प्रकार है :

--जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

--सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥ (पन्ना ५५८)

--तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥ (पन्ना ७५७)

-- अर सिख हों आपने ही मन कौ इह लालच हउ गुन तउ उचरों ॥
जब आव की अउध निदान बनै अत ही रन मै तब जूझ मरों ॥ (चंडी चरित्र)

पहाड़ी राजा और मुगल सल्तनत एक साथ पहले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ भंगाणी के युद्ध में गुरु जी के विरुद्ध टकराए तथा अन्य कई जंगों में भी गुरु जी के विरुद्ध एकजुट रहे। १७०४ ई. में मुगल और पहाड़ी राजाओं की फौजों ने सांझी कमान तले श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल दिया। घेरा लंबा होने के कारण दुश्मन फौज द्वारा गुरु जी के साथ समझौता किया गया। समझौते की शर्त यह थी कि एक बार गुरु जी श्री अनंदपुर साहिब छोड़ दें, उनको बेरोक जाने दिया जाएगा। इसके बारे में लिखित कस्में भी गुरु जी को भेजी गईं। दीना कांगड़ से बादशाह औरंगज़ेब को गुरु जी द्वारा भेजे जफ़रनामे में किए गए ज़िक्र में इन तथ्यों की पुष्टि होती है। गुरु जी औरंगज़ेब को लिखते हैं कि यदि उसको ज़रूरत महसूस हो तो वह उनको लिखती वादे, खाई गई पवित्र कुरान शरीफ की कस्में भेज सकते हैं :

तुरा गर बबायद कउलि कुरां ॥
बनिज़दे शुमा रा रसानम हमां ॥ (ज़फरनामा)

गुरु जी के किला खाली कर जाने पर दुश्मन ने सारी कस्में तोड़कर उनका पीछा करना शुरू कर दिया। यह धर्म हीन राज-सत्ता का भी नंगा-नाच था। बेईमानी, वादा-खिलाफी और दरिंदगी का घिनौना कुकर्म था। कवि अलामा इकबाल ऐसे हालात के बारे में इस प्रकार लिखते हैं :

जलाल-ए-पातशाही हो कि जमहूरी तमाशा हो।
जुदा हो दीं से सिआसत तो रहि जाती है चंगेज़ी।

सरसा नदी के पास पहुंचते ही घमासान लड़ाई हुई, जिस के दौरान दोनों दलों का भारी जानी और माली नुकसान हुआ। इस घमासान युद्ध के दौरान गुरु जी का परिवार तीन हिस्सों में बिखर गया। गुरु जी के दो छोटे साहिबज़ादे और माता गुजरी जी जत्थे से एक तरफ बिखर गए। माता सुंदरी जी और कुछेक सिंघ दूसरी तरफ चले गए।

दुनिया की जंगों-युद्धों के इतिहास में यह मात्र एक ही घटना हुई है, जब मर्द-ए-मैदान, शहंशाह-ए-शहंशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास जहां जंग का साजो-सामान तीर, कृपाण, ढाल, बरछा, छवि आदि थे वहां गुरमति संगीत के साज सिरंदा, सितार आदि भी थे। ६ और ७ पौष की रात्रि को जब अमृत वेला हुआ। दुश्मनों ने भारी हमला किया हुआ था, दशम् पातशाह ने अपने बड़े सुपुत्र बाबा अजीत सिंघ जी, भाई जीवन सिंघ (जैता जी), भाई उदे सिंघ को अन्य सिंघों सहित हमलावरों का मुकाबला करने का हुक्म दिया। दूसरी तरफ भाई दया सिंघ आदि को *"अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई*

वीचारु ॥" के अनुसार आसा की वार का कीर्तन करने के लिए कहा। ऐसा कार्य केवल तो केवल दशमेश पिता ही कर सकते हैं। जब ऐसे अति बिखड़े, खतरनाक हालात में और मैदान-ए-जंग में वह अपना 'फर्ज़-ए-इलाही' नहीं भूले। दुनिया के इतिहास में यह एक विलक्षण एवं अद्वितीय घटना थी। सरसा नदी में भारी बाढ़ और दुश्मनों का ज़ोरदार हमला ऐसे लगता था, जैसे एक दूसरे साथ के इस घिनौने कारनामें में शामिल हों; चाहे इस युद्ध में सैंकड़ों बहादुर सिंघों सहित भाई जीवन सिंघ (जैता जी) और भाई उदे सिंघ शहीद हो गए परंतु फिर भी दुश्मन-सेना के दांत खट्टे कर दिए। जिस स्थान पर गुरु-परिवार बिखर गया उस स्थान पर गुरुद्वारा 'परिवार विछोड़ा' साहिब सुशोभित है जो इतिहास में इस दर्दनाक घटना की याद को संभाले हुए है।

उपरांत सरसा नदी पार करके गुरु जी ने एक दिन रोपड़ के पास निहंग ख़ान की गढ़ी (कोटला निहंग ख़ान) में बिताया रात को आगे चल पड़े दुश्मनों की फौजों ने पीछा करना शुरू कर दिया। गुरु जी ने चमकौर की कच्ची गढ़ी में दाख़िल होकर मोर्चा बंदी कर ली। गुरु जी के साथ बड़े साहिबज़ादे एवं पांच प्यारों सहित लगभग चालीस सिंघ थे। दुश्मन की दस लाख फौज ने गढ़ी को घेरा डाल लिया। सारा दिन जंग होती रही। शाम तक गुरु जी के पास लगभग सारा गोली-सिक्का खत्म हो गया। अब सिंघों ने गढ़ी से बाहर आकर लड़ना आरंभ कर दिया। गुरु जी ने खुद बारी-बारी बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी को पूरे अस्त्र-शस्त्र सजाकर मैदान-ए-जंग में भेजा। अंत बहादुर योद्धाओं वाले जौहर दिखाते हुए साथी सिंघों सहित गुरु जी के दोनों बड़े साहिबज़ादे गुरु जी के सामने मैदान-ए-जंग में शहीद हो गए। बाबा अजीत सिंघ जी ने अभी जवानी में पांव रखा ही था। बाबा जुझार सिंघ जी तो अभी किशोर अवस्था में थे। गुरु जी यदि चाहते तो अपने सुपुत्रों को बचाने के लिए प्रयत्न कर सकते थे परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। दुनियावी लोग अपने निजी स्वार्थ की खातिर सारे उसूल, सिद्धांत और कौमी हितों को भी कुर्बान करने से नहीं हटते। ऐसे लोगों को इतिहास में घृणा की नज़र से देखा जाता है। गुरु जी के लिए सिंघों और सुपुत्रों के मध्य कोई अंतर नहीं था। गुरु जी की तरफ से मैदान-ए-जंग में जूझते हुए शहीदी प्राप्त के लिए की गई तैयारी और रहते महत्त्वपूर्ण पंथक कार्यों की पूर्ति के मुख्य रखते हुए पांच सिंघों ने गुरु-रूप होकर गुरु जी को गढ़ी छोड़कर चले जाने का आदेश दिया। खालसे का हुक्म मानते हुए गुरु जी ने ताली बजाकर मुगलों को वंगार कर बाहर की ओर चल दिए। चमकौर की जंग दुनिया की सबसे असमान एवं अतुलनीय जंग थी। इस जंग का ज़िक्र करते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने औरंगज़ेब को भेजे गए जफ़रनामे में लिखा है कि भूखे-प्यासे चालीस सिंघ क्या कर सकते हैं, यदि उन पर दस लाख का लश्कर अचानक टूट पड़े।

गुरसन: चिह कारे कुनद्द चिहल नर।
कि दह लक्क बिआयद बरो बेख़बर। (ज़फ़रनामा)

इस तरह की असमान जंगों की मिसालें सिक्ख इतिहास में ही मिलती हैं। महान शहीदों का पावन खून गिरने से चमकौर की धरती साहिब बन गई। चमकौर साहिब की ऐतिहसिक जंग की याद में गुरुद्वारा कतलगढ़ साहिब, गुरुद्वारा कच्ची गढ़ी साहिब, गुरुद्वारा दमदमा साहिब, गुरुद्वारा ताड़ी साहिब, गुरुद्वारा रणजीतगढ़ साहिब सुशोभित हैं। इस महान पावन शहीदी

स्थान पर प्रत्येक वर्ष सिक्ख संगत जोड़-मेले के रूप में एकत्र होकर उन महान शहीदों को श्रद्धा और सत्कार भेंट करती है।

अल्लाह यार खां जोगी तो दुनिया के तीर्थ स्थानों से साहिबज़ादों के शहीदी स्थानों को धर्म यात्रा के लिए उच्चतम मानता है, क्योंकि ऐसी शहीदी दुनिया के इतिहास में पहले न कभी हुई और न कहीं भविष्य में कोई उम्मीद है। जोगी जी इस प्रकार लिखते हैं :

बस एक हिंद में तीरथ है यात्रा के लिए।
कटाए बाप ने बच्चे जहां ख़ुदा के लिए।

साहिबज़ादों की लामिसाल शहीदी को याद करते हुए जब अपने आस-पास दृष्टि डालते हैं तो सिक्ख कौम में आ चुकी घोर गिरावट को महसूस करते हैं तो सिर शर्म से झुक जाता है। गुरु जी ने अपने लख़्ते-जिगर साहिबज़ादों को शहीद करवाकर भारत वासियों और सिक्ख कौम को ज़िंदगी बख़्शी थी। साहिबज़ादों ने अपने शीश भेंट कर भारत के स्वाभिमान, गौरव और सभ्याचार को बचाया परंतु हम अपने और अपनी औलाद के दुनियावी सुखों, आराम, वक्ती शानो-शौकत के लिए तत्पर हैं। वो कौमें दुनिया के तख़्तों से मिट गईं जो ख़ुदगर्ज़ी के कारण अपने धार्मिक सिद्धांत, महान विरासत, इतिहास और शहीदों को अनदेखा कर के अपनी दुनियावी लालसायों को पूरा करने में गलतान हो गईं। इसके साथ ही पंथ-विरोधी शक्तियां तरह-तरह की साज़िशों और मनगढ़त कहानियां बनाकर सिक्ख-सिद्धांत, महान विरासत, शांतमयी इतिहास और मर्यादा को ठेस पहुंचाने हेतु पूरी तरह से संघर्षशील हैं। जो कि अति ख़तरनाक मामला है। हमें इस खतरे से सावधान होने की आवश्यता है। आओ! हम अपने महान सिद्धांत और विरासत के सही वारिस बनने का प्रयत्न करें और साहिबज़ादों की शहादत से शिक्षा लेते हुए इस कार्य में तन-मन से अपना-अपना योगदान डालते हुए अपना जन्म सफल करें और अपने देश-कौम के गौरव, स्वाभिमान, शान को ऊंचा एवं रौशन करें। ❂

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवि

(पृष्ठ २० का शेष)

जी का काव्य 'कड़वा गुरु गोबिंद सिंघ' कवि ब्रहम भट्ट जी की रचना 'गुरु महिमा', सुखदेव जी कवि ग्रंथ 'अध्यात्म प्रकाश' और गिरधर लाल जी का ग्रंथ 'पिंगलसार' आदि-आदि ऐसी कृतियां हैं जो श्रेष्ठ एवं आदर्श साहित्य का सुंदर एवं परिपक्व उदाहरण हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवियों में से कुछ ऐसे कवि भी थे जो गुरु जी के साहित्यिक-सांस्कृतिक उद्देश्य के साथ-साथ आध्यात्मिक एवं सामाजिक उद्देश्यों के प्रति भी समर्पित थे। ऐसे कवियों एवं विद्वानों ने न सिर्फ 'अमृत छका' और सिंघ सजे बल्कि गुरु जी द्वारा लड़े गए युद्धों में बढ़-चढ़कर हिस्सा भी लिया। कुछ ने तो शहादत भी पाई। कवि धिआन सिंघ जी और कवि किरपा सिंघ जी चमकौर के युद्ध में शहीद हुए। वहीं महां सिंघ जी श्री मुकतसर साहिब में शहीद होने वाले चालीस मुक्तों के प्रमुख थे। बंद बंद कटवा कर शहीद होने वाले भाई मनी सिंघ जी भी गुरु जी के दरबारी कवियों में से एक थे।

इस प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का 'विद्या दरबार' एक महान् सामाजिक, आध्यात्मिक एवं साहित्यिक आंदोलन था, जिसने परवर्ती पंजाब के जनमानस पर बहुत गहरी छाप छोड़ी। ❂

मैं हूं गढ़ी चमकौर की

*-स. सिमरजीत सिंघ**

हमारी नित्य प्रति की ज़िंदगी में अनेकों घटनाएं घटित होती हैं जिनका ज़िक्र हम लोगों के साथ बातों द्वारा करते हैं और ये बातें ही जब कागज़ के कोरे सीने पर उकर जाती हैं तो युगों-युगांतरों तक अमर रहने वाला इतिहास बन जाती हैं। कई बातें हमारे ज़हन में पाताल जितनी गहरी उत्तर जाती हैं। कई बातों को हम भुलाने के लिए हज़ारों कोशिशें करते हैं किंतु वो हमारी याद से अपनी मालिकी छोड़कर नहीं जातीं तथा मन में असह पीड़ा का एहसास करवाती रहती हैं। कई मधुर बातों को हम बार-बार याद करना चाहते हैं। जब चार मित्र एकत्र होते हैं वो बातें खुद-बाखुद जुबान पर आ जाती हैं तथा हम अपने मन में वैसा दोबारा होने के लिए चाहते हैं। कुछ यादें बिछुड़े मित्रों की याद दिलाती हैं। कुछ बातें महफिलों का कारण बनती हैं। इनमें से कुछ बातें ऐसी भी होती हैं जो युगों-युगांतरों तक अमर हो जाती हैं, जिनकी बातें की जाती हैं। ये पीढ़ी-दर-पीढ़ी सफर करती हुईं इतिहास को याद करवाती रहती हैं। इन बातों को बुजुर्ग अपने बच्चों के साथ सांझी करके अपने गौरवमयी इतिहास पर फख्र महसूस करते हुए बच्चों इस पर गौरव करने की जन्मघुट्टी देते रहते हैं। कई बातों के कारण ही सूनी उजाड़ पड़ी जगह पर मेले लग जाते हैं जिनसे समाज को नयी दिशा तथा शिक्षा लेने की प्रेरणा मिलती रहती है। कई बातें अरश से फर्श पर गिरा देती हैं और कई बातें फर्श से अरश पर भी पहुंचा देती हैं।

ऐसी ही एक घटना जिसकी बातें मैं आपके साथ करने लगी हूं, आज से सैंकड़े वर्ष पहले २२ दिसंबर, १७०४ ई को मेरे साथ घटित हुई किंतु मुझे ऐसे लगता है जैसे कल की ही बात हो।

हां! सच, मैं आपको अपना तारूफ़ देना तो भूल ही गई। मैं गढ़ी हूं, चमकौर की। आज संगमरमर तथा कीमती पाषाणों में जड़ित हो गई। मेरा एक ही दरवाज़ा है जो उत्तर दिशा में खुलता है। मेरी चार दीवारी पहले कच्ची मिट्टी की थी परंतु थी काफी चौड़ी। दीवारों पर छोटी-छोटी ममटियां बनी हुई थीं जो तीरंदाज़ के काम आ सकती थीं। मेरा चारों तरफ खुला मैदान था और अंदर एक छोटा-सा दो मंज़िलां कोठा भी था। मुझ कच्ची मिट्टी को यह कीमती लिबास किस तरह मिला, ये सारी बातें आज मैं आपको बताती हूं।

मेरा यह जन्म-गांव सदियों पुराना है, जिसके सबूत के रूप में आज भी रोपड़ के इस इलाके में से हड़प्पा की सभ्यता के समय की ठीकरियां, टूटे ठूठे, मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े तथा अन्य सामान टिब्बों में मिल जाता है। मेरी जन्म-भूमि चमकौर का प्रारंभ आर्य लोगों की मार से बचकर आए पहले-पहल के आदि वासियों ने किया जो यहां आकर छिपे थे परंतु जब आर्य लोगों को पता चला तो उन्होंने इसको फिर लूट लिया। दूसरी बार रामायण के जमाने

*उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; फोन : ९८१४८-९८२२३

में यवनों ने इसको फिर बसाया। फिर मुगलों के हमलों से डरते हुए राजपूत इस गांव पर आ बसे। इस तरह काफी पनाहगीरों का अड्डा मेरा गांव ही बना। इलाही योद्धा, मज़लूम तथा धर्म के रक्षक गुरु जी के चरण स्पर्श से मेरा गांव मैदाने-जंग के बाद सर्वदा के लिए अमर हो गया। सदियों के बाद इस धरती के भाग्य खुले, जब मेरा मिट्टी-गारे का कच्चा शरीर गुरु जी, दो साहिबज़ादे, पांच प्यारे तथा अन्य सिंघों के लिए ज़ालिमों की बेशुमार फौज का मुकाबला करने के लिए मोर्चा बना।

गुरु चरणों के एक स्पर्श ने ही मुझ निमानी (निर्धन) को सदा के लिए अमर कर तुच्छ से लाखों की बना दिया। मैंने अपनी आंखों से देखा तथा अपने तन पर झेला सब कुछ। दिसंबर की सर्दी की शीत रातें, ऊपर से भारी बारिश। बिजली की चमक सीने तक शीत देती थीं। पक्षी-परिंदे भी ठंड से डरते हुए वृक्षों, कोठों की खुड्डों में जहां भी उनको छिपने की जगह मिली वहीं छिपे बैठे हुए थे। ऐसे माहौल में दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी तथा साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी के साथ कुछ भूखे-प्यासे सिंघ, लाखों की संख्या में दुश्मन फौज से लड़ते हुए, विजय का नगाड़ा बजाते हुए यहां पहुंचे थे। शूरवीर सिंघों के चेहरों पर इलाही जाहो-जलाल देखते ही बनता था। माथे पर रोह के पसीने की बूंदें इस प्रकार चमक रही थीं, जैसे गुलाब के फूलों की पत्तियों पर ताजी ओस के कण हो। चेहरों पर ठाठें मारता अगमी जोश, आग की तरह लाल सुरख माथे, चिंगारियां गिरा रही रोह भरी आंखें। दुश्मन से दो हाथ करने के लिए फरकते डौले इन शूरवीरों का विलक्षण दृश्य पेश कर रहे थे। यहां आकर गुरु जी ने चारों तरफ नज़र दौड़ाई, अपनी जंगी सूझ-बूझ से हर तरफ से दुश्मन का मुकाबला करने के लिए उनकी निगाह मुझ पर पड़ी। उस समय मैं रूप चंद गरीबू/घरीबू जाट तथा उसके एक चौधरी भाई दुनी चंद/जगत सिंह/बुद्धी चंद की मलकियत थी। चौधरी अपने भाई को गरीब जानकर उसको हिस्सा बांटकर नहीं था देता। गुरु जी ने हर तरफ से सोच-विचारकर भाई दया सिंघ जी को मेरे मालिक चौधरी के पास भेजा ताकि उससे यहां रहने की आज्ञा ली जाए। किंतु चौधरी बहुत चालाक था। उसके भाई दया सिंघ को बहाना लगा दिया कि मैं इस समय खाली हाथ हूं और खाली हाथ गुरु जी के पास जाना मुझे अच्छा नहीं लगता। मुझे चौधरी पर बहुत गुस्सा आया। आज उसकी इस हरकत की वजह से मैं गुरु जी के चरण-स्पर्श से विहीन रह जाना था। किंतु भाई दया सिंघ ने चौधरी को कुछ मुहरें देकर गुरु जी पास जाने के लिए मना ही लिया। जब चौधरी गुरु जी पास गया उसने पांच मुहरें गुरु जी के समक्ष रखकर माथा टेक दिया परंतु भाई दया सिंघ जी ने जब गुरु जी के सामने उसके साथ मेरे बारे में बात की तो उसने कोरा जवाब दिया और कहा कि यह मेरी गढ़ी नहीं है; यह तो मेरा घर है, मेरा कुटंभ यहां ही रहता है, अत: मैं यह आपको नहीं दे सकता। मैं खुद को अभाग्यशाली महसूस कर रही थी कि आज गुरु जी के इतना पास होकर भी उनके चरण स्पर्श नहीं कर सकती। किंतु मेरे अच्छे कर्मों को संगत के साथ रूप चंद (गरीबू) भी गुरु जी के दर्शनों हेतु यहां पहुंच चुका था। उसने अपने भाई चौधरी की बात सुन ली थी कि उसने गुरु जी गढ़ी में आने के लिए जवाब दे दिया है। वह झट से गुरु जी आगे आ गया तथा हाथ बांधकर कहा कि महाराज यह गढ़ी आधी मेरी भी है। आप इस समय मेरे साथ चलो। यदि

चौधरी दरवाज़ा नहीं खोलेगा तो मैं अपने घर में से अंदर भेज दूंगा। गुरु जी ने सिंघों को इशारा किया और गरीबू के साथ जाकर उसके घर में से गुज़रकर गढ़ी में पहुंच गए। मैं गुरु जी के चरण स्पर्श से धन्य हो गई और मैं भी अपनी जिम्मेदारी समझ गई थी। मैंने अपनी मिट्टी की दीवारों को फौलाद की तरह तकड़ा कर लिया था। गुरु जी ने मेरा जायज़ा करके रात में ही मोर्चा बंदी कर दी। मेरी हर बाही को आठ-आठ सिंघों के सुपुर्द कर पूरी जंगी तैयारी कर ली थी।

गुरु जी ने सिंघों को मोर्चे पर डटे रहने की हिदायतें जारी कीं। सिंघों ने सर्दी से बचने के लिए अपने गीले कपड़ों को तानकर छोटे-से तंबू लगा लिए ताकि थके-मांदे महान योद्धे कुछ देर आराम कर लें। घोड़ों की काठियों पर तकिए लगाकर शूरवीर योद्धे कुछ देर के लिए आराम करने लग गए ताकि सुबह दुश्मन-फौज का डटकर मुकाबला किया जा सके। गुरु जी ने तंबू में सिंघों को देखा तथा लाड़-प्यार से उनके सिर को अपनी गोदी में रखकर प्यार किया जैसे कोई जरनैल युद्ध से पूर्व अपने शूरवीर योद्धाओं को हौसला दे रहा हो तथा आखिरी बार उनके दर्शन कर रहा हो व सोच रहा हो कि दुनिया की इस बेजोड़ (अतुलनीय) जंग में सारा भार इन नन्हें जरनैलों पर है। साहिबज़ादों के पावन मुखड़ों (चेहरों) पर बिखरी केशों के लटों को अपने पावन कर-कमलों से हटाया। नूरानी जाहो-जलाल चेहरों को देखकर आसमान ने भी शर्म खाते हुए चांद एवं सूर्य को छिपा लिया। चहुं ओर तैनात सिंघ दुश्मन की गतिविधियों पर पूरी नज़र गड़ाए बैठे थे। सारे शूरवीरों को उनके काम समझा दिए गए। भाई आलम सिंघ तथा भाई मान सिंघ को संतरी की ड्यूटी सौंपी गई। गुरु जी ने खुद, दोनों सिंघों भाई दया सिंघ व भाई संत सिंघ ने मेरी सबसे ऊपरी मंज़िल पर मोर्चा संभाल लिया। गुरु जी के प्रेम सहित सभी जुझारू सिंघों की तरफ देखा और अंतरमयी शब्दों से मुखातिब कर बोले कि यह वह स्थान है जहां हमारा इम्तिहान होना है; यह वह जगह है जहां आप शहादत के नूरानी प्याले पीओगे।

पीछे-पीछे टिड्डी दल की तरह शोर मचाती दुश्मन फौज भी आ गई और जब उनको मालूम पड़ा कि गुरु जी यहां पर हैं, उन्होंने मुझ को चारों तरफ से घेरा डाल लिया। लाखों की संख्या की फौज ने चारों तरफ हाहाकार मचा दी तथा मक्खियों की भांति शोर मचाती एकदम मुझ पर टूट पड़ी। गुरु जी इस हमले का मुकाबला करने के लिए पांच-पांच सिंघों का एक जत्था बनाकर दुश्मन का मुकाबला करने हेतु भेजना शुरू कर दिया तथा घमासान लड़ाई आरंभ हो गई। गुरु साहिब एवं सिंघों ने मोर्चों में से दुश्मनों पर तीरों की वर्षा शुरू कर दी। दुश्मन फौज के जरनैल व सिपाही दीवारों की ओट लेकर मुश्किल से अपनी जान की खैर मांगते रहे। जो भी कोई दीवार की ओट से ज़रा भी बाहर आया वह तीर खाकर वहीं मर गया। जब गुरु जी ने दुश्मन फौज के प्रसिद्ध फौजदार नाहर खां को तीर का निशाना बनाया, वह वहीं ढेरी हो गया। दुश्मन की फौज का एक जरनैल खवाज़ा जफ़र बेग पर गुरु साहिब के तीरों का इतना भय बैठ गया कि वह डरता मारा दीवार की ओट से बाहर ही न आया। दुश्मन फौज के कई पठान जरनैल बहादुरी से लड़ते भी रहे किंतु गुरु साहिब के शूरवीर योद्धाओं के सामने उनकी एक न चली। थके-मांदे एवं भूखे-प्यासे सिंघ ज़ालिमों के टिड्डी दल से बेमिसाल टक्कर लेकर शहीदी जाम पीकर सदैव के लिए अकाल पुरख की गोद में विराजमान हो रहे थे। गुरु साहिब जी ने

अपने हाथों से शाही सेना के सेनापति नाहर खां को उसके किए ज़ुल्मों की सज़ा दी। सेना नायक ख्वाज़ा मुहम्मद को घायल कर दिया। यह मुट्ठी भर शूरवीर योद्धाओं का बहुत विशाल सेना के साथ युद्ध हो रहा था।

वो समय भी मैंने अपनी आंखों से देखा जब साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी जिसकी उम्र लगभग १७ वर्ष थी, तैयार-बर-तैयार होकर अपने पिता जी से युद्ध के मैदान में जाने की आज्ञा लेने के लिए आ गए। गुरु जी ने साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी के साथ भाई आलम सिंघ को भी भेजा। भाई आलम सिंघ ऐसी बहुत-सी जंगों के नायक रहे थे। इन वीर योद्धाओं ने रण-क्षेत्र में हलचल मचा दी, अपने बरछे से पठानों को इस तरह खत्म कर दिया जैसे कोई किसान पक्की फसल काट रहा हो। अंत में उनका बरछा टूट गया तो उन्होंने अपनी कृपाण म्यान से खींच ली तथा दुश्मनों से सिर धड़ से इस तरह अलग होकर बिखर गए, जैसा कि खेत में तरबूजों की फसल को भारी फल लगा हो। जब बाबा अजीत सिंघ जी शहीद हो गए तो साहिबज़ादा बाबा जुझार सिंघ जी ने अपने बड़े भाई की तरह रण-क्षेत्र में जाने की आज्ञा मांगी। गुरु साहिब ने साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी को अपने हाथों से जंग में जाने हेतु तैयार किया वो भी अपने बड़े भाई की भांति वैरी दल को चीरते हुए बहादुर मर्दों की तरह शहादत का जाम पी गए। इस जंग में पांच प्यारों में से तीन भाई मोहकम सिंघ, भाई साहिब सिंघ व भाई हिंमत सिंघ रण-क्षेत्र में दुश्मन से जूझते रहे। एक-एक कर सभी सिदकी सिंघ अपनी कृपाण के जौहर दिखाते हुए दुश्मनों का दिल दहलाकर शहादत का जाम पीते जा रहे थे। रात होने के कारण लड़ाई बंद हो गई। इस समय मेरे पास गुरु साहिब सहित कुछेक ही सिंघ शेष थे, जो आधी रात को गुरु जी के पास बैठे थे, उन्होंने विचार करके भाई दया सिंघ की अगुवाई में पांच प्यारे चुन लिए तथा इन पांच प्यारों ने गुरु साहिब को गढ़ी छोड़कर जाने का आदेश दे दिया क्योंकि सिंघ महसूस कर रहे थे कि यदि गुरु जी इस समय शहीद हो गए तो पंथ का कोई वारिस नहीं रहेगा और सिक्खों को ऐसा गुरु मिलना मुश्किल है। गुरु साहिब जी ने थोड़ी सोच विचार करने के बाद इस आदेश को प्रवान कर लिया तथा अपने अस्त्र-शस्त्र व वस्त्र उतारकर बाबा संगत सिंघ को जिनका चेहरा-मुहरा गुरु जी से मिलता-जुलता था, पहना दिया। अपनी हीरों जड़ित कलगी उतारकर उनके सिर पर सजा दी, शायद ये सब कुछ वैरी दल की फौजों को असमंजस में डालने के लिए ही किया गया। फिर यह फैसला हुआ कि तीन सिंघ-- भाई दया सिंघ, भाई धरम सिंघ तथा भाई मान सिंघ गुरु साहिब जी का साथ देंगे अन्य सिंघ बाबा संगत सिंघ जी के साथ यहां रहेंगे।

रात के अंधेरे का लाभ लेते हुए गुरु साहिब तथा तीनों सिंघ बारी-बारी यहां से निकल गए और अलग अलग रास्ते पड़ गए। गुरु जी नगाड़े की चोट पर दुश्मन फौज को वंगारते हुए कि 'हिंद का पीर जा रहा है, आओ! पकड़ो, यदि किसी में हिम्मत है' कहकर निकल गए। दुश्मन-फौज में भगदड़ मच गई कि शायद बाहर से अन्य सिक्खों ने आकर हमला कर दिया है। इस भ्रम में रात के अंधेरे में दुश्मन-फौज आपस में ही मार-काट करने लग गई। पहु फूटने तक दुश्मन फौज ने आपस में ही अपना काफी नुकसान कर लिया था। सुबह होते ही मैंने अंदाज़ा लगाया कि दुश्मन फौजें मुझ को घेरा डालकर हमला करेगी किंतु मैंने भी अपनी कच्ची दीवारों को फौलाद की भांति मज़बूत कर डटकर

मुकाबला करने के लिए तैयार-बर-तैयार हो गई। मेरी गोद में बैठे बहादुर सिंघ-शूरवीर अपने जंगी जौहर दिखाते हुए आखिर अकाल पुरख की गोद में जा विराजमान हुए। भाई संगत सिंघ जी के शहीद होते ही दुशमन-फौज में मेले जैसा माहौल छा गया। शाही फौज जीत के नशे में नगाड़े, धौंसे बजाने लग गई किंतु यह खुशी कुछ देर ही चल सकी। जब किसी ने वज़ीर ख़ान को गुप्त सूचना दी कि जो शीश गुरु साहिब जी का समझकर औरंगज़ेब के पास भेजने की तैयारी की जा रही है वह तो शूरवीर योद्धा भाई संगत सिंघ जी का है। शाही सेना के फौजदारों के पांवों तले ज़मीन खिसक गई। इतनी बड़ी संख्या में फौज के घेरे में से किसी का निकल जाना एक करामात ही थी। झूठी कस्में खाकर गुरु जी को श्री अनंदपुर साहिब के निकालने वाले, आठ महीने श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डालकर गुरु जी पर चालाकी एवं मक्कारी से हमला करके तथा मुट्ठी भर सिक्खों को लाखों की संख्या फौज से घेरकर भी वो अपने मिशन में बुरी तरह फेल हो गई। गुरु जी को ज़िंदा पकड़ने की डींगे हाकने वाले मुंह लटकाए बैठे थे।

उनका और किसी पर ज़ोर नहीं चल रहा था तो मेरे मालिक जगत सिंघ चौधरी तथा भाई रूप चंद को गिरफ्तार कर लिया गया। चौधरी जगत सिंघ को तो खुफिया ख़बरें देने के कारण दलेर ख़ान ने छुड़वा लिया परंतु भाई रूप चंद को गुरु जी का अनन्य सेवक समझकर शहीद कर दिया गया।

वज़ीर ख़ान ने सारे इलाके में ढिंडोरा पिटवा दिया कि जो भी कोई गुरु जी को पनाह देगा उसका सारा परिवार कोल्हू में पीस दिया जाएगा और जो गुरु जी के बारे में सूचना देगा उसको मालामाल कर दिया जाएगा; जो गुरु जी को ज़िंदा गिरफ्तार करवाने में मदद करेगा, उसकी कुले तार दी जाएंगी। बादशाह से खिल्लत अलहिदा मिलेगी तथा साथ ही गुस्से में लाल-पीले हुए ने सिर पटकते हुए कस्म खाई कि वह गुरु जी को ज़िंदा पकड़कर ही सांस लेगा।

यहां पर ही एक गुप्तचर नौजवान ने वजीर ख़ान को ख़बर दी कि गुरु साहिब के छोटे साहिबज़ादे बाबा ज़ोरावर सिंघ जी, बाबा फ़तहि सिंघ जी तथा उनकी दादी माता गुजरी जी को ज़िंदा पकड़ लिया गया है। यह ख़बर सुनकर पापी वज़ीर ख़ान प्रसन्न हो गया और उस नौजवान को इनाम देकर खुश कर दिया एवं आप शीघ्र ही सरहिंद जाने का बंदोबस्त करने का एलान कर दिया।

मेरे उस कच्चे मिट्टी-गारे के शरीर को उन शूरवीर सिंघों ने अपने खून से ऐसे पक्का रंग चढ़ाया मैं आज तक सदियों का सफर तय करके भी अपना अस्तित्व संभालकर रखा हुआ है। मेरा मिट्टी-गारे का शरीर इन शूरवीरों की शहादत की बदौलत संगमरमर एवं सोने का हो गया है नहीं तो मुझ जैसी अन्य कई हवेलियां उस समय थीं; जिनका आज नामो-निशान नहीं रहा। अब भी हर वर्ष ९ पौष के दिन लाखों की संख्या में संगत उन शूरवीर सिंघों के चरण स्पर्श के कारण ही मेरे साथ नत्मस्तक होने के लिए आती हैं। ये सब उन शूरवीरों सिंघों की बहादुरी का परिणाम है।

गुरु-पुत्रों तथा गुरु साहिब जी के चरण-स्पर्श से ही मुझ कच्ची को इतना बड़ा मरतबा प्राप्त हुआ कि आज मेरे सामने दुनिया के बड़े-बड़े किले भी तुच्छ लगते हैं। लोग मुझे झुककर स्लाम करते हैं। मेरा दर्जा फर्श से अरश तक का बुलंद हो गया है। ☸

साका सरहिंद
छोटे साहिबज़ादों एवं माता गुजरी जी की अद्वितीय शहादत

*-स. जसविंदर सिंघ**

सरहिंद के शहीदी साके की गौरवगाथा का एक-एक अक्षर इस बात का साक्षी है कि जुल्म के सामने शीश झुकाना गौरवशाली लोगों का काम नहीं और साथ ही यह इस बात का प्रतीक है कि मृत्यु को उम्र मापने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती जब कोई शहादत सोए हुए लोगों को जगाने के लिए अथवा जुल्मी तख़्तों-ताजों को हिलाने के लिए हुई हो।

सिक्ख धर्म में शहादत की परंपरा के आगाज़ का प्रमाण श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चारण की पावन बाणी के इन वचनों से मिल जाता है :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने हक-सच, स्वाभिमान, धर्म की रक्षा व अन्याय के विरुद्ध शहादत देकर इस गौरवमयी परंपरा को आगे बढ़ाया। छठम् पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने अन्याय एवं ज़ब्र के विरुद्ध अनेकों युद्ध लड़े। नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने धर्म की रक्षा व जुल्मी राज्य के तख़्तों-ताजों को हिलाने हेतु अपनी पावन कुर्बानी दी। दशम् पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सोई हुई व सांस-सत्यहीन हो चुकी जनमानस को जगाने हेतु तथा गुरु-पंथ व धर्म हेतु अपनी पूरी ज़िंदगी तथा समूचा परिवार लगा दिया।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चारों साहिबज़ादों ने जो अद्वितीय व लासानी शहादत प्राप्त कीं, उनकी उदाहरण विश्व भर के समस्त इतिहास में कहीं नहीं मिलती। इस निबंध में माता गुजरी जी तथा दशम पातशाह जी के छोटे साहिबज़ादों बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी की अद्वितीय शहादत का कुछेक अंश मात्र वर्णन करने का प्रयास किया गया है; जिन्होंने सरहिंद में बेमिसाल एवं बड़ा साका किया और इतिहास में एक नवीन व विलक्षण प्रकाश स्तंभ स्थापित कर दिया।

साहिबज़ादा बाबा ज़ोरावर सिंघ जी का जन्म नवंबर, १६९६ ई. तथा साहिबज़ादा बाबा फ़तहि सिंघ जी का जन्म फरवरी, १६९९ ई. को श्री अनंदपुर साहिब में हुआ। आरंभ से ही आप जी होनहार, तीक्षण बुद्धि के मालिक, निडर व धार्मिक रंगत वाले थे।

धीरे-धीरे समय के हालात ने करवट बदली, श्री अनंदपुर साहिब में हालात कुछ बदले क्योंकि गुरु-घर की परंपरा के अनुसार गुरु कलगीधर पातशाह जी ने भी हक-सच व न्याय के लिए और जुल्मी राज्य को खत्म करने के संकल्प को और आगे बढ़ाने हेतु ज़ोरदार नारा लगाया। इसी कारण ही अत्याचारी एवं अन्यायकारी मुगल राज्य-प्रबंध को तौखला खड़ा हुआ, जिसने अपनी समझ व करूर चालाकियों का प्रयोग करते हुए गुरु-मिशन को तार-तार करने की हर कोशिश की किंतु यह मुगल राज्य-प्रबंध अपने ही

५६-ए, श्री दरबार साहिब कालौनी, सुलतानविंड रोड़, श्री अमृतसर।

बनाए मक्कड़जाल में उलझकर खुद एक दिन खत्म हो गया। ऐसे हालात को मद्देनज़र रखते हुए दशम् पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने २० दिसंबर, १७०४ ई को श्री अनंदपुर साहिब का किला खाली कर दिया था। श्री अनंदपुर साहिब छोड़ते समय गुरु पातशाह जी के साथ कुछेक ही सिंघ थे। जब सरसा नदी पार करने लगे उस समय नदी पूरे उफ़ान पर थी। दूसरा मुगल फौजें तथा पहाड़ी राजाओं ने सारी झूठी कस्में तोड़कर गुरु पातशाह जी व सिंघों पर मिलकर ज़ोरदार हमला कर दिया। घमासान युद्ध हुआ। गुरु जी के अनेकों सिंघ तथा अनमोल खज़ाना इस युद्ध व नदी की भेंट चढ़ गए। इस अफरा-तफरी में माता गुजरी जी व छोटे साहिबज़ादे गुरु पातशाह जी के जत्थे से बिखर गए। बस फिर क्या था? इम्तिहान की घड़ी का समय आ गया।

गुरु-घर में लंगर-पानी की सेवा करने वाला गंगू पता नहीं किस ढंग से माता जी तथा साहिबजादों को मिला। उसने माता जी को कहा कि संकटमयी समय है, आप जी मेरे घर ठिकाना कर लो। वह अपने गांव सहेड़ी (खेड़ी) में माता जी तथा दोनों छोटे साहिबज़ादों को ले गया। जब गंगू को पता चला कि माता जी के पास सोने की मुहरों वाली थैली है तो लालचवश होकर उसकी नीयत बेईमान हो गई तथा उसने रात को माता जी व साहिबज़ादों को सोए हुए देखकर मुहरों वाली थैली चुरा ली। सुबह माता जी के पूछने पर उल्टा कहने लगा मैं कोई चोर हूं! एक तो मैंने आपको ठहरने के लिए स्थान दिया और दूसरा आप मुझ पर इल्ज़ाम लगाते हो। गंगू को बहाना मिल गया। उसने मोरिंडे के रंघड़ कोतवाल को बुलाकर माता जी व साहिबज़ादों को गिरफ्तार करवा दिया। मोरिंडे के कोतवाल ने उनको २३ दिसंबर, १७०४ ई को सरहिंद के नवाब वज़ीर खां के हवाले कर दिया। सरहिंद के नवाब ने इन तीनों को इतनी सर्दी के दिनों में ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया। इस कैद के दौरान माता गुजरी जी अपने लाड़ले पोतों बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी को समझा रही थी कि बच्चो! अपने दादा जी की सफेद दसतार पर दाग न लगने देना चाहे तुम्हारा शीश कट जाए। दादी मां की शिक्षा को समझते हुए साहिबज़ादों ने कहा कि हम सिर देकर सिक्खी सिदक को बचाएंगे।

२४ दिसंबर, १७०४ ई. का दिन आया। ठंडे बुर्ज में दोनों साहिबज़ादों को लेने के लिए सिपाही आए। साहिबज़ादों को वज़ीर ख़ान की कचहरी में पेश किया गया। दोनों शूरवीरों ने कचहरी में खड़े होकर बुलंद आवाज़ में "वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फ़तहि" बुलाई। यह देख-सुनकर सूबा सरहिंद कांप उठा। सूबे ने साहिबज़ादों को धर्म से डगमगाने के लाखों प्रयत्न किए, कई तरह के लालची सब्ज़बाग भी दिखाए कि किसी भी तरह वो अपना धर्म छोड़कर इस्लाम धर्म कबूल कर लें। साहिबज़ादों व सूबा सरहिंद के मध्य हुई वार्तालाप को 'सूरज प्रकाश' में कवि भाई संतोख सिंघ जी ने इस तरह कलमबंद किया है :

साहिबजादिओ पिता तुहारा।
गढ चमकौर घेर गहि मारा।
तहि तुमरे दै भ्रात प्रहारे।
संगी सिंघ सकल सो मारे।

सूबे की बात सुनकर निडर व निर्भय साहिबज़ादों ने जवाब दिया कि हमें तो अकाल पुरख के आश्रय की ज़रूरत है, अन्य कोई आश्रय नहीं चाहिए :

स्री सतिगुरू जो पिता हमारा।
जग महिं कौन सके तिंह मारा।
जिस आकाश को किआ कोई मारहि।

कौन अंधेरी को निरवारहि।

सूबे को जब कोई बात बनती नज़र न आई तो उसने साहिबज़ादों को भूखे-प्यासे ही ठंडे बुर्ज में बंद करने का हुक्म सुनाकर कचहरी बर्ख़ास्त कर दी तथा अगले दिन फिर कचहरी में पेश करने के लिए कहा।

अगले दिन २५ दिसंबर, १७०४ ई. को कचहरी में फिर कई लालच दिए गए। इस्लाम कबूल करने के लिए प्रेरित किया गया। साहिबज़ादों के न मानने पर काजी को फतवा सुनाने को कहा गया किंतु उसने बताया कि इस्लाम के अनुसार बच्चों एवं बुज़ुर्गों के किए कोई फतवा नहीं चढ़ाया जा सकता। पास बैठे सुच्चा नंद ने सूबा सरहिंद को खूब भड़काया तथा साहिबज़ादों के विरुद्ध फतवा सुनाने को उकसाया। गुरु पातशाह जी के मासूम बच्चों को अनेक तरह से डराया, धमकाया गया किंतु उन्होंने आगे से उत्तर दिया, "हम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के शेर बच्चे हैं, शेरों की तरह किसी से नहीं डरते, हमें सिक्खी अपनी जान से प्यारी है। हम इस्लाम कबूल नहीं करेंगे।"

२६ दिसंबर, १७०४ ई को साहिबज़ादों को फिर सूबा सरहिंद की कचहरी में पेश किया गया। सुबह होते ही सिपाही साहिबज़ादों को लेने के लिए आए। दादी मां माता गुजरी जी अपने लाड़ले पोतों को तैयार करती है तथा लाड़-प्यार करती है। इस जुदाई के पलों को बहुत ही मर्मभेद्दी शब्दों में प्रसिद्ध कवि अल्हा यार खां जोगी ने शहीदानि-वफा में इस तरह अंकित किया है :

जाने से पहले आओ गले से लगा तो लूं।
केसों को कंघी कर दूं, ज़रा मूंह धुला तो लूं।
प्यारे सरों पे नन्ही सी कलगी सजा तो लूं।
मरने से पहले तुम को दूल्हा बना तो लूं।

कचहरी में साहिबज़ादों को डराने, धमकाने व लालच देने का फिर वही नाटक दोहराया गया। गुरु पातशाह जी के प्यारे-लाड़ले सपूत अपने धर्म पर दृढ़ रहे। कचहरी में बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी ने गरजकर कहा :

साहिबजादिआं गज्ज के किहा सूबे, परबत दाबिआं नाल नहीं हल्ल जांदे।
पुत्तर होण जो शेर बब्बरां दे, कदे भेडां विच नहीं रल जांदे।

उस समय कचहरी में सूबा सरहिंद के सारे अमीर-वज़ीर व सलाहकार हाज़िर थे। वहां पर मलेरकोटले का नवाब शेर मुहम्मद ख़ान भी हाज़िर था। उसको कहा गया कि इनके बाप ने तेरे भाई को मार दिया था, तुम इन बच्चों को मारकर अपने भाई का बदला ले सकते हो किंतु नवाब शेर मुहम्मद ख़ान ने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया बल्कि 'हाअ का नारा' मारकर कचहरी में से यह कहता हुआ उठकर बाहर आ गया :

बदला ही लेना होगा तो लेंगे बाप से।
महफूज रक्खे हम को खुदा ऐसे पाप से।

किंतु दूसरी तरफ दीवान सुच्चा नंद ने जलती पर तेल डालते हुए सूबा सरहिंद को भड़काया कि सांप के बच्चे सपोलिए (सांप) ही होते हैं, इनको जल्द से जल्द ख़त्म किया जाए। इधर ये छोटे साहिबज़ादे कचहरी में किस प्रकार खड़े है तथा किस तरह इन्होंने उस समय के हालात का सामना किया, इसका चित्रण कवि अल्हा यार खां जोगी ने इस तरह किया है :

हाथों में हाथ डाल के दोनों वह नौनिहाल।
कहते हुए ज़बा से बढ़े सति स्री अकाल।
चिहरों पः गम का नाम नः था और नः था मलाल।
जा ठहरे सर पः मौत के फिर भी नः था

ख़याल।

दशम् पातशाह जी के ये फरज़ंद सूबे के हर सवाल का गरजकर जवाब देते रहे। दीवान सुच्चा नंद तथा सूबा सरहिंद वज़ीर खां ने काजी से दबाव डालकर साहिबज़ादों के विरुद्ध फतवा जारी करवा दिया कि ये बच्चे बगावत के लिए तुले हुए हैं, इस लिए इनको ज़िंदा दीवार में चिनकर शहीद किया जाए।

बस फिर क्या था? वह अंतिम घड़ी आ गई, जब साहिबज़ादों को ज़िंदा दीवार में चिनवा दिया गया। दीवार अभी छाती तक पहुंची थी कि ईंटों का यह ढांचा गिर गया। साहिबज़ादों को बेहोशी की हालत में ही जेल भेज दिया गया। २७ दिसंबर, १७०४ ई को इस्लाम धारण करने के लिए लगाई रट पुन: दोहराई गई किंतु साहिबज़ादों ने सिक्खी सिदक पर दृढ़ रहने का प्रण दोहराया। सूबा सरहिंद ने अपना आखिरी फैसला सुनाया कि इन बच्चों के सिर कलम कर दिए जाएं। शासल बेग व बाशल बेग नामक दो जल्लाद भाइयों ने साहिबज़ादों के सिर कलम कर उनको शहीद कर दिया। इस तथ्य की पुष्टि ज्ञानी ज्ञान सिंघ ने 'पंथ प्रकाश' में की है :

सासल बेग अर बाशल बेग।
उभै जलादन खिच कै तेग।
तिसदी ठौर खरिओ के सीस।
तुरत उतारे दुसटै रीस।

इस तरह दशम् पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे साहिबज़ादों बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी की पावन शहादत हुई। इन मासूम बच्चों की शहादत की ख़बर सुनकर चारों तरफ हाहाकार मच गई। यह ख़बर माता गुजरी जी पास भी पहुंची। माता जी वृद्ध अवस्था में सब कुछ सहन करते हुए परमात्मा को याद करते हुए परलोक गमन कर गए।

माता गुजरी जी तथा दोनों छोटे साहिबज़ादों के अंतिम संस्कार के लिए दीवान टोडर मल्ल ने सूबा सरहिंद के आगे सोने की मुहरें खड़ी दिशा में बिछाकर उतनी धरती मूल्य खरीदी जितनी अंतिम संस्कार के लिए आवश्यक थी। सिक्खी की अनमोल रूहों के पावन शरीर के अंतिम संस्कार के लिए इस दुनिया में सबसे महंगी धरती खरीदी गई जबकि उस समय दिल्ली के मुगल बादशाह औरंगज़ेब को अपनी अंतिम रस्म के लिए सिर्फ ४ आने १२ पैसे में तैयार हुई कच्ची कब्र ही नसीब हुई। २७ दिसंबर, १७०४ ई की शाम को इन तीनों गुरमुख, निर्भय व निरवैर रूहों के पावन शरीरों का अंतिम संस्कार किया गया। उस पावन स्थान पर आजकल गुरुद्वारा जोती सरूप साहिब सुशोभित है।

२१ दिसंबर से २७ दिसंबर तक सात दिनों के थोड़े अरसे में माता गुजरी जी तथा उसके लाड़ले पोते बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी एक ऐसा इतिहास सृजित कर गए जो सिक्ख इतिहास के सुनहरी पन्नों का शृंगार बन गया। बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी की शहादत हम सबको सुचेत करती है कि धर्म का किसी भी कीमत पर किसी से सौदा नहीं करना। सिक्खी बहुत ही अमोलक दात है। वह इन्सान ही इस संसार के बड़े से बड़े लालच को ठुकरा सकता है जिसने सिक्खी की ऐसी जुल्म विरोधी शहादतों को समझते हुए सिक्खी धारण की हो।

छोटे साहिबज़ादों की अद्वितीय शहादत हमारी नौजवान पीढ़ी को हमेशा सच-धर्म के साथ जुड़ने तथा अनेकों शहादतें देकर सृजित खालसा-पंथ के प्रति सव-समर्पण की भावना कायम रखने के लिए प्रकाश-स्तंभ का काम करती आ रही है और सर्वदा करती रहेगी। ❁

बाबा जीवन सिंघ जी

*-स. गुरप्रीत सिंघ 'भोमा'**

सिक्ख इतिहास की सबसे बड़ी गौरवगाथा है कि इस कौम के असंख्य शूरवीर शहीदों ने सिक्खी के पौधे को अपने पावन रक्त से सींचा है। इस कौम के बहादुर सिंघों ने हक-सच के लिए ज़ब्र-जुल्म, अत्याचार, झूठ-फरेब, अन्याय पाप-पाखंड आदि सामाजिक बुराइयों का डटकर विरोध किया। जो सत्ता धारक उक्त ढंगों को अपनाकर जनसाधारण को भयभीत कर, गुलामी की जंज़ीरों में जकड़कर बद से बदतर जीवन व्यतीत करने को विवश कर रहे थे, इन्होंने उनका जमकर मुकाबला किया। सिंघों को बहादुरी एवं वीरता की यह जन्मघुट्टी सिक्ख पंथ के प्रर्वत्तक श्री गुरु नानक साहिब से मिली है। गुरु साहिब ने सिक्खों को हक-सच की खातिर जान हथेली पर रखकर आने का पावन आदेश *"पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥"* दिया है। सिक्ख इतिहास असंख्य बहादुरी एवं वीरता भरपूर घटनाओं से भरा पड़ा है। असंख्य सिंघों ने विश्व में आश्चर्यजनक कौतुक कर दिखाए हैं। इन सिंघों में ही से एक बहादुर एवं निडर योद्धा हुए हैं-- भाई जैता जी उर्फ़ बाबा जीवन सिंघ जी।

भाई जैता जी के जन्म एवं जन्म-भूमि के बारे में भिन्न-भिन्न विद्वान एवं इतिहासकार एकमत नहीं हैं। लेकिन फिर भी इन भिन्न-भिन्न तथ्यों व घटनाओं से सही जानकारी मिल जाती है। अलग-अलग विद्वानों के अनुसार भाई जैता जी का जन्म २ सितंबर, १६६१ ई को पिता सदा नंद जी के घर और माता बीबी लाजवंती उर्फ़ प्रेमो जी की कोख से गांव गग्गोमाहल, रमदास में हुआ। कुछ विद्वान आप जी का जन्म पटना साहिब में हुआ लिखते हैं जो कि ऐतिहासिक कसौटी पर खरा नहीं उतरता। आप जी के पूर्वज़ पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुरु-घर से जुड़े रहे और गुरु-घर की सेवा करते रहे। आप जी के पिता भाई सदा नंद जी नवम् पातशाह के अनन्य श्रद्धालु सिक्ख थे। नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने ही भाई सदा नंद जी की शादी गुरु-घर के श्रद्धालु सिक्ख शिव नारायण की सुपुत्री बीबी लाजवंती उर्फ़ प्रेमो जी से करवाई थी। गुरु-घर के साथ घनिष्ठ सम्बंध एवं सेवा-भावना के कारण भाई जैता जी का पालण-पोषण गुरमति के अनुसार ही हुआ। बचपन से ही आप जी पर आध्यात्मिक रंग चढ़ने लगा। सांसारिक एवं आध्यात्मिक विद्या के साथ-साथ उस समय की लाज़मी विद्या शस्त्र-विद्या जैसे, घुड़सवारी, तीरंदाज़ी, अच्छे निशानची, तलवारबाज़ी में भी निपुणता हासिल की। आप जी की विलक्षणता यह थी कि आप जी दोनों हाथों में तलवारें पकड़कर एक साथ तलवारबाज़ी करने का हुनर रखते थे। आप जी दो बंदूकों नागनी एवं बाघनी के धनी थे। शस्त्र-विद्या में निपुण एवं प्रवीण होने के कारण आप जी की ख्याति दूर-दूर तक फैलने लगी।

जुल्म की इंतहा यहां तक बढ़ गई कि नवम् पातशाह को इस्लाम कबूल करने के लिए

**गांव भोमा, डाक: वडाला, वीरम, ज़िला : श्री अमृतसर, फोन : ९८७८५५८८५१*

कई तरह के भहकावे, धमकियां दी गईं। किंतु गुरु जी अडोल एवं शांत रहकर प्रभु-भक्ति में लीन रहे। हकूमत अपना हर हथकंडा अजमाकर अक चुकी थी तो ढिंढोरा पिटवा दिया कि गुरु जी को कल दिल्ली के चांदनी चौंक में कत्ल कर दिया जाएगा। भाई मती दास जी, भाई सती दास जी एवं भाई दिआला जी के पश्चात ११ नवंबर, १६७५ ई को घोर यातनाएं देते हुए गुरु जी को शहीद कर दिया गया। हकूमत ने एलान कर दिया कि जो भी गुरु जी के शीश एवं धड़ को उठाने के लिए आएगा, उसका भी यही हश्र किया जाएगा। मुगलीय हकूमत ने सख़्त पहरा लगा दिया। लेकिन गुरु के सिक्ख मुसीबतों एवं मृत्यु से कब डरते हैं? भाई जैता जी, भाई तुलसी जी, भाई आज्ञा राम जी, भाई ऊदा जी आदि सिक्खों ने भाई लक्खी शाह बनजारा के साथ सलाह-मश्विरा किया। अंधेरी रात एवं आंधी का लाभ लेते हुए बड़ी तीव्रता से सिपाहियों की आंखों में धूल झोंकते हुए भाई जैता जी ने गुरु जी का पावन शीश उठा लिया एवं भाई लक्खी शाह जी गुरु जी के पावन धड़ को बैलगाड़ी में रखकर अपने घर ले गए। भाई लक्खी शाह जी ने गुरु जी के पावन धड़ के अंतिम संस्कार हेतु अपने घर को स्वयं ही आग लगा दी। यहां पर आजकल गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब सुशोभित है।

उधर भाई जैता जी भी पावन शीश को साफ कपड़े में लपेटकर निडरता एवं दिलेरी सहित मुश्किलों का सामना करते हुए ले जा रहे थे। लंबा एवं विकट रास्ता, जगह-जगह पर दहशत का माहौल, कहीं पर भी हमला हो सकता था। भाई जैता जी गुरु जी का पावन शीश लेकर बागपत, तरावड़ी, अंबाला, नाभा आदि जगह पर ठहराव करते हुए लंबा सफर पैदल तय कर श्री अनंदपुर साहिब पहुंच गए। दशम पातशाह जी ने पावन शीश के दर्शन किए और भाई जैता जी ने गुरु जी को सारी गाथा सुनाई। गुरु जी ने भाई जैता जी को छाती से लगाकर 'रंघरेटा, गुरु का बेटा' का खिताब दिया। यहां पर ही गुरु जी के पावन शीश का अंतिम संस्कार किया गया, इस जगह पर आजकल गुरुद्वारा सीस गंज साहिब सुशोभित है। इस मार्मिक घटना के बाद भाई जैता जी गुरु-घर में ही रहे।

दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ३० मार्च, १६९९ ई. को श्री अनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की सृजना की। भाई जैता जी पांच प्यारों के हाथों से अमृत पान कर भाई जीवन सिंघ बन गए। मुगल खालसा पंथ की सृजना को अपनी राजसी सत्ता के लिए खतरा भांपकर गुरु जी के और भी घोर शत्रु बन गए। बाईधार के राजाओं, मुगलों, शासकों ने एकजुट होकर गुरु जी के साथ कई युद्ध किए, जिनमें भाई जीवन सिंघ जी ने खूब बहादुरी एवं वीरता के जौहर दिखाए।

बाबा जीवन सिंघ जी के जीवन से जुड़ी बस्सी पठाणां, ज़िला होशियारपुर की जंग की घटना बहुत प्रसिद्ध है। बस्सी पठाणां का ज़ालिम पठान एक गरीब ब्राह्मण की नव-विवाहिता को ज़बरन उठाकर ले गया। उस गरीब ब्राह्मण ने दशम पातशाह जी के पास मदद हेतु गुहार लगाई। गुरु जी ने साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी को ब्राह्मण की मदद हेतु हुक्म दिया। इस युद्ध में बाबा अजीत सिंघ जी के साथ बाबा जीवन सिंघ भी थे। साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी एवं भाई जीवन सिंघ जी ने बड़ी वीरता से पठानों का मुकाबला कर शीघ्र ही गरीब ब्राह्मण की पत्नी को वापिस लाकर

उसके हवाले कर दिया।

बाबा जीवन सिंघ जी ने भंगाणी की जंग, नादौण की जंग, बजरूड़ की जंग, निरमोहगढ़ की जंग, श्री अनंदपुर साहिब की चारों जंगों में हिस्सा लिया और अंतिम जंग सरसा की जंग में भी पूरी वीरता एवं बहादुरी दिखाई। यहां पर दुश्मनों ने लाखों की संख्या में आकर सिंघों पर हमला कर दिया। भूखे, प्यासे अति सर्दी में अंधेरी रात को सिंघों ने भी दुश्मनों का डटकर मुकाबला किया। सरसा के किनारे ही काफी सिंघों सहित भाई उदै सिंघ शहीद हो गए और साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी दुश्मनों के घेरे में आ गए। लेकिन शीघ्र ही भाई जीवन सिंघ जी बाबा अजीत सिंघ जी को घेरे से निकालने हेतु आ गए। उन्होंने घोड़े की लगाम मुंह में डालकर दोनों हाथों में तेगें पकड़कर ऐसे जौहर दिखाए कि चहुं ओर लाशों के अंबार लगा दिए। यह देखकर दुश्मन सेना भयभीत होने लगी। इस तरह दुश्मनों का सफाया करते हुए बाबा जीवन सिंघ जी घेरे में से बाबा अजीत सिंघ जी को सही सलामत निकाल लाने में सफल हुए। यहां पर ही आप जी ने दुश्मनों से लोहा लेते हुए शहादत प्राप्त की। ❁

कविता

प्रभु का हुक्म

उसके हुक्म बिन, पत्ता हिल सकता नहीं।
उसके हुक्म बिन, फूल कोई खिल सकता नहीं।
उसके हुक्म बिन, सूरज भी तप सकता नहीं।
उसके हुक्म बिन, चांद चांदनी छिटकता नहीं।
उसके हुक्म बिन, सितारे कभी चमकते नहीं।
उसके हुक्म बिन, झरने भी झर सकते नहीं।
उसके हुक्म बिन, नदियां बह सकती नहीं।
उसके हुक्म बिन, धरती भार सह सकती नहीं।
उसके हुक्म बिन, पर्वत स्थिर रह सकते नहीं।
उसके हुक्म बिन, बादल कभी बरसते नहीं।
उसके हुक्म बिन, सागर में लहरें उठती नहीं।
उसके हुक्म बिन, कोयल कभी कुहुकती नहीं।
उसके हुक्म में, चारों खाणियों के जीव हैं।
उसके हुक्म में ही, फल-फूल और बीज हैं।
उसके हुक्म में, छः ऋतुएं, बारह मास हैं।
उसके हुक्म में ही, हमारे श्वास और ग्रास हैं।
उसके हुक्म में ही, साजों में आवाज़ है।
उसके हुक्म में ही, राजों में राज़ है।
उसके हुक्म में तो, सफल हर सांस है।
उसके हुक्म में तो, जीवन संवरने की आस है।

-डॉ मनजीत कौर, २/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

भाई संगत सिंघ जी

-प्रि संतोख सिंघ

सिक्ख इतिहास कुर्बानियों का इतिहास है, जिसका अध्ययन करने वाले एक पादरी ने ठीक ही कहा है कि सिक्खों के इतिहास में अनगिनत ईसा हैं जो अपने धर्म, अपने इतिहास के लिए ही नहीं, दूसरों के धर्म, इतिहास के प्रति भी हंस-हंसकर सूली पर चढ़ते रहे। ऐसी कुर्बानी वाले एक शूरवीर सिंघ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय भाई संगत सिंघ जी हुए हैं।

भाई संगत सिंघ जी के जन्म, जन्म-भूमि और माता-पिता के सम्बंध में कोई ठोस जानकारी नहीं मिलती। इनके बारे में इतिहासकार एकमत नहीं हैं। अलग-अलग लोगों की अलग-अलग राए है। स. गुरबचन सिंघ पंनवा इनका जन्म फगवाड़ा के पास गांव खेड़ी (सपरौड़ का थेह), ज़िला कपूरथला के निवासी भाई रणीआं के घर बीबी अमरो की कोख से कलगीधर पातशाह जी के जन्म से चार महीने बाद पटना साहिब (बिहार) में हुआ बताते हैं। स. गुरबख़्श सिंघ राही इनका जन्म फरवरी, १६६७ ई. लिखते हैं, जब कि स. नरंजन सिंघ साथी भाई संगत सिंघ जी को दशमेश पिता जी के हम उम्र और हम शक्ल बताते हुए उनको नूरपुर बेदी ज़िला रोपड़ के पास गांव कट्टा सबौर का निवासी लिखते हैं। साथी जी के अनुसार सन् १७०० ई. में बंसाली से वापिस आते हुए गुरु जी के गांव कट्टा सबौर चरण डालने गए तो भाई संगत सिंघ पहली बार गुरु जी से मिले और उनके साथ ही चल दिए।

'जीवन दर्पण भाई संगत सिंघ जी' के मुताबिक भाई साहिब का जन्म श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म से एक दिन बाद २३ दिसंबर, १६६६ ई. को पटना साहिब में हुआ। इस तरह वह दशमेश पिता जी के हम उम्र थे। उनकी शक्ल-सूरत, रंग-रूप, डील-डौल गुरु जी के साथ मिलते-जुलते थे। इस मौके-मिलाप ने इतिहास में बढ़ी अहम भूमिका अदा की। भाई साहिब का प्रारंभिक नाम भाई संगता था।

भाई संगत सिंघ जी के पिता जी का नाम भाई सदा नंद और माता जी का नाम बीबी प्रेमो जी था। इनके पूर्वज़ श्री गुरु नानक साहिब के समय ही गुरु-घर की सेवा में रहे। भाई सदा नंद जी भी गुरुआई मिलने से पहले श्री गुरु तेग बहादर जी की हजूरी में बाबा बकाला में रहते थे। सिक्खी के प्रचार हेतु पूरब की यात्रा के समय भाई सदा नंद जी गुरु जी के साथ गए थे और गुरु-परिवार की सेवा के लिए पटना साहिब में रुक गए थे।

श्री गुरु तेग बहादर जी परिवार को मामा क्रिपाल चंद जी की देख-रेख में पटना साहिब में रुकने का हुक्म देकर आप जी पंजाब चले आए थे। बाल गोबिंद राए जी ६ वर्ष पटना साहिब में रहे। भाई संगत सिंघ जी बचपन में बाल गोबिंद राए जी के साथ खेलते रहे।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का हुक्म पाकर मामा क्रिपाल चंद जी गुरु-परिवार को लेकर मार्च, १६७३ ई. में श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे। भाई सदा नंद जी भी साथ ही श्री अनंदपुर साहिब आ गए। गुरु जी के हुक्म से बाल साहिबज़ादा गोबिंद राए जी और भाई संगता जी की घुड़सवारी एवं शस्त्र-विद्या की

सिखलाई का एक साथ प्रबंध किया गया।

दो सौ वर्ष पहले श्री गुरु नानक देव जी ने भरी बिरादरी में जनेऊ की रीति को ठुकरा दिया था। इस तिलक जनेऊ को गुरु साहिब खुद नहीं मानते थे, कश्मीरी पंडितों की फरियाद से श्री गुरु तेग बहादर जी ने सन् १६७५ ई. में उसी तिलक जनेऊ की रक्षा के लिए शहादत देकर बलिदान की विलक्षण मिसाल कायम की। सख़्त पहरेदारी के होते हुए भी भाई जैता जी ने अपनी जान जोख़िम में डाल कर सतिगुर जी का पावन शीश श्री अनंदपुर साहिब (पंजाब) पहुंचाया तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई जैता जी को अपनी छाती से लगाते हुए "रंघरेटा गुरु का बेटा" कहकर सम्मान सहित निवाजित किया।

भाई जैता जी तथा भाई संगता जी युद्ध-विद्या में निपुण दशमेश पिता जी के साथ रहकर ज़ब्र-जुल्म के विरुद्ध जंगों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अमृत-पान करने के उपरांत इनके नाम भाई जीवन सिंघ और भाई संगत सिंघ हो गए। किला अनंदगढ़ के लंबे घेरे के दौरान दोनों भाई गुरिल्ला दांव-पेचों द्वारा दुश्मनों का घेरा तोड़कर सिंघों के लिए रसद (भोजन सामग्री) और घोड़े के लिए चारा लाते रहे। सरसा नदी के किनारे हुए युद्ध में खूब डटकर लड़े और दुश्मनों में भी अपने वीरता का लोहा मनवाया भाई जीवन सिंघ जी शहीद हो गए। जब सिंघों का जत्था नदी पार कर गया तो भाई संगत सिंघ जी चौदह हाथों की जान-छाली लगाकर गुरु जी के साथ जा मिले।

२२ दिसंबर, १७०४ ई. को दुनिया के इतिहास में गिनती के हिसाब से अतुलनीय जंग के समय चमकौर साहिब की कच्ची गढ़ी में दस लाख मुगल फौजों के मुकाबले बड़े साहिबज़ादों और पांच प्यारों सहित लगभग चालीस सिंघ थे। संध्या काल तक पच्चीस सिंघ, तीन प्यारे और दोनों बड़े साहिबज़ादे शहीद हो गए। बड़े साहिबज़ादों के शहीद होने पर दशमेश पिता जी ने अकाल पुरख का शुक्राना किया कि उनकी अमानत अदा हुई।

बाद में जब राए कोट (जटपुरा) के चौधरी राए की तरफ से भेजे हरकारे नूरे माही ने आकर वज़ीर खां नवाब सरहिंद द्वारा लालच, डरावे का असर न होते देख छोटे साहिबज़दों को तसीहे दे; दीवारों में चिनवाकर शहीद करने और माता गुजरी जी की शहीदी की ख़बर सुनाई तो सुनने वालों की आंखों से आंसू बहने लगे परंतु शांत चित्त बैठे दशमेश-पिता जी के हृदय से रत्ती भर शिकवा नहीं था। बल्कि आप जी ने साहिबज़ादों और माता जी को धर्म की खातिर दृढ़ता के साथ घोर तसीहे सहने की शक्ति देने के लिए अकाल पुरख का शुक्राना किया। इन दोनों मौकों पर गुरु साहिब को चढ़दी कला और नूरानी चेहरे से विगास भरी आभा सम्बंधी अल्लाह यार खां जोगी लिखते हैं :

कटवा के पिसर चार, इक आंसू ना बहाइआ।
रुतबा गुरू गोबिंद ने ऋषियों का बढ़ाइआ।

रात हो गई। जंग बंद हो गई। गढ़ी में बाकी रह गए कुछेक सिंघ गुरु जी की सलामती के बारे में बड़े फिक्रमंद थे। अतुलनीय लड़ाई के अंत को भांपते सिंघ दिन में भी गुरु साहिब आगे विनती कर चुके थे कि गुरु जी साहिबज़ादों को लेकर निकल जाएं। गुरु जी ने आगे से फरमाया था। 'आप किन साहिबज़ादों की बात करते हो? आप सारे भी तो मेरे साहिबज़ादे हो।' अगले दिन फिर सिंघ गुरु जी को गढ़ी छोड़ जाने के लिए कह रहे थे, किंतु गुरु जी नहीं मान रहे थे। आखिर भाई दया सिंघ के सुझाव-से सिंघों ने अपने बीच से पांच प्यारे चुन कर

गुरमता किया और गुरु जी को पंथ का हुक्म सुनाया कि वह गढ़ी में से निकल कर किसी सलामती वाली जगह चले जाएं। सन् १६९९ ई. में 'आपे गुरु चेला' बनने वाले गुरु जी को पंथ का हुक्म मानना पड़ा।

दशमेश पिता जी पंथ के हुक्म आगे सिर झुकाते हुए गढ़ी छोड़ जाने के लिए तैयार हो गए। उन्होंने गुरु जी को तीन सिंघों के साथ जाने की सारी योजना बताई। गुरु जी ने अपने साथ मिलते-जुलते स्वरूप वाले भाई संगत सिंघ जी को अपने अस्त्र-शस्त्र व वस्त्र उतारकर पहनाए।

रात के अंधेरे का लाभ लेते हुए गुरु साहिब तथा तीनों सिंघ बारी-बारी यहां से निकल गए और अलग अलग रास्ते पड़ गए। गुरु जी नगाड़े की चोट पर दुश्मन फौज को वंगारते हुए कि 'हिंद का पीर जा रहा है, आओ! पकड़ो, यदि किसी में हिम्मत है' कहकर निकल गए। दुश्मन-फौज में भगदड़ मच गई कि शायद बाहर से अन्य सिक्खों ने आकर हमला कर दिया है। मुगल उठे एवं अंधेरे में आपस में ही लड़-मरने लगे। रौशनी करने के लिए मशालची ने मशाल जलाई परंतु सतिगुर जी ने तीर का ऐसा निशाना लगाया उसके हाथ मशाल गिर कर बुझ गई।

सुबह होते ही वैरी दल को काफी निराशा हुई। सिंघों की एक भी लाश वहां नहीं थी। सभी तरफ मुगल ही मरे पड़े थे।

भाई संगत सिंघ जी गुरु जी की पोशाक पहने, कलगी जिगाह लगाई गढ़ी की ममटी पर थे। उनको श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी समझ कर शत्रु भारी गिनती में टूट पड़े भाई साहिब ने पैरे जोश में लड़ते हुए शहीदी प्राप्त की। वैरी-दल के सिपाही समझने लगे कि उन्होंने गुरु जी को शहीद कर दिया है। परंतु जांच करने पर जब असलियत सामने आई तो सभी शर्मसार हुए।

इस तरह गुरु जी के बहादुर सिंघों ने सिक्खी सिदक और गुरु-भरोसे की लासानी मिसाल कायम करके आने वाले नसलों का रास्ता रौशनाते हुए सवा लाख से एक लड़ाऊं 'तभी गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं' की लोकोक्ति सच कर दिखाई।

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

धार्मिक सूझ एवं सामाजिक समानता : सिक्ख दृष्टिकोण

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

गतांक से आगे . . .

२. समानता : इस सदगुण के प्रभाव के कारण समूह जीवों को समानता की भावना से देखने की प्रेरणा की गयी है। हिंदू धर्म के शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ में समानता को भाईचारे का ही दूसरा रूप माना गया है। बुद्ध धर्म के धर्म-ग्रंथ 'धमपद' में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 'समचर्य समणो ति वुच्चति' अर्थात् जो समानता का आचरण करता है, वही श्रमण कहलाता है।

गुरबाणी में *"एकु पिता एकस के हम बारिक", "अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥ एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥"* की भावना को सामने रखकर समूह जीवों के साथ समानता का व्यवहार करने पर ज़ोर दिया गया है। दूसरों को समानता की भावना से देखने से विनम्रता का विकास होता है।

३. सहअस्तित्व : सहअस्तित्व में दूसरों के अस्तित्व को प्रवान करके तथा उनकी भावनायों को ठेस पहुंचाए बिना जीवन बसर करने पर ज़ोर दिया गया है। यह भावना मनुष्य को अनेकता में एकता के अस्तित्व का एहसास करवाने का कार्य करती है। ऋग्वेद में 'एकम सदविप्रा बहुदा वदंति' पर ज़ोर दिया गया है, जिसका भावार्थ है कि परमसति केवल एक है तथा बुद्धिमान उसकी व्याख्या विभिन्न ढंगों से करते हैं। ऋग्वेद के इस श्लोक की व्याख्या परमसति के साथ जोड़ने का कार्य करती हुई विभिन्न विश्वासियों को एक दूसरे के निकट लाने का कार्य करती है। गुरबाणी मनुष्य के मन में परमात्मा की सर्वोच्च हस्ती का एहसास ही पैदा नहीं करती बल्कि समूह जनसाधारण के आपस में जुड़ने की प्रेरणा भी पैदा करती है, जिसमें से स्वकल्याण के साथ-साथ सामूहिक भलाई की भावना का एहसास पैदा होता है। श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं :

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥
(पन्ना ८५३)

श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं :

बिसरि गई सभ ताति पराई ॥
जब ते साधसंगति मोहि पाई ॥
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ *(पन्ना १२९९)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सहअस्तित्व की भावना का प्रकटावा करते हुए फरमान करते हैं :

कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोऊ जोगी भइओ कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥
(अकाल उसतत)

सहअस्तित्व शांति, प्रेम व भाईचारे की भावना को जन्म देता है। समाज को सुचारू रूप से चलाने तथा समाज के विकास में जनता

अध्यक्ष, सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, फोन : ९८७२०-७४३२२

का सामूहिक योगदान डालने में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

४. संवाद : संवाद समूह समस्याओं का सार्थक हल प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण योगदान डालता है। समाज, परिवार तथा देश की समूह समस्याओं का हल संवाद द्वारा ही संभव माना गया है। संवाद के अभाव में ईर्ष्या, द्वेष, निंदा, वैर-विरोध आदि पैदा होते हैं जो कि समस्याओं को सुलझाने की बजाए उलझाने का कार्य करते हैं। हमारा संवाद एक-मुखी हो गया है। *"किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥"* की भावना लगभग खत्म हो गई है। दूसरों की बात सुनने की कम हो रही भावना ने सूझवान लोगों को चिंतित किया है। अपनी बात पर अड़े रहने तथा दूसरों की सही बात के प्रति भी नकारात्मक रवैया धारण करने की बढ़ रही भावना का विश्लेषण करते हुए हम समझते कम और समझाते ज्यादा हैं, इसी कारण सुलझते कम और उलझते ज्यादा हैं।

संवाद किसके साथ किया जाए? यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। प्रत्येक अगुआ व विद्वान दूसरों के साथ संवाद करने पर ज़ोर देता है। गुरबाणी में दर्ज भक्त शेख़ फरीद जी की बाणी बताती है कि मनुष्य को अपने आप से संवाद करना चाहिए :

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥
(पन्ना १३७८)

अपने आप से किया गया संवाद अनेकों समस्याओं का निवारण कर देता है। संवाद की यह भावना दूसरों में कमियां ढूंढने की बजाए अपने भीतर पैदा हुई कमी के प्रति जागृत करती है, जिसको दूर करने के लिए वो प्रयत्नशील हो जाता है। खुद के साथ संवाद करने की भावना में से नम्रता, सहनशीलता, संयम आदि सद्‌गुण जन्म लेते हैं। मन की यह भावना समाज को बदलने का कार्य करती है तथा यहां से ही दूसरों के साथ संवाद करने की सुचारू भावना का जन्म होता है। संवाद करने की सही समझ *"मनि जीतै जगु जीतु"* की भावना को जन्म देती है। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उदासियों के दौरान योगियों, जपिओं, तपिओं, गृहस्थियों, तीर्थ-यात्रियों, पंडितों, मौलाणों आदि के साथ किए संवाद गुरबाणी तथा जनमसाखिओं के द्वारा हमारे समाने आए हैं। श्री गुरु नानक देव जी की प्रसिद्ध बाणी 'सिध गोसटि' संवाद करने की सदैवकालीन मिसाल के रूप में हमारे सामने है। गुरु साहिबान ने संवाद को समानता कायम करने का महत्त्वपूर्ण साधन माना है।

५. सेवा तथा परोपकार : सेवा तथा परोपकार स्वार्थ रहित कार्य करने पर ज़ोर देते हैं। स्वार्थ के अधीन किया जाने वाला कोई भी कार्य परोपकार की भावना पैदा नहीं कर सकता। जो कार्य स्वार्थ रहित सेवा के प्रति उत्साहित करता है उसमें से परोपकार की भावना का जन्म होता है। इस जगत के समूह जीव किसी न किसी कार्य में लगे हुए हैं तथा अपनी रोज़ी-रोटी के लिए सबको प्रयत्न करना पड़ता है। पक्षी व जानवर अपने पेट की खातिर तथा मौज के लिए सैकड़ों मील का सफर तय कर लेते हैं। वे अपने बच्चों को विकसित तथा सुरक्षित रखने हेतु अनेक प्रयत्न करते हैं और जब उनको लगता है कि उनके बच्चे खुद अपना जीवन बसर करने के योग्य हो गए हैं तो वे उनको आज़ाद कर देते हैं। झुंड में रहने वाले जीव झुंड में ही रह जाते हैं और शिकार करने वाले जीव झुंड से

आज़ाद हो जाते हैं। जीवों में मनुष्य सबसे श्रेष्ठ माना जाता है जो खुद के अलावा दूसरों के प्रति भी चेतना रखता है। इस कारण उसको हमेशा कार्य करने की प्रेरणा दी गई है, मनुष्य को कर्म करना चाहिए। कर्म धर्म की भावना के अनुसार करना चाहिए। ऐसे में मन में फल की इच्छा पैदा नहीं होती। इससे लोक-कल्याण का मार्ग खुलता है।

गुरबाणी के अनुसार जो मनुष्य दुनिया में रहते हुए दुनियावी जीवों के प्रति परोपकार की भावना रखता है, दरगाह में उसको सम्मानयोग्य स्थान मिलता है। गुरु साहिबान ने सेवा द्वारा परोपकार की भावना पैदा करने पर ज़ोर दिया है। सेवा के बिना किसी भी प्रकार के फल की आशा नहीं की जा सकती, इसी लिए सेवा को जीवन का आवश्यक अंग मानते हुए श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं :

जेते जीअ तेते सभि तेरे विणु सेवा फलु किसै नाही ॥ (पन्ना ३५४)

जो मनुष्य निष्काम सेवा करते हैं वे प्रभु की बख़्शिश का पात्र बनते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी *"मिथिआ तन नही परउपकारा"* के संदेश द्वारा मनुष्य का जीवन-उद्देश्य निर्धारित करते हुए फरमान करते हैं कि सेवा करने वाले परोपकारी जीव जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाते हैं :

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥ (पन्ना ७४५)

मौजूदा मानवीय समाज जिस तरह के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, भौगोलिक, क्षेत्रीय, भाषाई आदि विभिन्नताओं के दौर में से गुज़र रहा है वे मानवीय भाईचारे को खंड-खंड कर सकती हैं। विभिन्नताओं के दौर में मानवीय समाज को एकमुठ तथा एकजुट कैसे रखा जा सकता है, यही मौजूदा समय का सबसे बड़ा चिंता एवं चिंतन का विषय बना हुआ है। ऐसा नहीं कि यह असंभव है। बदलती परिस्थितियों के समक्ष समाज में विभिन्नता के अंश दिखाई देना कोई विशेष आश्चर्य की बात नहीं है बल्कि इसको स्वाभाविक रूप से देखने की ज़रूरत है। समाज को इकट्ठा रखने का जो मॉडल श्री गुरु नानक देव जी ने समाज के सामने रखा था, आज भी वही मॉडल सबसे ज्यादा कारगर सिद्ध हो सकता है। श्री गुरु नानक देव जी अनेकता में एकता के सिद्धांत के पक्षधर थे, जिसमें से सहअस्तित्व, प्रेम व भाईचारे की भावना का विकास हुआ था। समय के चक्र के साथ हम उस सिद्धांत से दूर जा चुके हैं तथा स्वार्थ के अधीन दूसरों को अपने अधीन रखने के कार्य में लगे हुए हैं, जिसमें से ईर्ष्या, द्वेष, बेईमानी, अशांति तथा अराजकता जन्म ले रहे हैं। जिन जीवन-मूल्यों को समक्ष रखकर गुरु साहिबान ने समाज की सृजना की थी, उसी का पुनरुत्थान समय की ज़रूरत है। गुरु की तरफ पीठ करने की बजाए मुंह करने से समूह समस्याओं से मुक्ति प्राप्त हो सकती है।

बाबा गुरबख़्श सिंघ जी शहीद

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

जगत गुरु श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित सिक्ख धर्म त्याग, तपस्या, सेवा, नाम-सुमिरन, लोक-भलाई, सद्भावना और अद्वितीय कुर्बानियों के कारण अपनी अलग व विलक्षण पहचान रखता है। विश्व में ऊंचा एवं विशिष्ट स्थान रखता है। अलग-अलग समय पर सिक्ख गुरुओं, महापुरुषों, सिंघ-सिंघणियों, भुजंगियों ने मानवता, धर्म, न्याय, सच, समानता और गुरु-घरों की आन, बान व शान कायम रखने हेतु कुर्बानियां दी हैं। सिक्ख धर्म के कुर्बानियों भरे इतिहास के पन्नों पर बाबा गुरबख़्श सिंघ जी शहीद का भी नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

सिक्ख इतिहास में सन् १७६० ई. का वर्ष भी बहुत-सी कुर्बानियों व शहादतों का वर्ष बन गया था। क्योंकि इस वर्ष अहमद शाह अब्दाली और उस द्वारा नियुक्त किए गए हाकिमों ने सिक्खों का नामो-निशान मिटाने हेतु अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी। जहां कहीं भी किसी सिक्ख के मौजूद होने का पता चलता, वहीं पर सेना द्वारा हल्ला बुलवा दिया जाता। स्त्रियों, बच्चों तथा बुजुर्गों को पकड़-पकड़कर घोर यातनाएं दी गईं और उन्हें शहीद किया गया। सबसे ज्यादा निंदनीय व बुरी बात यह की गई कि सिक्खों को उनकी जान से अधिक प्रिय उनके गुरुद्वारा साहिबान ढहा (गिरा) दिए गए। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की इमारत को नुकसान पहुंचाया गया और पवित्र सरोवर को पाट दिया गया। सिक्ख यह कैसे सहन कर सकते थे? इसीलिए वे दूर-दूर से छोटे-छोटे जत्थे होने के बावजूद अपनी जान हथेली पर रखकर श्री अमृतसर में पहुंचे और जहान् ख़ान व अन्य अत्याचारियों के साथ टक्कर ली। उन्हें भगाया तथा मारा, स्वयं शहादतें दीं और शहीदों में अपना नाम शामिल किया।

बाबा दीप सिंघ जी उस समय शहीद हुए शूरवीरों में से सबसे महान् शख़्सियत व बुजुर्ग जरनैल थे। अन्य अनेक सिक्ख भी अफ़गानों की धक्केशाही व बर्बरता के विरुद्ध लड़ते हुए कुर्बान हो गए। बाबा दीप सिंघ जी के जत्थे के अतिरिक्त एक जत्था श्री अनंदपुर साहिब से भी आया था, जिसके आगू बाबा गुरबख़्श सिंघ जी थे। उन्होंने भी अति शूरवीरता के साथ अत्याचारियों का मुकाबला किया और उन्हें बता दिया कि सिक्ख अभी ज़िंदा हैं। उनके होते हुए श्री दरबार साहिब का अपमान करने वाला चैन की नींद नहीं सो सकता। अफ़गानों का यह भ्रम उनके दिलों में से निकाल दिया कि सिक्ख खत्म हो गए हैं या खत्म किए जा सकते हैं। अफ़गानों को ऐसी टक्कर दी कि वे हैरान-परेशान हो गए। सिक्खों का लोहा मानने को मज़बूर हो उठे।

स. गुरबखश सिंघ जी का जन्म खेमकरण के नज़दीक एक गांव 'सील' में हुआ था। किशोरावस्था में ही उनका सिक्ख धर्म में विश्वास पक्का हो गया था। जवानी में पहुंचकर भाई मनी सिंघ जी के हाथों पांच प्यारों के माध्यम से अमृत पान किया और अपने जीवन को पूर्ण गुरसिक्खी में ढाल लिया। यह क्षेत्र माझा के केंद्र में था और इस क्षेत्र में हाकिमों की सेना नित्य प्रति सिक्खों की तालाश में लगी रहती थी। विलक्षण हस्ती व शख़्सियत कभी

*बी-एक्स १२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०

छिप नहीं सकती। स. गुरबख़श सिंघ जी की विद्वता, गुणों एवं मीठे स्वभाव की आसपास व दूर-दूर तक चर्चा थी। अतः यह गुमनाम जीवन कतई व्यतीत नहीं कर सकते थे। यूं भी सरकार को खुश करने के चाहवान, चुगलखोर, मुखबिरों और इनाम के भूखे व्यक्तियों की कमी नहीं थी। इसलिए प्रतिकूल परिस्थितियों के चलते स. गुरबख़श सिंघ जी ने घर-द्वार छोड़ दिया और चक्रवर्ती जीवन अपना लिया। कुछ समय के लिए जंगलों में कई जत्थों के साथ रहे। हर जगह उन्होंने अपने गुणों की बदौलत मान-सम्मान प्राप्त किया। सिक्ख मिसलों में उनका विशेष सम्मान होने लगा।

उस समय श्री अनंदपुर साहिब सिक्खों का केंद्रीय स्थान था। वहां पर किसी उच्चकोटि के विद्वान को रखना आवश्यक था। उस समय के सिक्ख आगुओं ने निर्णय लिया कि स. गुरबख़श सिंघ जी को श्री अनंदपुर साहिब में भेज दिया जाए। जब उन्हें कहा गया तो वह तुरंत तैयार हो गए। वह तो पहले ही अपना जीवन सिक्ख पंथ व सिक्खी के प्रचार हेतु अर्पित कर चुके थे। वह श्री अनंदपुर साहिब में काफी समय तक रहे और यहां के ऐतिहासिक स्थानों की देखभाल, सेवा-संभाल, आने वाले सिंघों की सेवा की जिम्मेवारी निभाते रहे। इसी प्रकार श्री दमदमा साहिब में बाबा दीप सिंघ जी ये सब जिम्मेवारियां निभा रहे थे।

जब अब्दाली द्वारा नियुक्त शासक जहान ख़ान ने श्री अमृतसर में पड़ाव डालकर श्री दरबार साहिब को ढहा दिया और पावन सरोवर को पाटना शुरू कर दिया, तब स. गुरबख़श सिंघ जी को किसी ने श्री अनंदपुर साहिब में इसके बारे में सूचना दी। स. गुरबख़श सिंघ जी ने उसी समय ऐसे अत्याचारियों को सबक सिखाने की ठान ली और सिंघों को साथ लेकर श्री अमृतसर की ओर चल पड़े। रास्ते में और भी कई सिंघ उनके जत्थे में शामिल होते गए। सभी के मन में अब्दाली, जहान ख़ान तथा अन्य सभी ज़ालिमों के प्रति गुस्सा, रोष भरा पड़ा था। सभी सिंघों को साथ लेकर स. गुरबख़श सिंघ जी दोआबा क्षेत्र में से होते हुए ब्यास नदी को पार कर माझा क्षेत्र के केंद्र में स्थित श्री अमृतसर में पहुंच गए। शहर के बाहर जहान ख़ान की सेनाएं टक्कर लेने के लिए आ गईं। इन अफ़गान सेनाओं के पास तोपें, बंदूकें, असंख्य घोड़े व हाथी थे। दूसरी ओर सिंघों के पास उस समय के नवीन एवं खतरनाक हथियार नहीं थे। लेकिन उनमें जोशो-जज़्बात की कोई कमी नहीं थी। साहस एवं वीरता की कोई कमी नहीं थी। वे शूरवीर योद्धा केवल भावना अधीन अपने गुरधामों गुरु-घरों की पवित्रता की रक्षा हेतु आए थे। शहर के बाहर रामसर के किनारे घमासान युद्ध हुआ। सिंघों ने "बोले सो निहाल। सति श्री अकाल॥" के जैकारे लगाते हुए अफ़गानों पर ऐसे वार किए कि उन्हें पता चल गया कि उनका जांबाज़ व निडर सिंघों से सामना हो रहा है। बाबा गुरबख़श सिंघ जी ने अति उत्साह, जोश और बहादुरी से सिंघों का नेतृत्व किया। स्वयं अपनी कृपाण से कई दुश्मनों को मौत के घाट उतारने के बाद शहादत का जाम पी गए।

सिक्ख इतिहास में बाबा गुरबख़श सिंघ जी का नाम लासानी कुर्बानी के लिए सदैव आदरपूर्वक याद किया जाता रहेगा। सिक्खों को आज भी उनके जैसे महान् आगुओं की ज़रूरत है। हम हमेशा उनके ऋणी रहेंगे। उनसे प्रेरणा लेते हुए हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अपने गुरुधामों की मर्यादा व पवित्रता की रक्षा हेतु जी-जान से जुटे रहना चाहिए। जो लोग इनकी पवित्रता व मर्यादा को भंग करने की कोशिश करते हैं, उन्हें मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए और सद्भावना, भाईचारा, सेवा, प्रेम, शांति का संदेश पूरे विश्व में दूर-दूरस्थ तक पहुंचाना चाहिए। ۞

गुरबाणी चिंतनधारा : १०७

आसा की वार : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

सलोकु मः १ ॥
सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥
बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥
जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥
नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥
भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥
नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥१॥
(पन्ना ४६८)

प्रस्तुत सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह जी ने कलयुगी गहरे प्रभाव को उजागर किया है कि किस प्रकार कलयुगी कालिमा के कारण लोगों का व्यवहार भूतों-प्रेतों जैसा हो गया है। धर्म के बीज मानों खंडित हो गए हैं और उनके उगने व फलीभूत होने की संभावना समाप्त हो गई है।

गुरु पातशाह जी पावन फरमान करते हैं कि हमारे हृदय से सच उड़ गया तथा झूठ ही झूठ भर गया अर्थात् कलयुगी जीवों ने सच्चाई का दामन छोड़ दिया, इस लिए झूठ हमारे जीवन में प्रधान हो गया। पापों की कलुषता ने हमारे जीवन से भूतों-प्रेतों जैसा बना दिया है। सच्चे लोग अर्थात् धर्मी पुरुष सत्य नाम के बीज बो कर इस संसार से शोभा पाकर गए अर्थात् मान-सम्मान वाला जीवन जी कर मान-सम्मान सहित इस संसार में निरंकार के पास गए। लेकिन अब हमारे हृदय रूपी बीज के टुकड़े हो चुके हैं, इस लिए इससे अंकुर नहीं फूट सकते अर्थात् जैसे बीज दो फाड़ हो जाने के बाद अंकुरित नहीं होता ठीक वैसे ही एक ईश्वर के विश्वास के बिना दुविधा में पड़े मन में धर्म फलीभूत नहीं हो सकता। अब धर्म की बात ही समाप्त हो गई है अव्वल तो कोई साबुत दाना है नहीं अगर कहीं कोई है तो अब उसके उगने का मौसम (ऋतु) ही नहीं रही। क्योंकि प्रत्येक फसल की बुआई का एक विशेष मौसम होता है।

आगे गुरु साहिब समझाते हैं कि कपड़े पर पक्का रंग चढ़ाने हेतु कैसी साधना की ज़रूरत है। क्योंकि कोरे कपड़े पर पक्का रंग हरगिज़ नहीं चढ़ता। कोरे अर्थात् नए कपड़े को रंगने योग्य बनाने के लिए पहले उसे भट्ठी पर चढ़ाया जाता है अर्थात् उसे (कपड़े को) खौलते (उबलते) पानी में फिटकरी आदि डालकर पक्का रंग चढ़ाने योग्य बनाया जाता है। (ठीक इसी प्रकार) मन को प्रभु-भक्ति के रंग में रंगने से पहले प्रभु के भय रूपी भट्ठी में डालकर विनम्रता रूपी रासायन में से निकाला जाए और श्रम (मेहनत) रूपी लाग लगाई जाए (तभी प्रभु-प्रेम रंग में इस मन को पक्के रूप से रंगा जा सकता है)। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हुए यह संदेश देते हैं कि अगर इस तरह यह मन ईश्वर भक्ति के प्रेम रंग में रंगा गया तो फिर उस मन पर कदाचित झूठ-फरेब का कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।

उपरोक्त सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह जी ने कलयुगी जीवों को दो बहुत ही प्राकृतिक उदाहरण प्रस्तुत कर जिसमें वैज्ञानिकता का भी

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

तथ्य उजागर होता है, हमें सहज एवं सरल ढंग से समझाने का यत्न किया गया है ताकि हम ज़रा-सा भी इस तथ्य को समझने का प्रयास करें तो हमें हकीकत समझ आ जाए। पहला उदाहरण किसी भी बीज को अंकुरित होने की प्रक्रिया से लेकर उसके फलीभूत होने तक का सफर तभी मुमकिन है अगर बीज साबुत हो अन्यथा चाहे वह कितनी भी उत्तम किस्म का क्यों न हो अगर वह दो फाड़ होगा तो अंकुरित नहीं हो सकेगा। पल्वित, पुष्पित होकर छायादार-फलदार वृक्ष के रूप में उसकी परिणति की तो कहीं संभावना ही नहीं होगी। ठीक उसी प्रकार अगर हमारा मन साबुत नहीं अर्थात् विकारों के कारण अथवा शंकाओं के कारण अगर दो फाड़ है अर्थात् कई खंडों में विभाजित है तो ईश्वर की प्राप्ति कैसे मुमकिन है? वर्तमान कलयुगी गहरे प्रभाव में विकारी मन कई खंडों में विभाजित हो चुका है, जिस संदर्भ में गुरबाणी में भक्त कबीर जी का अति सुंदर उदाहरण है :

किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥
जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥१॥
रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥
चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ (पन्ना ३२४)

इसी प्रकार धर्म में से सत्य का निकल जाना, गुरबाणी आशयानुसार धर्म बीज का दो फाड़ हो जाना है। यथा गुरबाणी प्रमाण है :

खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥
स्रिसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥
(पन्ना ६६३)

अर्थात् जैसे क्षत्रियों ने अपना धर्म त्यागकर मलेच्छों की बोली ग्रहण कर ली अर्थात् देश भक्ति की भावना छोड़कर अपने कर्त्तव्य से बेमुख होना।

अत: जब तक कर्म धर्म से रहित होकर केवल दिखावे के लिए किए जाएं तो मात्र पाखंड हैं और पाखंडों से परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता। अत: गुरबाणी आशयानुसार इस धर्म बीज को बोने का सही समय यही है अर्थात् मनुष्य जीवन ही है और वह केवल प्रभु-परमात्मा के आसरे से होना चाहिए यथा :

जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥
(पन्ना ४६८)

जैसे दो नावों पर पांव रखने वाला व्यक्ति अवश्य ही डूबता है वैसे ही दुविधा वाला मन हमेशा दुखी रहता है।

अंतिम पंक्तियों में गुरु साहिब ने यह समझाया है कि प्रेम भक्ति के बिना इस हृदय रूपी कपड़े पर पक्का रंग नहीं चढ़ सकता इसका वैज्ञानिक तथ्य स्पष्ट किया है। जैसे कोरे (नए) वस्त्र पर रंग नहीं चढ़ता ठीक उसी प्रकार गुरु द्वारा दर्शाए गए मार्ग के बिना इस हृदय रूपी कपड़े पर ईश्वरीय भक्ति का सच्चा एवं पक्का रंग नहीं चढ़ता और यह सच्चा रंग तभी चढ़ता है जब हृदय में प्रभु का भय हो। इस संदर्भ में अन्यत्र भी बाणी में इस तथ्य को उजागर किया गया है जैसा कि तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का पावन फरमान है :

भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥
(पन्ना ७८८)

गुरु साहिब यह भी समझाते हैं कि प्रभु के भय के बिना एक तो भक्ति नहीं हो सकती दूसरा भय (संयम) के साथ भक्ति भाव भी अच्छा बना रहता है, यथा गुरबाणी प्रमाण है :

भै बिनु भगति न होई कब ही भै भाइ भगति सवारी ॥ (पन्ना ९११)

उस परमेश्वर के भय में हुई भक्ति के फलस्वरूप जो गूढ़ा रंग चढ़ता है वह किसी भी कीमत पर न तो फीका पड़ता है और न ही

उतरता है। श्री गुरु नानक देव जी का पावन फरमान है :

तेरा एको नामु मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला ॥ (पन्ना ७२९)

अत: जिस पर पारब्रह्म परमेश्वर की रहमत होती है उनके अंतकरण ही मजीठ जैसे पक्के रंग में रंगे जाते हैं और फिर उन पर झूठ-फरेब का कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।

म : १ ॥

लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥
अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥
गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥
ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥
मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥
धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु ॥
जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥
सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ॥
पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥२॥

इस सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह जी ने सांसारिक लोगों की अधम स्थिति एवं अवस्था को बयान किया है, झूठ एवं लालच के कारण लोग कुमार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं क्योंकि उन्हें परामर्श (सलाह) देने वाले ही ज्ञानहीन हैं। विद्वान कुतर्क करके अपना उल्लू सीधा कर रहें है, धार्मिक लोग केवल पाखंड (कर्मकांडों) को ही धर्म समझ बैठे हैं लेकिन ईश्वर की दरगाह में तो वही मान-सम्मान के अधिकारी है जिन्हें मालिक प्रभु स्वयं मान बख़्शता है।

गुरु पातशाह जी पावन फरमान करते हैं कि (पतित हुए सांसारिक प्राणियों हेतु) लोभ मानों राजा है, पाप कर्म वज़ीर (मंत्री) है और झूठ चौधरी है। काम रूपी परामर्श कर्त्ता (सलाहकार को दरबार में बुलाकर सलाह मश्विरा किया जाता है। (इनकी) प्रजा ज्ञान विहीन अर्थात् अज्ञानी होने के कारण प्रजा अंधी है और वह अज्ञानता वश आज्ञा का पालन कर रही है अर्थात् बेगार कर रही है, गलत के खिलाफ़ आवाज़ ही नहीं उठाती। धार्मिक नेता जो स्वयं को ज्ञानी कहलाते हैं धर्म उपदेश कमाने की अपेक्षा स्वांगी होकर नाचते, बाजे बजाते हुए अनेक वेश धारण करते हैं। ये ज्ञानी ऊंची-ऊंची आवाज़ में युद्धों के प्रसंग सुनाते हैं तथा शूरवीरों की बहादुरी की विचार व्याख्या करते हैं।

स्वयं को विद्वान मानने वाले वास्तव में मूर्ख ही हैं जो केवल चालाकी (मक्कारी) से कुतर्क करते हैं और जिनका प्रयोजन केवल माया एकत्र करना है। खुद को धर्मी कहलाने वाले लोग अपनी ओर से तो धर्म का कार्य करते हैं तथा मुक्ति की अभिलाषा रखते हैं। लेकिन निष्काम भाव से श्रम (मेहनत) न करने के कारण ये मुक्ति के अधिकारी नहीं बन पाते।

कई ऐसे हैं जो स्वयं को यति (जती) अर्थात् ऐसे व्यक्ति जिन्होंने अपनी इंद्रियों को नियंत्रित कर रखा है अपने आप को विशेष साधना वाले मानते हैं। लेकिन ऐसे व्यक्ति स्वयं को यति कहलवाते तो हैं किंतु यति होने की युक्ति नहीं जानते और व्यर्थ ही घर-बाहर त्याग देते हैं। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को संपूर्ण मानता है अर्थात् सर्वगुण सम्पन्न समझता है, कोई व्यक्ति यह नहीं मानता कि मुझ में कोई कमी (अवगुण) है अर्थात् कोई भी अपने दोषों को नहीं देखता। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह ने बहुत सुंदर समझाया है कि असल में व्यक्ति तभी तौल में पूरा उतरता है अर्थात् परख की

कसौटी पर खरा उतरता है जब परमेश्वर के दर से मिली हुई शोभा (मान-सम्मान) का परवाना तराजू के दूसरे पलड़े में डाला जाए। वास्तव में वही व्यक्ति दोष रहित है जिसे मालिक की दरगाह में इज्जत (प्रतिष्ठा) मिले।

उपरोक्त सलोक में गुरु साहिब ने इन्सानी फितरत को सांकेतिक किया है कि किस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने अंदर गुण ही गुण दिखाई देते हैं, इसी भ्रम में वह अपने दोषों अवगुणों की ओर कभी देखता ही नहीं और हकीकत तो यह है अगर हमें अपने दोष दिखाई ही न दें तो वह भयावह रूप धारण कर लेंगे जैसे अगर किसी रोगी की बिमारी समझ में न आए तो उसका इलाज मुश्किल हो जाता है और अगर लंबे समय तक यह समझ में न आए तो असाध्य रोग मान लिया जाता है, जिसका इलाज नामुमकिन हो जाता है। इस लिए हमें समय रहते सुचेत हो जाना चाहिए तथा अपने अवगुणों पर दृष्टि पात करनी चाहिए और समय रहते उसका इलाज गुरबाणी आशयानुसार करवा लेना चाहिए। जैसा कि पावन बाणी का संदेश है :

मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥
हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥ *(पन्ना ६१८)*

यहां यह भी स्पष्ट है कि सच्चा गुरु ही प्रभु-नाम की औषधि मुख में डालकर रोगी के समस्त रोग खंडित करता है साथ ही आवागमन से भी मुक्त करवा देता है। आवश्यकता है तो बस हमें अपने अंत:करण में झांककर अपने दोष देखने एवं उन्हें दूर करने हेतु हृदय से प्रयत्नशील होने की अन्यथा हमारा सारा कीमती जीवन दूसरों के गुनाह (दोष) देखने में ही व्यतीत हो जाता है और यह भी इन्सानी फितरत है मनुष्य जो दूसरों के पास देखता है उसी का संग्रह करता है। काश! हमें दूसरों के गुण और स्वयं के अवगुण दिखाई देने लग जाएं जैसा कि भक्त फरीद जी की पावन बाणी इस संदर्भ में कितनी सार्थक है :

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥
(पन्ना १३७८)

ऐसा जीवन बनाकर ही उस मालिक की दरगाह में प्रवान हुआ जा सकता है।

म : १ ॥
वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ ॥
सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥
अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥
जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥३॥

इस सलोक में पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी ने अकाल पुरख को ही सर्वकला समर्थ माना है और यह भी स्पष्ट कर दिया है कि उस परमेश्वर की दरगाह में इस संसार की तरह किसी की जाति-पाति का कोई रोब नहीं चलता। वहां तो जो मालिक की दरगाह में प्रवान हो जाए, वही धन्य है।

गुरु पातशाह जी पावन फरमान करते हैं कि जो बात ईश्वर की ओर से नियत हो चुकी है वह अवश्यमेव होकर ही रहेगी क्योंकि परिपूर्ण परमेश्वर स्वयं ही समस्त जीवों की देखभाल कर रहा है। समस्त जीव अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु पूर्ण ज़ोर लगाते हैं परंतु होता तो वही है जो ईश्वर चाहता है। ईश्वर की दरगाह में न तो किसी की ऊंची-नीची जाति का भेदभाव है न ही किसी के बल (ताकत) से काम चलाया जा सकता है। क्योंकि वहां जिन से वास्ता पड़ता है वो किसी की जाति, बल को जानते ही नहीं, इस लिए कोई धक्का (ज़ोर) किसी का भी वहां नहीं चल सकता। अत: प्रभु की दरगाह पर

कोई विरले मनुष्य ही भले (अच्छे) गिने जा सकते हैं जिन्होंने (इस संसार में) नेक कर्म किए होते हैं अर्थात् इस दुनिया में नेक एवं धर्म के मार्ग पर चलते हुए जिन्होंने प्रतिष्ठा (यश) प्राप्त किया वहीं प्रभु की दरगाह में मान-सम्मान के अधिकारी बनते हैं।

वस्तुत: सब कुछ उस परमेश्वर के हुक्म में ही होता है और गुरबाणी आशयानुसार जो जीव गुरु-कृपा से उस परमेश्वर के अटल हुक्म को समझ लेते हैं वो भूलकर भी अहंकार की बात ही नहीं करते, जैसा कि जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी का चिंतन है :

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ . . .
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(पन्ना १)

वैसे तो प्रत्येक व्यक्ति श्रद्धा अथवा ईर्ष्या वश आगे निकलने की होड़ में लगा रहता है लेकिन होता वही है जो मंजूरे खुदा होता है। क्योंकि उस प्रभु के हुक्म के बिना कुछ भी संभव नहीं लेकिन अहंकार वश जीव ऐसा सोचते हैं तथा अच्छे का कारण स्वयं को तथा बुरे का किसी और को मानने लगते हैं। लेकिन दोनों ही स्थितियां मनुष्य के लिए घातक सिद्ध होती हैं; जब जीव स्वयं को अच्छे का कारण मानता है तो अहंकारी हो जाता है तथा जब किसी को बुरे का कारण मानता है तो उससे ईर्ष्या करने लगता है। इसके विपरीत जो मनुष्य ईश्वर के हुक्म को समझ लेते हैं तो अहंकार स्वत: ही तिरोहित हो जाता है तब कोई अहंकार कैसे कर सकता है? इस लिए गुरबाणी में कलयुगी जीवों के लिए पावन संदेश है :

कारन करन तूं हां ॥
अवरु ना सुझै मूं हां ॥
करहि सु होईऐ हां ॥
सहजि सुखि सोईऐ हां ॥ (पन्ना ४१०)

बेशक सब कुछ का कर्त्ता अकाल पुरख है लेकिन उस मालिक ने मनुष्य को कर्म-भूमि बख़्शी है जहां पर नेक कर्म करके जीव अपना लोक-परलोक सफल बना सकता है तथा पिछले किए बुरे कर्मों से भी मुक्ति पा सकता है।

पउड़ी ॥
धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥
एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥
इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥
गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥
सहजे ही सचि समाइआ ॥११॥

इस पउड़ी में श्री गुरु नानक पातशाह जी यह स्पष्ट करते हैं कि ईश्वर की बंदगी (सिमरन) भी तभी मुमकिन है जब उस मालिक की रहमत होती है। विविध रंगों-ढंगों से रची इस सृष्टि में वाहिगुरु आप ही जिस जीव को अपने चरणों से जोड़कर रखता है वे ही जुड़े हुए हैं अन्यथा जिन्हें अपने चरणों से दूर रखता है वे अपने प्रयोजनों अथवा परिश्रम से नहीं जुड़ सकते।

गुरु पातशाह जी पावन फरमान करते हैं कि हे वाहिगुरु जी! जिन जीवों पर आप जी ने अपनी दरगाह से ही बख़्शिश (दया-दृष्टि) की है, उन्होंने ही प्रभु का सिमरन किया है अर्थात् उनकी स्मृति में तूं बसा है परवरदिगार। इन सांसारिक जीवों के हाथ कुछ भी नहीं है अर्थात् ये अपने बल, बुद्धि अथवा पराक्रम से कुछ भी करने में समर्थ नहीं है, इस लिए इनके वश में

कुछ भी नहीं। तूने ही हे प्रभु! भांति-भांति के जीव पैदा किए, अत: इस रंग-बिरंगी जगत रचना में कई जीवों पर रहमत करके अपने साथ मिला लेता है अर्थात् अपने दर-घर से अपने चरणों की प्रीत बख़्श देता है और अनेकों को अपने चरणों से दूर रखता है अर्थात् वे तुझ से बिछुड़े हुए दुख ही भोगते हैं।

जिस हृदय घर में हे मालिक! तूने अपने ज्ञान की सूझ बख़्श दी वह गुरु की कृपा से तुझे पहचान लेता है अर्थात् सतिगुरु के ज्ञान से हे प्रभु! तेरी सर्वव्यापकता सर्वकला समर्थता का बोध हो जाता है और ऐसा प्राणी (मनुष्य) सहजता से स्वाभाविक रूप से ही सत्य स्वरूप अकाल पुरख में एक रूप हो जाता है अर्थात् उस प्रभु-परमेश्वर का मिलाप हासिल कर लेता है।

उपरोक्त पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी ने गूढ़ रहस्य को उजागर किया है तथा कलयुगी जीवों का भ्रम दूर किया है कि उस पारब्रह्म परमेश्वर की रहमत (दया-दृष्टि) के बिना भक्ति भी नहीं कर सकता। जैसा कि हम अपनी प्राप्तियों का गुमान (अभिमान) कर लेते हैं परंतु गुरबाणी आशयानुसार यह सब तो जिस परमेश्वर की बख़्शिश है अगर उस परिपूर्ण सर्वकला समर्थ प्रभु को ही हृदय घर से भुला दिया तो इन प्राप्तियों को भी दुख में बदलते देर नहीं लगती। जैसा कि पावन बाणी का संदेश है वह परिपूर्ण परमेश्वर राव (राजा) को रंक (भिखारी) तथा भिखारी को राजा बनाने में एक पल की भी देरी नहीं करता। वास्तव में उसकी नदर (कृपा-दृष्टि) नहीं तो राजा को भिखारी कर दे और यही नहीं भीख मांगने पर भी उस राजा को भीख न मिले ऐसी स्थिति करते भी उसे देर नहीं लगती यथा गुरबाणी का प्रमाण है :

नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥
दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥ (पन्ना ४७२)

अत: इन्सान को किसी प्राप्ति का गुमान न करके सदैव इन प्राप्तियों के लिए उस वाहिगुरु जी का शुक्राना करना चाहिए और हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सदैव विनम्रता में रहना चाहिए।

विनम्रता के संदर्भ में पंचम पातशाह जी की पावन बाणी को सदैव स्मृति में रखना चाहिए। गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने जब महान पुनीत ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपादना का महान एवं विलक्षण कार्य संपन्न किया तो पातशाह जी ने अपने हृदय की अवस्था को जहां टिका कर रखा वह समूची मानवता के लिए एक विलक्षण मिसाल है। गुरु पातशाह जी उस अकाल पुरख का शुक्राना करते हुए विनती करते हैं कि हे वाहिगुरु जी। हे परिपूर्ण परमेश्वर! मुझ में तो कोई गुण नहीं था यह समर्थता आप जी ने ही बख़्शी है तेरी रहमत से ही सच्चे सतिगुरु का मिलाप हुआ है अत: तेरे चरणों में मेरी यही अनुनय विनय (बिनती) है कि मुझे सदैव तेरे नाम का प्यार प्राप्त (नसीब) होता रहे, जिसके फलस्वरूप तन-मन में सदैव आनंद की अनुभूति रहे। गुरबाणी का पावन फरमान है :

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥
मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥
तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥
नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥ (पन्ना १४२९)

काश! हमारे हृदयों में किनका मात्र विनम्रता आ जाए और हमारा लोक-परलोक भी सफल हो जाए। ❂

ख़बरनामा

शिरोमणि कमेटी के जनरल इजलास में प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर तीसरी बार अध्यक्ष चुने गए

श्री अमृतसर : ५ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के ओहदेदारों और कार्यकारिणी का चुनाव तेजा सिंघ समुंदरी हाल में हुआ। जिस में प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर सर्वसमित्ति से तीसरी बार शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के ४१वें अध्यक्ष चुने गए। उनके अध्यक्ष बनने से समूचे सिक्ख पंथक क्षेत्रों में खुशी की लहर पाई जा रही है। इस इजलास में श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ, तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी इकबाल सिंघ, तख़्त श्री दमदमा साहिब तलवंडी साबो बठिंडा से सिंघ साहिब ज्ञानी गुरमुख सिंघ एवं श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ ने शमूलियत की। जनरल इजलास से पहले अरदास भाई राजदीप सिंघ ने की एवं हुकमनामा सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ ने लिया। चुनाव प्रक्रिया डिप्टी कमिशनर स. बलविंदर सिंघ धारीवाल द्वारा आरंभ करते हुए हाऊस को अध्यक्षता के लिए नाम पेश करने के लिए कहा गया। जिसके लिए जत्थेदार तोता सिंघ ने प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर का नाम अध्यक्ष के ओहदे के लिए पेश किया। उनके नाम के ताईद बीबी जगीर कौर और ताईद-मजीद स. नवतेज सिंघ कौणी ने की। इसके उपरांत चुने गए अध्यक्ष प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर को हाऊस की अगली कार्यवाही चलाने हेतु डिप्टी कमिशनर द्वारा कहा गया।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष के रूप में स. बलदेव सिंघ कियामपुर को चुना गया। जिनका नाम स. सुरिंदर सिंघ भूलेराठा, होशियारपुर सदस्य, शिरोमणि कमेटी ने पेश किया। इनके नाम की ताईद स. रघुजीत सिंघ विरक और ताईद-मजीद स. जरनैल सिंघ डोगरां वाला सदस्य शिरोमणि कमेटी ने की।

कनिष्ठ उपाध्यक्ष के ओहदे के लिए बाबा बूटा सिंघ को चुना गया। इनका नाम स. सुरजीत सिंघ गढ़ी ने पेश किया और स. अलविंदरपाल सिंघ पक्खोके सदस्य, शिरोमणि कमेटी ने ताईद और ताईद-मजीद की।

जनरल सचिव के ओहदे के लिए स. अमरजीत सिंघ चावला सदस्य, शिरोमणि कमेटी को चुना गया। इनका नाम स. मेजर सिंघ ढिल्लों रामपुरा फूल सदस्य, शिरोमणि कमेटी ने पेश किया एवं ताईद स. परमजीत सिंघ रायपुर ने की और ताईद-मजीद स. नवतेज सिंघ कौणी और ताईद-मजीद बीबी जगीर कौर सदस्य, शिरोमणि कमेटी ने की।

उपरांत प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर द्वारा ११ सदस्यीय कार्यकारिणी कमेटी के सदस्यों के नाम पेश किए गए। जिनमें स. जैपाल सिंघ मंडीयां होशियारपुर, स. निरमल सिंघ हरिआओ ,स. कुलवंत सिंघ मंनण, स. सतपाल सिंघ तलवंडी भाई, स. बलविंदर सिंघ वेईंपूई, स. गुरमेल सिंघ संगतपुरा, बीबी जोगिंदर कौर बठिंडा, भाई राम सिंघ श्री अमृतसर, स. गुरचरन सिंघ गरेवाल, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्ड तथा स. सुरजीत सिंघ कालाबूला का नाम पेश किया गया। जिसको हाऊस के समूह सदस्यों द्वारा जैकारे की गूंज से प्रवानगी दी गई।

जनरल इजलास में सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड और धर्म प्रचार कमेटी के सदस्यों का चुनाव भी सर्वसमित्ति के साथ कर लिया गया। जनरल इजलास की आरंभता से पूर्व पंथ से बिछुड़ चुकी शख़्सियतों जिनके बीच शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य स. रेशम सिंघ, स. निरमल सिंघ घराचों, बीबी

हरबंस कौर सुखाणा, स. दिलबाग सिंघ पठानकोट स. बलबीर सिंघ कुराला और बाबा जसवीर सिंघ कालामल्हा पूर्व सदस्य, शिरोमणि कमेटी को पांच बार मूल मंत्र का जाप करके शद्धांजलि भेंट की गई।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की कार्यकारिणी ने पंजाब के पानी के लिए राष्ट्रपति से इन्साफ की मांग की : प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर

श्री अमृतसर : १२ नवंबर : प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की अध्यक्षता तले कार्यकारिणी की पहली एकत्रता शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रबंधकीय ब्लाक में हुई। जिसकी शुरूआत मूल मंत्र के जाप के उपरांत सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ मुख्य ग्रंथी, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब द्वारा अरदास सहित हुई।

पत्रकारों से बातचीत करते हुए प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने कहा आज की एकत्रता में समस्त कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा सर्वसमित्ति से १४ महत्त्वपूर्ण मतों को प्रवानगी दी गई है। अध्यक्ष साहिब ने गत समय में अलग-अलग स्थानों पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूपों, गुटका साहिबान, पोथियों आदि का अपमान हृदय विदारक मंदभागी घटनाओं पर गहरी चिंता करते हुए कहा कि सदस्य साहिबान शिरोमणि कमेटी अपने-अपने क्षेत्रों की गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटियों का सहयोग लेकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सत्कार, गुरुद्वारा साहिबान के सेवा-संभाल को यकीनी बनाएंगे। उन्होंने कहा कि वातावरण की शुद्धता के लिए बाबा सेवा सिंघ कार सेवा खडूर साहिब वाले, बाबा बलबीर सिंघ सीचेवाल तथा अन्य वातावरण प्रेमियों को साथ लेकर वातावरण के सुधार हेतु लहर चलाई जाएगी।

उन्होंने कहा कि देश-विदेश की संगत की सुविधा को मुख्य रखते हुए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रबंध तले आते सभी गुरुद्वारा साहिबान की सारायों को आनलाईन किया जाएगा। जिससे देश-विदेश में कहीं पर भी बैठा श्रद्धालु रिहायश के लिए कमरा बुक करवा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी अधीन चलते सभी स्कूलों/कॉलिजों के प्रिंसीपल साहिबान तथा टीचिंग एवं नॉन टीचिंग स्टॉफ की वरिष्ठ सूची बनाने के लिए सब-कमेटी नियत की जाएगी और हर तरह की भर्ती एवं प्रमोशन योग्यता टैसट लेने के उपरांत ही की जाएगी।

इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि स्कूलों/कॉलिजों तथा यूनीवर्सिटियों में दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ३५० वर्षीय प्रकाश गुरुपर्व को समर्पित धार्मिक समागम/सेमीनार करवाए जाएंगे और विद्यार्थियों को दशम पिता के जीवन-उद्देश्य, कुर्बानी तथा फलसफे से अवगत करवाया जाएगा। इसके अतिरिक्त प्रत्येक ज़िला हैड क्वार्टर तथा चुनिंदा जगह पर एक-एक गुरमति समागम किया जाएगा। जिसमें प्रसिद्ध रागी, ढाडी, कवीशर, कथावाचक तथा सिक्ख विद्वान संगत को साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन, उपदेश तथा कुर्बानियों के बारे में भरपूत जानकारी देंगे।

प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने कार्यकारिणी की एकत्रता में यह भी बताया कि पंजाब के साथ शुरू में धक्केशाही की जाती रही है। पंजाब जो पांच दरियाओं की धरती थी और अब रहते ढाई दरियाओं के पानी को भी केंद्रीय कांग्रेस सरकार ने अंतराष्ट्रीय निर्धारित नियमों का उल्लंघन कर पड़ोसी राज्यों को देने का दुखदाई फैसला किया गया, जिससे प्रत्येक पंजाबी को गहरी ठेस पहुंची। यदि पानी छींना गया तो पंजाबी की कृषि बर्बाद हो जाएगी। उन्होंने माननीय राष्ट्रपति, भारत सरकार को अपील की है कि पंजाब के हक की मांग को प्रवान करते हुए पंजाब के पानी को किसी भी सूरत में न छींना जाए। कार्यकारिणी ने मांग की है कि पंजाब के पानी के लिए सीधे रायपेरियन कानून द्वारा ट्रिब्यूनल का गठन कर इसका योग्य फैसला किया जाए। ❁